

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182559

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/B25T Accession No. Q.H.137

Author वरकृष्ण

Title लपखिनी | 1940

This book should be returned on or before the date last marked below.

* तपस्विनी *



फ्लोरेन्स नाईटिंगेल
(क्रीमिया से लौटने के पश्चात)

* तपस्विनी *

रेजीनॉल्ड बरकले की दी लेडी विद ए लेम्प

(The Lady with a Lamp)

का श्रीमती प्रकाश गौडल

द्वारा हिन्दी अनुवाद

नई दिल्ली

दी विद्या मन्दिर लिमिटेड

कनॉट सरकस

प्रकाशक
दी विद्या मन्दिर लिमिटेड
नई दिल्ली
प्रथम संस्करण, जुलाई १९४०

Checked 1965

(Copyright)
सर्वाधिकार सुरक्षित

Checked 1969_____

दी विद्या मन्दिर लि० के लिब्रे कम्पनी के अपने प्रेस
'गोडल्स प्रेस' नई दिल्ली में छपी ।

*** उपहार ***

* विश्व महिला साहित्य *

विश्व महिला साहित्य की प्रथम पुस्तक आपके हाथों में है। इसके अन्तर्गत हमारा उद्देश्य महिलोपयोगी साहित्य निर्माण करने का है। यह वह साहित्य होगा जो क्रियात्मक, व्यवहारोपयोगी, और आदर्श भी हो। स्त्री-जीवन को परिपूर्ण बनाना इसका परम लक्ष्य होगा। ऐसे विरले ही होंगे जो इसे अनुभव न करते हों।

हिन्दी में अच्छे २ लेखक और लेखिकाओं की उक्त-विषयक अनुवादित और मौलिक पुस्तकें विश्व महिला साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ करेंगी। पुस्तकों का अपना एक अलग महत्व होगा। प्रयत्न यह किया जा रहा है कि लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥१) आने से अधिक न रखा जावे। इसी प्रकार की अथवा इससे अधिक सुन्दर अधिकाधिक पुस्तकें निकालना हमारा ध्येय रहेगा।

इन पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त हम शीघ्रातिशीघ्र आवश्यक सहायता मिलने पर विश्व महिला साहित्य के अन्तर्गत 'विश्व महिला' नामक एक सर्वाङ्गपूर्ण उच्च कोटि का महिलोपयोगी सचित्र मासिक पत्र भी प्रकाशित

करना चाहते हैं । जहां तक हमको पता है, स्त्री-जीवन की विभिन्न समस्याओं—आर्थिक, सामाजिक और राज-नैतिक—को ले कर कोई भी पत्र हिन्दी भाषा में नहीं निकल रहा । महिलाओं के लिये कतिपय पत्र हैं भी परन्तु उनमें अधिकांश कथा, कहानी और साहित्यिक लेख ही रहते हैं जो एक भावना (वृत्ति) की पूर्ति करते हैं जीवन की नहीं । दूसरे देशों की स्त्रियों की प्रगति, उनकी उन्नति और सफलता पर, उनके मानसिक विकास और व्यक्तित्व पर हमारे यहां के पत्रों में कोई विशेष प्रकाश नहीं डाला जाता । इस प्रकार के ज्ञान की हमें बड़ी आवश्यकता है । अब वह समय नहीं रहा जो हम संसार से आँखें मूंद कर अपने ही घर में अपनी स्वतन्त्र बांसुरी बजाते रहें। इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि हम बिना सोचे समझे ही दूसरों की नकल करें और उनकी वाह्य चमक-दमक में ही अपने आपको भुला दें । हम चाहते हैं कि हमारे यहां की स्त्रियों का जीवन-निर्माण अन्य देशों की प्रगतिशील स्त्रियों के जीवन को सम्मुख रख कर हो, जिससे कि हम अपने समाज का निर्माण पूर्ण रूप से कर सकें और अन्य देशों के समान प्रगतिशील राष्ट्रों में गिने जावें ।

विश्व महिला साहित्य में संसार की उच्च कोटि की स्त्री-लेखिकाओं की उत्तमोत्तम रचनाएँ तथा स्त्री-जीवन से

सम्बन्ध रखने वाली सब प्रकार की मौलिक व अनुवादित पुस्तकें—जिनके लेखक पुरुष भी हो सकते हैं—प्रकाशित होंगी। कहानी, उपन्यास, नाटक से लेकर शरीर-विज्ञान, विवाह, सन्तानोत्पत्ति और शिशुपालन सम्बन्धी पुस्तकें तथा अन्य सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक पुस्तकें सबको इसके अन्दर स्थान मिल सकेगा। इससे आप जान सकेंगे कि हम अपना क्षेत्र अन्य कुछ प्रकाशन संस्थाओं की तरह संकुचित बना कर नहीं चलना चाहते। क्या इस प्रकार के साहित्य-निर्माण में हम आपके सहयोग की आशा नहीं रख सकते ?

आप हमें कई प्रकार से सहायता दे सकते हैं। प्रथम, आप हमारी अधिकाधिक पुस्तकें व पत्र बिकवायें। आप स्वयम् हमारी पुस्तकें व पत्र खरीदें, उन बहिनों व भाइयों तक पहुँचायें जो इतने सस्ते दामों की पुस्तकें भी अर्थाभाव के कारण नहीं खरीद पाते, या जिन्हें इस ओर रुचि न होने से वे आरम्भ में उन्हें खरीदना नहीं चाहते—उनके अन्दर चाव पैदा करने की ज़रूरत है। दूसरे, हमारे जीवन में कई शुभ अवसर आते हैं जिन पर हम हज़ारों रुपये की वस्तुएँ उपहारस्वरूप अपने रिश्तेदारों, मित्रों व अन्य व्यक्तियों को देते हैं। कई बार दान के भी अवसर आते रहते हैं। उन अवसरों पर क्यों न आप और चीजों के उपहार व

दान के साथ पुस्तकें वगैरह भी दान व उपहार में दें । इससे आप अपनी त्याग-वृत्ति की तृप्ति, हमारी सहायता, और फिर अपने समाज और साहित्य की उन्नति में भी सहायक होंगे ।

पुस्तकें व मासिक पत्र के इस प्रकार वितरण में सहायता करने वालों के अतिरिक्त हम उदार हृदय लेखक व लेखिकाओं से प्रार्थना करेंगे कि वे इस प्रकार के समाजो-पयोगी साहित्य के निर्माण में हमारी सहायता करें । हमें अपनी अच्छी २ कृतियाँ दें, मासिक पत्र को अपना समझ कर लेख भेजें, जिससे हम हिन्दी के उदीयमान लेखक और लेखिकाओं को भी आगे आने का अवसर दें और अपना स्टैंडर्ड भी बनाये रख सकें ।

परन्तु आप जानते ही हैं कि पर्याप्त धन के अभाव में हम अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं हो सकते । ऐसे महत्वपूर्ण काम को ले कर चलना किसी अकेले दुकेले व्यक्ति का काम नहीं । इस प्रकार की संस्थाएँ सदैव ही पारस्परिक सहयोग से चलती हैं । जिसके सम्बन्ध में कम्पनी की आयोजना इस प्रकार है:—

- (१) विश्व महिला साहित्य के २०० आजीवन सदस्य (सदस्याएँ) बना कर:—

जिनको निम्न सुविधायें प्राप्त होंगी—

क—कम्पनी इन्हें विश्व महिला साहित्य के समस्त प्रकाशन अर्थात् 'विश्व महिला' पत्र व पुस्तकों की एक २ प्रति भेंट करेगी ।

ख—कम्पनी के अन्य प्रकाशन तीन चौथाई मूल्य पर इन्हें दिये जायेंगे ।

ग—कम्पनी अपने लाभ (Profit) का उचित भाग भी इन्हें देती रहेगी ।

तथा

(२) शेअर्स द्वारा पूंजी एकत्रित करके अथवा कम्पनी के भागीदार (Share-holders) बना कर ।

कम्पनी विश्व महिला साहित्य के प्रकाशनों के अतिरिक्त और भी प्रमुख विषयक प्रकाशन कर रही है और निकट भविष्य में आपका सहयोग प्राप्त करके अधिकाधिक प्रकाशन कार्य हाथ में लेगी । कम्पनी के अन्य प्रकाशन हिन्दी व अंग्रेजी में हुआ करेंगे ।

कम्पनी का अपना प्रेस भी है, जिसमें कम्पनी का सारा काम होता है । प्रेस बाजार का काम भी काफ़ी मात्रा में करता है । बड़ी २ कम्पनियाँ उसके ग्राहकों में से हैं, जिनसे छपाई के अलावा कम्पनी समय आने पर अपने पत्रों के लिये इश्तहार भी ले सकेगी जो आमदनी

का अच्छा साधन रहता है।

कम्पनी ने हाल ही में पुस्तकें बेचने का काम भी आरम्भ किया है और अपने पुस्तकालय की भी नींव रखी है, जो समय के साथ कम्पनी की आमदनी के व जनता की सेवा के अच्छे साधन बन सकेंगे।

विशेष विवरण के लिये, अन्त में, मेरी आप से प्रार्थना है कि आप कम्पनी का प्रॉस्पैक्टस (विवरण पत्रिका) मंगवा कर पढ़ें। उससे आपको कम्पनी के उद्देश्य, उसकी नवीन योजनाएँ, उसका कार्य-क्रम और संगठन जानने का अवसर मिलेगा। आप किस प्रकार कम्पनी की सहायता कर सकते हैं और किस प्रकार कम्पनी आपके हितों की रक्षा करेगी तथा आपको अपने मुनाफ़े में हिस्सेदार बनावेगी वह भी आप जान सकेंगे। कम्पनी आपसे भिन्न नहीं है, वरन आपकी अपनी ही वस्तु है केवल उसे अपनाने भर की बात है।

आशा है आप साथ में दिये हुए कार्ड पर अपना पता लिख कर आज ही पोस्ट कर देंगे। कार्ड पर आपको टिकट लगाने की भी ज़रूरत नहीं।

दी विद्या मन्दिर लि० रामप्रताप गोंडल एम० ए०,
नई दिल्ली साहित्य-रत्न
जुलाई १९४० मैनेजिंग डायरेक्टर

पात्रों की सूची

दृश्य पहिला व दूसरा

एम्बले पार्क, हैम्पशायर । ग्रीष्म । उन्नीसवीं शताब्दि
का पूर्वार्ध ।

विलियम नाईटिंगेल

लॉर्ड पामस्टन

सिडनी हर्वर्ट

श्रीमती नाईटिंगेल

एलिज़ाबेथ हर्वर्ट

हेनरी ट्रेमेन

सेलीना ब्रेसब्रिज

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य तीसरा

हारले स्ट्रीट । ६ साल बाद ।

लेडी हेरीटिज

श्रीमती काल्डेयर

लेडी क्रिस्टाबेल डीन

कुमारी पेल्ट

एलिज़ाबेथ हर्वर्ट

श्रीमती नाईटिंगेल

हेनरी ट्रेमेन

सिडनी हर्वर्ट

लॉर्ड पामस्टन

डा० स्मिथ

नर्स

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य चौथा

स्कुटारी । शीतकाल । क्रीमियन युद्ध का पहिला साल ।

सर्जन

सेलीना ग्रेसब्रिज

कॉरपोरल जोन्स

श्रीमती विलियमस्

मि० बाम्फोर्ड

डा० क्यूमिंग

मि० मैकडोनेल्ड

डा० सदरलैंड

नर्स बेट्स

हेनरी ट्रेमेन

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य पाँचवाँ व छटवाँ

ओल्ड बर्लिंग्टन स्ट्रीट । १८६१ ।

डा० सदरलैंड

दासी

एलिज़ाबेथ हर्बर्ट

सिडनी हर्बर्ट

श्रीमती नाईटिंगेल

लॉर्ड पामस्टन

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य सातवाँ

साऊथ स्ट्रीट । १८८६ का ग्रीष्म ।

नर्स

डा० सदरलैंड

एलिज़ाबेथ हर्बर्ट

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य आठवाँ

साऊथ स्ट्रीट, १६०७ ।

पत्र-प्रतिनिधि

नर्स

टैंकरटन

‘टाइम्स’ का प्रतिनिधि

परसुवाँ

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट

लॉर्ड मेयर ऑफ़ लन्दन

सिडनी हर्वर्ट

लॉर्ड पामस्टन

डा० स्मिथ

नर्स

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य चौथा

स्कुटारी । शीतकाल । क्रीमियन युद्ध का पहिला साल ।

सर्जन

सेलीना ग्रेसब्रिज

कॉरपोरल जोन्स

श्रीमती विलियमस्

मि० बाम्फोर्ड

डा० क्यूर्मिंग

मि० मैकडोनेल्ड

डा० सदरलैंड

नर्स बेट्स

हेनरी ट्रेमेन

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य पाँचवाँ व छटवाँ

ओल्ड बर्लिंग्टन स्ट्रीट । १८६१ ।

डा० सदरलैंड

दासी

एलिज़ाबेथ हर्बर्ट

सिडनी हर्बर्ट

श्रीमती नाईटिंगेल

लॉर्ड पामस्टन

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य सातवाँ

साऊथ स्ट्रीट । १८८६ का ग्रीष्म ।

नर्स

डा० सदरलैंड

एलिज़ाबेथ हर्बर्ट

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

दृश्य आठवाँ

साऊथ स्ट्रीट, १६०७ ।

पत्र-प्रतिनिधि

नर्स

टैकरटन

‘टाइम्स’ का प्रतिनिधि

परसुवाँ

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट

लॉर्ड मेयर ऑफ़ लन्डन

नाईटिंगेल—परन्तु उनकी लेखन शैली अतिशयोक्तिपूर्ण है ।

हर्बर्ट—मेरा भी यही खयाल है ।

पामस्टर्न (जोर देकर)—उनके हर एक कथन में यही बात पाई जाती है । अधिक तो केवल शब्दों का ही जाल है । परन्तु कुछ विचार उनके ऐसे भी हैं, जिनसे अद्भुत गहनता प्रकट होती है ।

श्रीमती नाईटिंगेल (सिर ऊपर उठाते हुए)—लॉर्ड पामस्टर्न ! आप यह बात-चीत किस पुस्तक के बारे में कर रहे हैं ?

पामस्टर्न—प्राचीन और अर्वाचीन (Past and Present) ।

श्रीमती नाईटिंगेल (कुछ असावधानी से)—सचमुच ।

पामस्टर्न—स्कॉटलैंड निवासी कारलायल महोदय लिखित ।

श्री० ना०—ओह ! मैंने उनका नाम भी अभी तक नहीं सुना ।

नाईटिंगेल—वाह फैनी, उनका नाम तो हर कोई जानता है । बतौर तत्त्ववेत्ता के उनका नाम सब जगह ख्याति पा रहा है ।

श्री० ना०—उनके विचार किस किस्म के हैं ?

हर्बर्ट—प्रत्येक को परिश्रम करना चाहिये ।

श्री० ना० (अपनी सामान्य बुद्धि से)—क्या ही बेहूदे विचार हैं । निर्धन अगर काम नहीं करेंगे तो रहेंगे कैसे, परन्तु धनाढ्यों को काम से क्या प्रयोजन ? आपको भला काम करने की क्या ज़रूरत ?

पामस्टर्न—अधिक धन प्राप्ति के लिये ।

श्री० ना०—क्या आप इसी लिये करते हैं ?

पामस्टर्न—नहीं, धन को मैं विशेष मूल्य नहीं देता । क्योंकि मुझे काम में आनन्द आता है इसलिये मैं उसमें जुटा रहता हूँ ।

श्री० ना०—अगर ऐसा करने में आपको आनन्द आता है, तो वह परिश्रम नहीं कहा जा सकता.....आप ऐसा कह कर अपने प्रति अन्याय कर रहे हैं । आप अपना कर्तव्य समझ कर देश सेवा कर रहे हैं ।

पामस्टर्न (विचारते हुए)—देश सेवा ! जो कुछ मैं कर रहा हूँ अपने लिये कर रहा हूँ.....मैं महत्ता चाहता हूँ; आलस्य से मुझे अरुचि है ।

श्री० ना०—अगर अपनी इच्छानुसार काम करना ही परिश्रम का मतलब है तो फिर, मेरी राय में, इस पुस्तक के रचयिता को इतना श्रेय देने की क्या ज़रूरत ।

हर्बर्ट—मिसेज़ नाईटिंगेल, परन्तु लेखक का यह आशय

नहीं है। उनका कहना है कि प्रत्येक मनुष्य को कोई न कोई उपयोगी कार्य समाज हित के लिये अवश्य करना चाहिये। उनका तो यह विश्वास है कि श्रम-जीवियों के भी जान है।

श्री० ना० (किंचित दबे स्वर में)—मि० हर्वर्ट, हमारे भी तो आत्मार्य हैं, मेरा कम से कम यही विचार है।

पामस्टर्न—श्रम-जीवियों में आत्मा है, इसे कौन मना कर सकता है। अगर आप मुझे इस कथन के लिये क्षमा करें—वे सामर्थ्यवान् होकर हमारे सिर चढ़ना शुरू कर देंगे।

हर्वर्ट—निःसन्देह ! कारलायल का तात्पर्य यही है। देश के इतने धनाढ्य होने पर भी बेकारी इतनी बढ़ चुकी है। उनका कथन है कि वे सब एक हो जावें, वास्तव में वह उनके एक हो जाने के लिये जोर देते हैं।

नाईटिंगेल (व्यङ्ग में)—और फिर धनाढ्यों को लूटें व आप मौज उड़ावें। क्या ही अच्छी तरकीब है। इस प्रकार पूंजी उड़ा देने पर वे काम कैसे करेंगे। क्या आप मुझे समझा सकेंगे कि अगर धनाढ्यों के लिये वे काम न करेंगे तो वे काम कहां से पावेंगे ?

श्री० ना०—मुझे तो यह पुस्तक बेकार और निरोपयोगी प्रतीत होती है। यह पुस्तक अपने यहां कैसे आगई विलियम ?

नाईटिंगेल—शायद यह फ्लोरेन्स की हो ।

श्री० ना०—यह तो मैं बिना बतलाये ही समझ गई थी ।
विचारो भोली लड़की अव्यवहारिक है । लॉर्ड पामस्टन !
क्या मैं यह पुस्तक देख सकती हूँ ?

पामस्टन (आदर के साथ)—बड़ी खुशी से । (वह श्रीमती
ना० को पुस्तक देते हैं) वास्तव में यह पुस्तक बड़ी खोज के
बाद लिखी गई है । प्राचीन इंगलैंड सम्बन्धित प्रश्नों को
लिखते हुए उन्होंने कमाल कर दिया है, परन्तु आधुनिक
जीवन पर लिखते हुए अर्थ हीन बातें अधिक लिख
गये हैं ।

[श्रीमती नाईटिंगेल पुस्तक पढ़ने में मग्न हो जाती हैं ।

हर्वर्ट—इससे तो आप सहमत ही हैं कि वह एक महान्
पुरुष है । वह बड़े विचारशील व्यक्ति हैं । अनाज सम्बन्धी
कानून को मिटाने के लिये उन्होंने हमारी सहायता की
थी । आप व्यापारिक स्वतन्त्रता के कट्टर पक्षपाती हैं ।

पामस्टन—प्रिय हर्वर्ट, जब तुम मन्त्री-मंडल में थे तो
उन्होंने तुम्हारा पक्ष लिया था, इसलिये उनकी हर एक
कमजोरी तुम्हारी दृष्टि में क्षम्य है । अगर वह तुम्हारा
विरोध कर जाते तो कदाचित् तुम ऐसा न कहते । मेरा यह
तात्पर्य कदापि नहीं कि उनके मस्तिष्क में कुछ विकार है ।
केवल इतना ही कि वह सम्यक्त्व नहीं रख पाते ।

• नाईटिंगेल—वह आप के उनार दल वालों के कट्टर विरोधी प्रतीत होते हैं ।

पामस्टर्न—जी, अनुदार दल वाले अगर कुछ बुद्धिमत्ता से काम लें तो उनके विचारों पर पहुँचेंगे । परन्तु हम अब भी अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं और अपने प्रतिपक्षियों को अपनी ओर घसीट रहे हैं । हम हर्वर्ट तथा उनके मित्र ग्लाडस्टन को भी अपने दल में मिला लेंगे, और मेरा विश्वास है कि बौबी पील भी हम में शामिल हो जावेगा । मैं स्वयम् भी कभी अनुदार दल का सदस्य था ।

हर्वर्ट (नम्रता पूर्वक)—क्या मन्त्री-मंडल और दल के विचारों में.....कुछ विभिन्नता है ?

पामस्टर्न (प्रसन्न वदन से)—मेरे मन्त्री-मंडल में जब तुम्हें स्थान मिल जावेगा तब मेरे ये शब्द तुम्हें याद आवेंगे और तुम्हें स्वयम् शरम प्रतीत होगी ।

हर्वर्ट—क्या आप प्रधान मन्त्री बनने का विचार रखते हैं ?

पामस्टर्न—ख्याल तो ऐसा ही है । मैं डरबी में बाजी तो जीत ही नहीं सकता । आखिर इन दोनों में से एक तो अवश्य ही प्राप्त करना चाहिये ।

हर्वर्ट—दोनों ही क्यों नहीं, इसमें शरम भी क्या है ?

पामस्टन—आने वाली पीढ़ियों के लिये भी आखिर हमें कोई ध्येय छोड़ना चाहिये ।

श्री० ना० (ऊपर नज़र उठाती है और ठीक अवसर पर अपने विचार प्रकट करती है)—इस लेखक का थोड़ा बहुत जो समझ में आता है उससे उसकी बेवकूफी ही नज़र आती है । आधे शब्दों के तां अर्थ ही मैं नहीं समझ पाती । मेरे ख्याल में और भी कोई क्या समझ पाता होगा । उसके ख्याल में सूत कातना अपनी शान में बढ़ा लगाना है, और फैक्टरी व मिल चलाना पाप है । हमें चाहिये कि ऐसी पुस्तकें प्रकाशित ही न होने दी जावें । यह तो बिल्कुल निकृष्ट है इससे बच्चों के दिमाग खराब होने का डर है । लॉर्ड पामस्टन, सरकार ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन बन्द क्यों नहीं कर देती ?

पामस्टन—पर आप जानती हैं, सरकार की नीति यह है कि श्रेणियों के अन्तर बजाय बढ़ाने के कम किये जावें । आप जानती हैं चारटिस्ट भी हैं । अतिरिक्त इसके, बात-चीत व राय देने की स्वतन्त्रता पर बन्धन नहीं लगाया जा सकता ।

श्री० ना०—ओफ चारटिस्ट ! आपने ठीक याद दिलाया । बदमाश और देश-द्रोहियों द्वारा बहकाये हुए गरीब—उनके नेताओं को जेल में ठूस देना चाहिये ।

नाईटिंगेल—आप यह नहीं कर सकतीं । जानती हो यह उन्नीसवीं शताब्दि है ।

पामस्टन (तीव्र स्वर में)—क्यों नहीं ! हर्बर्ट से पूछो ?

हर्बर्ट—यह मेरे क्षेत्र के बाहर की बात थी, मैं तो युद्ध-विभाग में था । परन्तु मैं अपने अनुदार दल की ओर से यह कह सकता हूँ कि अपनी नीति के अनुसार उन्हें दबा देना चाहिये था । विद्रोही—

[बीस वर्षीया एक सांवले रंग वाली सुन्दर युवती उनमें आकर सम्मिलित हो जाती है, वह सिडनी की नव-विवाहिता पत्नी एलिज़ाबेथ हर्बर्ट है ।

एलिज़ाबेथ—क्या आप विद्रोहियों के बारे में बात-चीत कर रहे हैं । स्पेन में हमारी आदर्श विद्रोहियों से भेंट हुई थी, क्यों न, सिडनी ! इतने वीर और त्यागी । अपने उद्देश्य के अतिरिक्त और उन्हें किसी भी वस्तु की परवाह नहीं थी ।

नाईटिंगेल—उनका उद्देश्य क्या था, मिसेज़ हर्बर्ट ?

एलिज़ाबेथ—उन्होंने हमें बतलाया था । मैं भूल सी रही हूँ, परन्तु अपने उद्देश्य में उनका पूर्ण विश्वास था । सचमुच धन्य हैं वे लोग ।

[दबी हुई आवाज़ से सब स्वीकार करते हैं ।

पामस्टन (व्यङ्ग-पूर्ण स्वर में)—यह सचमुच ही आश्चर्य

की बात है कि अगर दूसरे देशों के राजनैतिक क्रांतिकारी अपनी सरकार के प्रति विरोध की आग भड़काते हैं तो वे वीर कहलाते हैं, और अंग्रेज अपनी सरकार पर किसी प्रकार का दबाव डालना चाहते हैं तो उन्हें बदमाश और देश-द्रोही कहा जाता है ।

श्री० ना०—इसलिये कि हमारी सरकार अच्छी है ।

पामर्स्टन—इस प्रमाण-पत्र के लिये धन्यवाद है ।

एलिजाबेथ—वास्तव में उनका उद्योग सराहनीय है । इससे मेरा संकेत उनके विश्वास की ओर है । क्या ! आप लोग मेरे विचार से सहमत नहीं हैं ? (सकुचा जाती है)

हर्बर्ट—लिज, तुम अपने विचारों में बह रही हो ।

श्री० ना०—ठीक कहते हैं आप । आज कल के युवक और युवतियां क्या जानें इन बातों को । यह सब हलचल लड़ाई के कारण है, पर उन्हें लड़ाई की क्या याद ?

एलिजाबेथ—जब कि लड़ाई तीस वर्ष पूर्व की बात है तो हम से ऐसी आशा करना क्या न्याय है ?

श्री० ना० (प्रमाद-पूर्ण स्वर में)—मेरी प्यारी ! पर मुझे याद है । तुम्हें यह तो समझना चाहिये कि हम लोगों को वे दिन याद हैं ।

एलिजाबेथ (घबरा कर)—सिडनी भी तो नहीं जानते ।

श्री० ना०—उसे क्या मालूम, वह उस समय निरावस्था था।

हर्वर्ट (हंसते हुए)—मचमुच—

श्री० ना०—क्यों नहीं ? आखिर कभी तो किसी का जन्म होगा ही..... हमें वे दिन याद हैं। जो कुछ फ्रांस में हो चुका है उसका हमें पूर्ण स्मरण है, और हम यह नहीं चाहते कि वही हालत इंग्लैंड की भी हो।

एलिजाबेथ—यह सब ठीक है, पर फ्रान्स की राज्य-क्रांति तो उनकी घरेलू बात थी।

नाईटिंगेल—किन की ?

एलिजाबेथ—फ्रान्सिसियों की।

श्री० ना०—प्यारी ! तुम उसके बारे में कुछ भी नहीं जानती। वे फ्रान्स निवासी तो थे ही, पर यह सब यहूदियों का काम था।

एलिजाबेथ—क्या आप का यह तात्पर्य है कि रॉब्स-पियर यहूदी था ?

श्री० ना०—कदाचित् न भी हो ! परन्तु उसके सहायक जो थे। कहो, इतना रुपया उसके पास कहां से आया ?

पामस्टन (आंख मिचका कर)—आप के पिता को 'राज हत्यारा' स्मिथ पुकारा जाता था। वह बड़ा जबरदस्त क्रान्तिकारी था। ऐसे क्रान्तिकारी कम ही देखने में आते हैं।

श्री० ना०—वह तो सिद्धान्त का प्रश्न था । मेरे भाई साम के समान ही पापा भी किसी उद्देश्य को लेकर ही चल रहे थे । वह बड़े दयालु और प्रेमी थे । अगर कहीं उनके परिवार में रहने का मौका आप को मिलता तो आप जान पाते कि ऐसे विचारों का रखना पागलपन नहीं तो क्या है । मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि विलियम् ऐसे कट्टर विचार नहीं रखता ।

पामस्टर्न—फिर तो तुम्हें खास खयाल रखना चाहिये जिससे तुम्हारे पोते-पोतियों में इस प्रकार के विचार पैदा न हो जायें ।

श्री० ना०—हमारे पोते-पोतियों में ! अगर ऐसा होता तो भी तसल्ली थी । पर आश्चर्य तो यह है कि इस प्रकार के विचारों का प्रादुर्भाव हमारी फ्लोरेंस में हो रहा है ।

हर्बर्ट (गम्भीर मुद्रा से)—हैं फ्लोरेंस ! परन्तु वह तो ऐसे विचारों से अलग है । वह.....

एलिजाबेथ (शरारत से)—सिडनी के लिये तो वह बहुत ही आश्चर्य जनक स्त्री है.....हैं ! पर मुझे क्या ऐसा कहना चाहिये था ?

नार्डिंगेल—मिसेज़ हर्बर्ट ! आप को छोड़ कर । परन्तु यह तो प्रत्यक्ष ही है ।

एलिजाबेथ—नहीं, मुझ में तो कोई विशेष बात नहीं ।
मैं केवल.....क्या कहना चाहिये, सिडनी ?

हर्बर्ट (हंसते हुए, जिससे परेशानी टपकती है)—तुम बड़ी
नटखट हो ।

एलिजाबेथ—मैं नटखट हूँ !

हर्बर्ट—मेरा तो यही विचार है कि मिस नाईटिंगेल
आश्चर्य जनक विचार रखती है । उसमें काम करने की
सामर्थ्य भी है ।

श्री० ना०—इसके लिये धन्यवाद, मि० हर्बर्ट ! मैं
आप के मुख से उसके बारे में यही सुनना चाहती थी, वह
बिल्कुल ऐसी ही है । अद्भुत ! यह वही है जिससे कि विवाह
करने के लिये आपसे अधिक लन्दन निवासी लालायित हैं
और जान देते हैं । आनन्द मय पारिवारिक जीवन, काफ़ी
हद तक उसके विचारों की रक्षा करने वाले माता पिता;
परन्तु इतना होने पर भी उसकी इच्छा क्या है ? क्या वह
रानी बनना चाहती है ? नहीं ! क्या वह राजकीय कामों
में देश की नेता बनना चाहती है ? नहीं ! क्या वह कला-
विद् बनना चाहती है ! मेरे ख्याल में वह चित्र-कला
अच्छी तरह जान सकती है और संगीत वगैरह में भी
प्रयत्न-शील होने पर काफ़ी सफल हो सकती है । परन्तु यह
सब भी उसे पसन्द नहीं है । वह चाहती है सेलिसबरी

अस्पताल में साधारण नर्स की तरह भर्ती होकर काम करना.....हर्बर्ट, आपने ठीक कहा, वह बड़ी अद्भुत लड़की है ।

हर्बर्ट—पर वहां वह केवल शिक्षा के लिये जाना चाहती है, अधिक समय तक ठहरना नहीं ।

श्री० ना०—वहां की शिक्षा ही क्या है ? जिसे किसी महिला को देखना भी नहीं चाहिये, उसे वह देखेगी । वहां पर गँवार व साधारण श्रेणी के व्यक्तियों से उसका वास्ता पड़ेगा । अस्पतालों में क्या क्या होता है इस का शायद आप को ज्ञान भी न होगा । नर्सों हमेशा नशे में मस्त रहती हैं.....कभी २ जो घटनायें घट जाती हैं उनके सामने यह मामूली बात समझना चाहिये ।

हर्बर्ट—ऐसा कदापि नहीं ।

पामस्टन—नहीं, बात तो यही है, परन्तु अगर मिस नाईटिंगेल सी महिलाएँ ऐसे कामों को अपने हाथों में ले लेवें तो काम का ढंग ही बदल जावे ।

नाईटिंगेल—प्रिये, मैं हमेशा से तुम्हें यही कहता आ रहा हूँ । तुम जानती हो कि उस ओर उसे कोई शक्ति सदैव प्रेरित करती आ रही है ।

श्री० ना०—प्रेरणा ! यह आप कैसी बेहूदी बातें कर रहे हैं । इस प्रकार की प्रेरणायें साधुओं व संन्यासियों को

हुआ करता है, न कि चंचल युवतियों का जिनका मन हवाई घोड़े दौड़ाया करता है ।

हर्वर्ट—वह सन्यासिनी ही सी प्रतीत होती है ।

एलिजाबेथ (दवे स्वर में)—और पहिनावा भी..... हैं ! मैंने फिर ऐसा कह कर भूल की ।

श्री० ना० (दुःखित होकर)—नहीं प्यारी ! तुमने ठीक ही कहा है । मैं उसे अच्छे २ वस्त्राभूषण पहनने को कहती हूँ मगर वह इस ओर ध्यान ही नहीं देती । वह पार्टियों में शामिल होना भी पसन्द नहीं करती, क्लब वगैरह से उसे नफरत है । लोग चाहे उसे किसी प्रेमी के पीछे पागल बतलावें, पर वह किसी पुरुष की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखती ।

एलिजाबेथ (अपने पहिले कथन पर सकुचाती हुई)—परन्तु मिसेज नाईटिंगेल, वास्तव में यह तो एक बहुत ही अच्छी बात है ।

श्री० ना०—तुम इसे अच्छा समझती हो, मैं इसे मूर्खता समझती हूँ ।

हर्वर्ट—मैं भी इसे अच्छा समझता हूँ, यह तो विशिष्ट बात है । मेरा मिस नाईटिंगेल पर पूरा विश्वास है । वह अपने जीवन में कोई महान् कार्य करके दिखलाएगी, जो किसी और से सम्भव नहीं—

[जीने से तीन व्यक्तियों के आने की आवाज़ आती है और वह रुक जाता है ।

श्री० ना० (ठंडी सांस भरकर)—आप मेरी पुत्री से इतनी अधिक आशा रखते हैं ।

नार्टिंगेल—चुप फैनी, वह यहीं आ रही है ।

[जीने पर जो तीन व्यक्ति हैं उनमें दो स्त्रियाँ और एक पुरुष है । वह पुरुष शरीर का दृष्टपुष्ट, चौड़े मस्तक वाला, सुन्दर और प्रभावशाली है । उसका नाम है हेनरी ट्रेमेन । उसकी उमर कोई ३२ साल की होगी । वह लखपति आदमी है, और इंगलैंड के धनाढ्य व्यक्तियों में से एक है । स्वयं हेनरी ने या उसके पिता ने धन का उत्पादन नहीं किया । जब हेनरी अष्टम् ने गिरिजाघरों की सम्पत्तियाँ हड़पनी शुरू की थीं, उसी समय इनके पूर्वजों के हाथ भी गहरी जायदाद लग गई । इनके घराने में से किसी ने टॉमस क्रॉमवेल को विशेष सहायता पहुँचाई जिसके फलस्वरूप उसे दो विहार मिल गये थे । स्टुअर्ट ख़ानदान के अव्यवस्थित दिनों में इन्होंने बड़ी चतुराई से अपनी सम्पत्ति की रक्षा की और उस ख़ानदान की वापसी (Restoration) तक इन्होंने अपनी सम्पत्ति दुगनी कर ली । रॉबर्ट वॉलपोल के समय पीटर ट्रेमेन पार्लियामेंट का सदस्य बना । उसने इतनी चातुरी व किफ़ायतशारी से काम किया कि लन्दन में एक स्क़ेयर व एक बाज़ार ख़रीद लिया । ये दोनों चीज़ें एक दफ़ा

जुए में हार जाने के कारण उन्हें बेचनी पड़ी थी। ट्रेमेन घराने ने पदवियों की प्राप्ति की ओर ध्यान नहीं दिया। नारफॉक के हामण्ड घराने के समान उन्हें भी इसका अभिमान रहा है कि पदवियाँ दी जाने पर भी उन्होंने उन्हें स्वीकार नहीं किया। जॉर्ज ट्रेमेन ने बो ब्रेमेल के दिनों में लन्दन में काफ़ी ख्याति पाई। वह अन्तिम काल में अपने गांव में रहने लग गये थे। हेनरी ट्रेमेन आराम तलब प्राणी है। वह कभी आरलिंग्टन सड़क पर स्थित महल में रहता है, और कभी अपने ग्राम निवास में। अतुल धन और काम करने की कोई आवश्यकता न रहने पर साधारणतः यही अनुमान लगाया जा सकता है कि वह बड़ा अङ्कारी अथवा मूर्ख होगा। परन्तु वह इनमें से कुछ भी नहीं है। वह एक युवा व्यक्ति है, जिस पर अतुल धन का कोई भी कुप्रभाव नहीं पड़ा। इस जीवन का क्या लक्ष्य है, यही जानना उसके जीवन का उद्देश्य है।

उन दो स्त्रियों में जो बड़ी है वह सेलीना ब्रेसब्रिज, अर्थात् श्रीमान् चार्ल्स ब्रेसब्रिज की पत्नी है। चार्ल्स ब्रेसब्रिज प्रख्यात यात्रियों में से हैं। दूसरी नाईटिंगेल परिवार की छोटी लड़की फ्लोरेन्स नाईटिंगेल है।

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल इस समय लगभग अष्टाईस वर्ष की होगी। उसका क्रुद लम्बा, बदन सीधा और आकर्षक है। उसके बाल सुनहले, मुखकृति सुकोमल और आँखें बड़ी २ हैं। उसका चेहरा

किंचित लम्बा परन्तु कदाचित् प्रचलित विचारों के अनुसार सुन्दर नहीं है; इतना अवश्य है कि किसी प्रकार को अन्तर्ज्योति से वह प्रकाशित हो रहा है। उसका चौड़ा मस्तक बालों के खास तरीके से बाँधने के कारण कुछ ढका हुआ है। उसके नाक कान वगैरह उभरे हुए और उच्च खानदान के च्योतक हैं। नाक उसकी सुन्दर और ओठ पतले २ हैं जिनसे कभी बच्चों की सी प्रसन्नता और कभी विचारों की गम्भीरता प्रकट होती है। उसकी दृढ़ किंचित निकली हुई ठोड़ी और कोमल परन्तु समर्थ हाथ हैं।

दोनों स्त्रियाँ गलवाहियाँ डाले हुए हैं; ट्रेमेन अलग और विचारमग्न सा है।

श्री० ना० (अकस्मात् दिखलाई पड़ने पर)—.....क्या यह बुरी लगने वाली बात नहीं है ?

पामस्टन—क्या ही सुन्दर दृश्य है। एक कुमारी (here Diana) गड़रिये से बचने का प्रयत्न कर रही है और सहेली उसके साथ है।

एलिजाबेथ—भेद इतना है कि सहेली एक विवाहिता है और गड़रिया भेड़ के सदृश्य सीधा दिखाई देता है।

[वे तीनों सीढ़ियों में खड़े हो जाते हैं, दोनों स्त्रियाँ पीछे की ओर घूम कर बगीचे की ओर देखती हैं, ट्रेमेन पास में खड़ा रहता है।

श्री० ना०—(विचार में पड़ती है) यह भी शेकलफोर्ड जैसा किस्सा होता दीखता है। मुझे विचारे ट्रेमेन ने तो उससे विवाह का प्रस्ताव करने के लिये उचित अवसर के लिये कहा था, और इसी लिये मैंने उन्हें वायुसेवन को भेजा था। परन्तु सेलीना ब्रेसब्रिज को न जाने उसने कैसे साथ में घसीट लिया। उसे इस प्रकार उनके काम में दखल न देना चाहिये था। उसने तो अपना विवाह कर लिया है...और इसका नतीजा यह होगा कि मेरी लड़की क्वारी ही रह जावेगी।

[ट्रेमेन फ्लोरेन्स को प्रणाम करता है और बिदा लेकर अन्दर घुस जाता है।

हां, ठीक इसी प्रकार दो वर्ष पहिले शेकलफोर्ड के साथ हुआ था, जब कि उसके प्रस्ताव को भी इसने ठुकरा दिया था...विलियम् ! सचमुच, तुम्हारी लड़की बड़ी ढीठ है।

पामस्टर्न—देखो, यही तो बच्चों की बुराइयां पिता पर लादना है।

नार्डिंगेल—पर फैनी, वह तुम्हारी भी तो लड़की है।

श्री० ना० (फ्लोरेन्स और श्रीमती ब्रेसब्रिज चुपके से चलने को होती हैं, श्रीमती नार्डिंगेल इसे पसन्द नहीं करती। सन्ध्या की घटना के बारे में वह जानना चाहती है, वह उसे पुकारती है)—प्यारी फ्लो।

फ्लोरेन्स (सेलीना को छोड़ कर वह पार्टी में शामिल हो जाती है)—हां माता जी ? (सेलीना भी आती है) ।

श्री० ना०—सन्ध्या का वायुसेवन किस प्रकार बीता ?

फ्लोरेन्स—बहुत अच्छी तरह । हम लोग मीलों तक चले गये ।

श्री० ना०—मेरा खयाल था सेलीना तेरे साथ नहीं गई होगी ।

फ्लोरेन्स—वह तो नहीं चाहती थी, मगर मैं ही उसे घसीट कर ले गई ।

श्री० ना०—सेलीना, तुम्हें उसने थका दिया होगा ।

सेलीना—नहीं तो, मिसेज़ नाईटिंगेल, मुझे टहलना बहुत प्रिय लगता है ।

श्री० ना० (रुद्धता से)—फिर भी मेरा.....परन्तु तुम्हें यह उचित न था, (फ्लोरेन्स से प्रश्न करती है) बेटी, तू कहाँ गई थी, क्या जङ्गल की तरफ ?

फ्लोरेन्स—इन्हें अपने रोगी दिखाने ले गई थी ।

श्री० ना० (मुंह बनाती है)—पुत्री, मैं तेरी बात नहीं समझ सकी—तू साफ़ २ बोला कर ।

फ्लोरेन्स—माता जी, मैं रोगियों को देखने चली गई थी, जिनकी मैं सेवा किया करती हूँ ।

श्री० ना० (हंसते हुए) प्रिय पुत्री ! तू तो अजीब सनकी है । अच्छा चल जाने दे ।

पामस्टन (उत्सुकता पूर्वक)—मिस नाईटिंगेल, मैं जानना चाहता हूँ । मुझे बतलाओ ये रोगी कौन हैं ?

फ्लोरेन्स—प्रथम, दमा से पीड़ित मारगेरी विह्टी, पोस्ट मास्टर की बूढ़ी मां । वह विचारी बहुत दुःखी है । जितनी तकलीफ उसे है उतनी शायद वहां के सब रोगियों को मिला कर भी न होगी । दूसरा, एक किसान है, जिसके एक बहुत गहरा जखम हो गया है । इतना गहरा है कि अन्दर की हड्डी तक पहुँच गया है, उसकी मरहम पट्टी प्रति दिन करनी पड़ती है ।

श्री० ना (घबरा कर)—प्यारी फ्लो ! यह कसाई की दुकान नहीं है ।

फ्लोरेन्स (बीच में दखल दिये जाने के कारण होंठ काट कर रह जाती है)—तीसरा, एक बच्चा है जिसकी मां मर चुकी है, उसका बाप मेरी पीठ मुड़ने के साथ ही उसे गोشت खिलाने का प्रयत्न करता है । चौथी, एक बुढ़िया है जिसे गठिया की बिमारी है, इसलिये उसके कन्धे की मालिश करनी पड़ती है । अन्तिम डन्डी है । पिता जी उसे भली प्रकार जानते हैं ।

नाईटिंगेल—घसियारे का कुत्ता । गड़हे में गिर जाने के

कारण उसकी अगली टांग टूट गई थी। अच्छा होता कि विचारे को उसी वक़्त मार दिया जाता।

फ्लोरेन्स (अपने विचारों का पूरी तरह समर्थन करते हुए)—मारने की क्या ज़रूरत ? उसकी हड्डी मनुष्य की हड्डी की तरह जुड़ सकती है। केवल इलाज की ज़रूरत है।

श्री० ना० (धोरे से)—प्यारी बेटी, पर तुम्हें अपने पिता के विचारों का विरोध नहीं करना चाहिये।

फ्लोरेन्स (अपने भावी कठोर जीवन का उसके स्वभाव में आभास मिलता है)—क्या माता जी, पिता का कहना हमेशा ही ठीक होता है ?

एलिज़ाबेथ (उतवालेपन में)—फ्लोरेन्स, मुझे भी अपने रोगी दिखाने ले चलोगी ?

फ्लोरेन्स (खुश होकर)—ज़रूर।

एलिज़ाबेथ—सिडनी को भी। वह भी उन्हें देखकर खुश होंगे।

फ्लोरेन्स (हर्बर्ट से)—आप भी चलियेगा क्या ?

हर्बर्ट (सच्चे दिल से)—मिस नाईटिंगेल, मुझे आपके सब कामों से प्रेम है।

[उनकी आँखें चार हो जाती हैं। वे एक दूसरे की ओर देखते रहते हैं।

फ्लोरेन्स—बहुत अच्छा.....हम सब लोग कल सुबह चलेंगे ।

हर्वर्ट—मैंने एक स्कीम सोची है । उसके बारे में मैं आप की सलाह लेना चाहता हूँ । मैं निराश्रित रोगियों के लिये एक आश्रम बनवाने का सोच रहा हूँ । इस प्रकार का कोई आश्रम अब तक नहीं है । मुझे अपने किसानों के लिये भी एक बनवाना है । समुद्र के किनारे मेरी कुछ जमीन है.....लिज इसे अच्छी तरह जानती है ।

एलिजाबेथ—उनके लिये इससे अच्छा और क्या हो सकता है, और उन्हें चाहिये भी क्या ।

श्री० ना०—प्यारी, बड़ी खुशी की बात है ! क्या ही अच्छा होता अगर इस प्रकार का प्रबन्ध हमारे..... फ्लो, तूने विचारे ट्रेमेन को रोगी दिखा कर उसकी भूख नाश कर दी होगी, वह अब कहाँ होगा ?

फ्लोरेन्स—मुझे पता नहीं । क्यों सेलीना, वह कहाँ गये हैं ?

सेलीना—वह पत्र लिखने का जिकर कर रहे थे ।

श्री० ना० (तिरस्कार से)—पर बेटी, वह तो अपना अतिथि है । उसका आदर सत्कार तुम्हें करना चाहिये था ।

फ्लोरेन्स—मैं तो इसी प्रयत्न में थी, मगर उन्होंने सब हास्य में ढाल दिया ।

नाईटिंगेल (उठती है)—यह कोई नई बात नहीं.....
अच्छा मैं जाकर उसके नाश्ते के लिये कुछ लाता हूँ ।

श्री० ना०—हम लोग सब ही कुछ नाश्ता कर लें ।
चाय का समय हो गया है । (सब उठते हैं)

पामस्टन—मैं नाश्ता नहीं करना चाहता । मेरी यहीं
ठहरने की इच्छा है बशर्ते कि आप इजाजत दें ।

[श्रीमती नाईटिंगेल आगे २ चलती हैं और वे सब घर में
दाखिल हो जाते हैं । फ्लोरेन्स वहीं रह जाती है ।

फ्लोरेन्स—मेरे लिये इस प्रकार का व्यवहार असह्य
हो जाता है । लॉर्ड पामस्टन, क्या मैं आपके पास ठहर
सकती हूँ ?

पामस्टन—इसमें मेरा सम्मान है ।

फ्लोरेन्स—मैं आपसे सलाह लेना चाहती हूँ ।

पामस्टन—मेरा सौभाग्य, किस विषय में ?

फ्लोरेन्स—अपने ही बारे में ।

पामस्टन—आश्चर्य ! आज्ञा कीजिये ।

फ्लोरेन्स—क्या स्त्रियों के लिये इस संसार में किसी
हितकर काम में भाग लेना सम्भव नहीं ?

पामस्टन—सन्तति पैदा करके स्त्रियाँ इस संसार में एक
महत्वपूर्ण काम करती हैं । इससे भी अधिक महत्व और
वस्तुओं को देना तुम्हारे अपने विचारों पर निर्भर है ।

फ्लोरेन्स—क्या स्त्रियों के लिये केवल एक ही रास्ता खुला है ?

पामस्टर्न—गृह प्रबन्ध भी ।

फ्लोरेन्स—अगर वे गृहिणी बनना चाहें तब ना । परन्तु अगर कोई स्त्री विवाह नहीं करना चाहती तब क्या अपनी माँ के पास एक नौकरानी की तरह रहने के अलावा और रास्ता नहीं है ?

पामस्टर्न—क्यों नहीं, और भी कई काम हैं ।

फ्लोरेन्स—हाँ, बच्चों की शिक्षिका बनने का रास्ता उनके लिये खुला हुआ है । कोई स्वतन्त्र पथ वे अपने लिये क्यों न चुनें ? किसी महत्वपूर्ण काम में वे क्यों न भाग लें ?

पामस्टर्न—जैसे ?

फ्लोरेन्स—कोई भी, राजनीति, कानून, व्यापार..... और मेरे लिये सेवा-टहल (Nursing).

पामस्टर्न—क्यों नहीं ?

फ्लोरेन्स—सच बतलाइये, क्या सचमुच आप मेरे विचारों को मूर्खतापूर्ण, भ्रममय अथवा व्यवहारोपयोगी नहीं समझते ?

पामस्टर्न—राजनीति अथवा कानून के बारे में तो मैं कुछ नहीं बता सकता, मगर नर्सिंग अवश्य बड़ा अच्छा काम है ।

फ्लोरेन्स (फूली नहीं समाती)—.....आ हा !

पामस्टन (गम्भीरता से)—...अगर वह दिल लगाकर किया जावे । दो बातें याद रखनी बहुत जरूरी हैं । दोनों साधारण सी बातें हैं, इसी लिये उन पर ध्यान नहीं दिया जाता । प्रथम, जो कुछ भी काम करना तुमने निश्चित किया हो, अवसर आने तक उसकी प्रतीक्षा में रहो । द्वितीय, अवसर आते ही उससे लाभ उठाने के लिये प्रस्तुत रहो । प्रस्तुत रहने से मेरा तात्पर्य यह है कि जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो उन्हें इकट्ठा कर लिया जावे । बिना साधनों के उत्साह व्यर्थ है । अगर अवसर आने तक तुम्हारी तैयारी न हो तो और किसी अवसर की प्रतीक्षा करो । मैंने युद्ध-विभाग से इस पद पर आने के लिये तैयारी में बीस वर्ष लगा दिये हैं ।

फ्लोरेन्स—पर क्यों ?

पामस्टन—क्योंकि, मेरी शिक्षा पूर्ण नहीं हुई थी । वाटरलू क्या ऑस्टरलिज के पहले ही स्पेन्सर परसीवल मुझे अर्थ-सचिव बना रहे थे । यह बहुत पुरानी बात है । लगभग ४० साल हो गये होंगे । क्यों ? क्या वह मेरे लिये स्वर्णवसर नहीं था ?

फ्लोरेन्स—धन्य हैं आप ! आपकी उमर क्या होगी तब—पच्चीस वर्ष ?

पामस्टर्न—लगभग इतनी ही ।

फ्लोरेन्स—आपने उस वक़्त अपनी अनुमति क्यों नहीं दे दी ? अब तक आप कहीं के कहीं पहुँच गये होते ।

पामस्टर्न—फ्लोरेन्स केवल इसी लिये ! न जाने अब तक मैं किधर पहुँचता । कदाचित मेरा नामो-निशां भी न रहता, क्योंकि मैं काम में बिल्कुल अनभिज्ञ था ।

फ्लोरेन्स—आप के विभाग में इस प्रकार के और मनुष्य भी तो थे ।

पामस्टर्न—हाऊस ऑफ कॉमन्स में अपने व्याख्यान भाड़ने के लिये क्या ? फॉक्स और पिट के अलावा और कौन हो सकते हैं, जो पहिली बार अच्छा व्याख्यान दे सकें । युद्ध-विभाग में साधारण सी मुझे नौकरी मिली । मैं उसी पर बना रहा । मुझे अच्छी २ नौकरियां देने को कहा—भारत का गवर्नर जनरल और आयरलैंड का वायसराय बनाने का वायदा किया । उत्तराधिकारी राजकुमार ने मुझे जमेका भेजने का प्रयत्न किया । परन्तु मैंने सर्वथा इन्कार कर दिया और अपनी जगह बना रहा । इतने अर्से में मैं सरकारी विभागों का व पार्लियामेन्ट का काम भली प्रकार जान गया । यहां तक कि मुझे यह विश्वास हो गया कि कोई भी पार्टी मुझे अधिक काल तक अलग नहीं रख सकती और यह बात आज तुम्हारे सामने है ।

शिक्षण ! यह शिक्षण का ही फल है । यही तुम्हें भी करना चाहिये ।

फ्लोरेन्स—मैं इससे सहमत हूँ । मैं भी यही करना चाहती हूँ । मैं सेलिसबरी अस्पताल में जाना चाहती थी मगर मेरे माता पिता ने नहीं जाने दिया । तब भी मौका पाकर मैं उनकी पार्टी से खिसक जाती हूँ । पेरिस में बजाय अजायबघर में घूमने के मैं धर्मार्थ औषधालय में चली जाती थी । इटली में भी गत वर्ष मैंने रोगियों की सुश्रुषा में काफी समय बिताया, और कैसरवर्थ में भी लगभग एक मास तक मैंने काम किया ।

पामस्टन—जर्मनी । राईन में उस स्थान पर ?

फ्लोरेन्स—जी हाँ..... । उसकी उन्नति आश्चर्य जनक है । पहिले वह एक भोंपड़ी में पादरी के घर के पीछे बगीचे में स्थित था और अब एक बड़े आश्रम के रूप में परिवर्तित हो गया है । उसमें सैकड़ों रोगियों के लिये प्रबन्ध है । इतनी उन्नति का एक मात्र कारण प्रवर्तक की लगन कही जा सकती है । उसने यह नहीं सोचा कि घर वाले मेरे इस काम से सहमत होंगे या नहीं, या फिर पादरी के योग्य यह काम है भी या नहीं, अथवा मुझे इस घर को अपने हाथों से बनाने की अपेक्षा कहीं जाकर व्याख्यान देना चाहिये । उसे अपने उद्देश्य की सफलता में

पूर्ण विश्वास था । और उसने उसे पूरा भी कर दिखाया । प्रत्येक व्यक्ति ने उसे निरुत्साहित किया । जो कुछ लोग कहते थे वह मैं भली प्रकार जानती हूँ । और मेरे प्रति भी वही वाक्य दोहराये जा रहे हैं । कोई कहता था “आप व्यर्थ में समय का दुरुपयोग कर रहे हैं, कुछ प्रयत्न करने पर सामाजिक दृष्टि में आप बहुत ऊँचे चढ़ सकते हैं । आप में वह शक्ति विद्यमान है” कोई कहता था, “आपको यह नहीं करना चाहिये, यह काम पादरियों को नहीं सुहाता, साधारण स्थिति का मनुष्य ही बढ़ईगिरी करता है” किसी और ने कहा—“यह क्रियात्मक वस्तु नहीं है” उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया । धीरे धीरे उसने रुपया इकट्ठा किया । उसने जंगल में जगह खरीदी और मकान बना कर खड़ा कर दिया । जो भी कोई अभागा रोगी आता था उसे वह इलाज के लिये आश्रम में दाखिल कर लेता था । अब उस आश्रम की कीर्ति चारों ओर फैल रही है । एक आदेश को लेकर लगन से काम करने का यह स्मारक है ।

पामस्टर्न—हाँ, लगन तो तुम में है ।

फ्लोरेन्स—आप ऐसा समझते हैं ?

पामस्टर्न—परन्तु आदेश ?

फ्लोरेन्स—दस वर्ष व्यतीत हुए.....पर आपको बताना ठीक न होगा ।

पामस्टर्न—क्यों नहीं ?

फ्लोरेन्स—क्योंकि या तो आप उसे कोई महत्व नहीं देंगे, या मेरी हंसी उड़ावेंगे ।

पामस्टर्न—विश्वास रखो, ऐसा न होगा ।

फ्लोरेन्स—दस वर्ष की बात है मैं रात के वक़्त इसी चबूतरे पर खड़ी थी । पूर्ण अन्धकार था । अकस्मात् दृश्य बदलने लगा । ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो यह स्थान विस्तृत हो गया हो और फासला भी बीच का बढ़ गया हो । सब खिड़कियाँ प्रकाश से जगमगा उठीं और बड़े बड़े दरवाज़ों में से कई व्यक्ति इधर से उधर जाते हुए गोचर हुए । वे कुछ वस्तुएँ अन्दर लेजा रहे थे । कदाचित वे गद्दे थे । कोई लालटेन लेकर उनके साथ था । मुझे ऐसा आभास हुआ कि वह स्त्री, जिसके हाथ में लालटेन थी, मैं ही थी—वह स्थान भी न जाने कहीं बहुत दूर स्थित था । उसके पश्चात् आवाज़ हुई.....

पामस्टर्न— उस झुंड के अन्दर ।

फ्लोरेन्स—नहीं, मेरे ही अन्दर । मेरे मस्तिष्क में आहट हुई, उसने मुझसे कहा—“तैय्यार हो जाओ” ।

पामस्टर्न—तुमने इस बात का किसी से जिक्र किया है ?

फ्लोरेन्स—मैंने पिता जी से कहने का साहस किया

था, परन्तु असफल रही। उन्होंने माता जी को भी बुला लिया.....।

पामस्टन—फिर ?

फ्लोरेन्स—उन्होंने मुझे जुलाब के लिये एक खुराक दवा दे दी।

पामस्टन—इसे तो अजीर्ण और वाइबिल की खिचड़ी समझना चाहिये।

फ्लोरेन्स (गुस्से से)—आपने मज्जाक न उड़ाने का वायदा किया था।

पामस्टन—मैं मज्जाक नहीं करता। तुमने मुझ पर जो प्रभाव डाला है उसे अपने आप से छिपाने का प्रयत्न कर रहा था।

फ्लोरेन्स—.....लॉर्ड पामस्टन, उससे क्या समझना चाहिये ?

पामस्टन—तुम क्या समझती हो ?

फ्लोरेन्स—मुझे नहीं मालूम। मैं कुछ तय नहीं कर सकी। शायद वह मृगतृष्णा मात्र हो। कभी विचार आता है कि मुझे नींद आ गई थी और मैंने स्वप्न देखा होगा। कभी सोचती हूँ कि, कोई आश्चर्य नहीं, वह दैवी प्रेरणा होगी, और मेरे हाथ से वह काम होगा जो दूसरों के लिये असम्भव है।

पामस्टर्न—इस पर विश्वास किया जा सकता है ।
पर स्मरण रहे शिक्षा की कमी पवित्र उद्देश्य की पूर्ति नहीं
कर सकती । अवसर हमें कार्य के लिये प्रेरित कर सकता
है और किंचित सफल भी, परन्तु पूर्ण विजय-लाभ के
लिये योग्यता की आवश्यकता होती है ।

फ्लोरेन्स—आपने आज मुझे उस बात का ज्ञान करवा
दिया है जिसका मुझे पहिले कभी पता न था । प्रोत्साहन ।
जब कोई भी प्रोत्साहन देने वाला नहीं होता तब निपट
एकान्त व कठिनाई का अनुभव होता है ।

पामस्टर्न—जाओ और शिक्षा प्राप्त करो ।

फ्लोरेन्स—ऐसा ही करूँगी, मैं अब बचपन को अलग
हटा कर मनुष्य बनने का प्रयत्न करूँगी ।

[श्रीमती नाईटिंगेल दरवाजे में दिखाई देती है, और उन्हें
देख कर मुस्कराती है ।

श्री० ना०—फ्लोरेन्स, वयोवृद्ध लॉर्ड पामस्टर्न को
अपना उत्साह दिखा कर इस तरह परेशान न करो ।

फ्लोरेन्स—नहीं—माँ ।

पामस्टर्न (उठते हुए)—मैंने तो उसकी बातें बड़े चाव
से सुनी हैं । मुझे कोई परेशानी नहीं मालूम दी ।

श्री० ना०—ओह हो । मेरी बिटिया सचमुच दूसरों के
मनों को आनन्दित कर सकती है । अन्दर पधारिये,

लॉर्ड पामस्टन साहब, हम लोग खेल खेलने का साज सजा रहे हैं ।

पामस्टन—जीवन सूक्ष्म रूप में ! (प्रसन्न मन से) चलिये मैं भी खेलूंगा ।

[श्रीमती नाईटिंगेल के साथ भीतर जाते हैं ।

फ्लोरेन्स (फव्वारे के पास)—मेरे विचार ठीक निकले । मैं ठीक ही सोच रही थी । मुझे विश्वास है कि अगर ईश्वर सहायक रहा तो मैं कोई महान् कार्य कर सकूंगी ।

[वह खड़ी हुई नीचे जल में टक-टकी लगाये देख रही है । इतने में सिडनी हर्वर्ट मकान के एक कोने से निकलकर उसके पास आते हैं ।

हर्वर्ट—.....क्या मैं आ सकता हूँ और आप से कुछ बात-चीत कर सकता हूँ ?

फ्लोरेन्स (चौंक कर)—हैं ! ...मैं तो समझती थी कि आप चाय पी रहे होंगे ।

हर्वर्ट—मैं वहां से खिसक आया हूँ । आपके उज्ज्वल कार्य के बारे में कुछ बात-चीत कर सकूँ, ऐसा मेरा विचार है ।

फ्लोरेन्स—बड़ी खुशी से ।

हर्वर्ट—मुझे आशा है कि आप अपने कथन पर दृढ़ रहेंगी । आप का कथन ठीक है ऐसा मेरा विश्वास है ।

अपने बस भर मैं आप की सहायता करने का प्रयत्न करूंगा ।

फ्लोरेन्स—आइये हम लोग बगीचे में चले चलें ।

[वे मुड़ते हैं और सीढ़ियां चढ़कर चबूतरे पर पहुंच जाते हैं ।

[जैसे ही वे नीचे उतरने लगते हैं, एलिज़ावेथ हंसती हुई दरवाजे तक सिडनी की खोज में आती है । उन दोनों को साथ देखते ही उसकी हंसी उड़ जाती है और चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है ।

[पर्दा गिरता है]

दृश्य दूसरा

दृश्य—वही चबूतरा, चन्द्रमा की रोशनी में फ्लोरेन्स अकेली घूम रही है, उसके हाथ आगे की ओर हैं और वह गुनगुना रही है ।

फ्लोरेन्स—ये थोथे विचार । हे प्रभो, अगर तुम्हें मेरी सेवा की आवश्यकता ही नहीं तो ऐसे विचार मेरे दिमाग में आने ही क्यों देते हो ? अगर यह जीवन ही मृत तुल्य है तो यह दुःख दायिनी आशा ही क्यों—और आशा भी निराशामय ?

[वह फव्वारे के पास रुक जाती है। उसे वह फव्वारा इस धरातल के परे की वस्तु प्रतीत होता है। उसे लोगों के आने की आहट सुनाई देती है, और वह पीछे हट कर ओट में हो जाती है।

श्री० ना०—फ्लोरेन्स.....वह कहाँ है ?

हर्बर्ट (पीछे आते हुए)—हम लोग इस प्रकार लगते हैं जैसे किसी कुमारी की तलाश में एक राजकुमार के सब सभासद जा रहे हों।

पामस्टन (बैठे हुए गले से)—इस प्रकार की सर्दी और कुहरे में तो हम सबको जुकाम हो जावेगा।

एलिजाबेथ—आप ठीक कह रहे हैं।

श्री० ना० (व्यवहारिक बुद्धि से)—क्यों विलियम, तुम अपनी दवा खा चुके हो न ?

नाईटिंगेल (स्फूर्ति के साथ)—हाँ प्रिये !

[वे आगे बढ़ जाते हैं।

श्री० ना० (उसके पीछे २ सब चलते हैं)—बड़ी बुरी बात है। उसे मालूम था कि मैंने उसे भूल-भुलैया (खेल) खेलने के लिये कह रखा था।

[फ्लोरेन्स ओट से निकल कर फव्वारे के पास खड़ी हो जाती है।

ए फव्वारे ! हमारे स्वभाव में इतनी भिन्नता क्यों ?

इस तेरी तरह सीधे-सादे क्यों नहीं हो सकते ? तेरी धारा
 बाँदी की टूटी में से निकलती है और समाकार गोलाई में
 गिरती है.....तेरी माता कितनी खुश होती होगी ।
 हे प्रभो ! अगर हमें दूसरों के कहे मुताबिक ही चलना पड़े
 और उनका ही दिमाग बरतना पड़े तो फिर हमें अपना
 दिमाग क्यों मिला है । ए फव्वारे, मैं अपने जीवन को
 किस साँचे में ढालूँ ? क्या यह सब एक ही है ? कठोर व्रत
 धारण करके संसार में कुछ कर दिखाने में अथवा संग्राम
 से मुँह मोड़ कर अन्य स्त्रियों की तरह गृह-जीवन में पड़
 जाने में क्या कोई अन्तर नहीं है ? तेरा प्रश्न है कि मैं
 क्या चाहती हूँ ? अगर मुझे यह ज्ञान होता तो मैं तेरे ही
 पास आती ? तेरा कहना है कि किसी के प्रेमपाश में
 बंधने और विवाह करवाने में माधुर्य है; तेरा मतलब है
 कि मेरे बच्चे यहाँ आवें, खेलें और तेरे कलरव को सुनें ।
 पर बतला, कहाँ स्त्री और पुरुष का प्रेम और कहाँ ईश्वर
 की आराधना ? तेरा कहना है कि प्रेमी का प्रेमालिंगन ही
 इस संसार का केन्द्र बिंदु है, उसी में ईश्वर-दर्शन है ।
 रुव्वारे, तुम 'रात्रि' से क्रीड़ा करते आये हो, और उस से
 प्रेमियों के प्रेमालाप सुनते रहे हो, इसलिये तुम मन्त्र
 मुग्ध हो गये हो.....

ट्रेमेन (बगीचे से)—मिस फ्लोरेन्स !

फ्लोरेन्स—कौन है ?

ट्रेमेन (दिखाई देता है)—अकेली हो क्या ? मुझे तो ऐसा आभास हुआ था कि तुम किसी से बातचीत कर रही हो ।

फ्लोरेन्स—मेरी आवाज़ सुनाई दी होगी । मैं फव्वारे से बात कर रही थी । वह मेरा बहुत पुराना मित्र है । मैं उसे अपने दिल की सारी बातें बतलाती रही हूँ ।

ट्रेमेन—क्या वह मेरी भी सुनेगा ?

फ्लोरेन्स—पूछो ।

ट्रेमेन—फव्वारे, क्या तुम सुन रहे हो ?

फ्लोरेन्स—हाँ, वह सुन रहा है ।

ट्रेमेन—क्या मैं तुम्हारे सामने अपनी समस्या रख सकता हूँ और तुमसे नेक सलाह ले सकता हूँ ?

फ्लोरेन्स—वह कहता है—बतलाओ ।

ट्रेमेन—ए फव्वारे, एक स्त्री है.....वह बड़ी सुशील है, उच्च चिन्तार वाली है और भद्र महिला है, यहाँ तक कि मुझे उसके सामने खड़े होने का भी साहस नहीं होता ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें उसके स्वभाव का परिचय किस प्रकार मिला, उसका कहना है ।

ट्रेमेन—फव्वारे, उसके नेत्रों की ज्योति में दिखलाई

देता है, मुख-मण्डल से वह टपकता है, और उसके सुकोमल स्वर से वह प्रकट होता है ।

फ्लोरेन्स—फव्वारा कहता है, आँखें धोखा दे सकती हैं, चेहरा बनावटी हो सकता है, और फिर स्त्रियों की वाणी सीधे-सादे पुरुषों को अपने चंगुल में फंसा लेती है ।

ट्रेमेन—फव्वारा.....निर्दयी है ।

फ्लोरेन्स—वह बुद्धिमान है.....क्या हम लोग भीतर चलें ?

ट्रेमेन—अभी नहीं.....दिन भर से मैं इस प्रयत्न में था कि कहीं एकान्त में तुम से साक्षात् हो ।

फ्लोरेन्स—और मैं इस प्रयत्न में थी कि किसी प्रकार तुम से कच्ची काटूं ।

ट्रेमेन—क्यों !

फ्लोरेन्स—शायद आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रवृत्ति ।

ट्रेमेन—यह तो ऐसा प्रतीत होता है मानो असभ्य का सभ्यता से दूर भागना ।

फ्लोरेन्स—या सभ्यता का असभ्यता से भयभीत होना ।

ट्रेमेन—तो क्या मैं कन्द्रा में रहने वाला आदमी और उसकी पत्थर की कुल्हाड़ी सदृश हूँ ।

फ्लोरेन्स—मैंने यह तो नहीं कहा था कि मैं तुम्हें देख कर भागना चाहती थी ।

ट्रेमेन—मेरे ख्याल से तो तुम्हारे कहने का यही तात्पर्य था ।

फ्लोरेन्स—मेरा यह तात्पर्य न था ।

ट्रेमेन—फव्वारे, स्त्रियों की वाणी के बारे में तुम्हारे विचार ठीक निकले । वह सचमुच मूर्खों के लिये जाल सदृश है ।

फ्लोरेन्स (खेद प्रकट करते हुए)—फव्वारे का कहना है, भूल स्त्री की है ।

ट्रेमेन—बोलो, ए फव्वारे, वह किससे भागना चाहती थी ।

फ्लोरेन्स—वह कहता है कि वह स्वयम् से ही दूर भागना चाहती थी ।

ट्रेमेन—.....फ्लोरेन्स ।

फ्लोरेन्स—नहीं..... ।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ ।

फ्लोरेन्स—नहीं जी, मेरा उससे यह तात्पर्य न था ।

ट्रेमेन—.....मैं यह चाहता हूँ कि तुम मुझसे विवाह कर लो.....तुम और किसी से प्रेम तो नहीं करती ?

फ्लोरेन्स—नहीं ।

ट्रेमेन—फिर तुम.....मुझसे विवाह करोगी ?

फ्लोरेन्स—मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है ।

ट्रेमेन—तुम्हारे शब्द कोई अर्थ नहीं रखते ।

फ्लोरेन्स—आप सत्य कहते हैं । मैं कहना चाहती थी 'नहीं' ।

ट्रेमेन—इसका कारण ?

फ्लोरेन्स—जी ।

ट्रेमेन—अनिच्छा ?

फ्लोरेन्स—यह भी नहीं ।

ट्रेमेन—तुम्हारे सामने इसका कोई मूल्य नहीं है ?

फ्लोरेन्स—मूल्य क्यों नहीं.....हेनरी ।

ट्रेमेन—मुझे ऐसी आशा नहीं थी.....मेरा विचार था.....आह मेरी प्यारी ! मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं, (वह उसके हाथ पकड़ लेता है) प्रिये, तुम मुझ से विवाह करोगी ?

[वह चुप रहती है ।

तुम मुझसे विवाह करोगी ? मैं आज रात्रि में तुम्हारे पिता की अनुमति ले लूंगा, वह इसके प्रतिकूल कदापि नहीं जावेंगे । तुम जानती हो—मैं कितना धनवान हूँ ।

फ्लोरेन्स—तुम्हारे धन का मुझे लालच नहीं ।

ट्रेमेन—तुम्हें नहीं, पर तुम्हारे पिता को तो है ।

फ्लोरेन्स (नम्रता से)—क्या गुलामों की तरह विवाह में भी क्रय-विक्रय चलता है ?

ट्रेमेन—मेरे कहने का तात्पर्य केवल इतना ही था कि धन से तुम संसार की कोई भी वस्तु प्राप्त कर सकती हो ।

फ्लोरेन्स—स्वाधीनता के अतिरिक्त सब ।

ट्रेमेन—प्रिये, स्वाधीनता किस लिये ? विवाह तो बन्धन है उसमें स्वाधीनता कैसी ?

फ्लोरेन्स (अलग हटते हुए)—फव्वारे, क्या पुरुष कभी यह अनुभव नहीं करेंगे कि स्त्रियों को प्रेम और वैभव के अतिरिक्त और भी किसी चीज़ की आवश्यकता है ? वे भी पुरुषों की तरह अपने जीवन-पथ को स्वयम् निश्चित करने में स्वतन्त्रता चाहती हैं ? अपने मस्तिष्क को प्रयोग में ला सकती हैं ? सहवास की उन्हें कितनी भी अधिक आवश्यकता होते हुए भी उनके लिए उस से परे जीवन का कोई गूढ़तम अर्थ है, उसका कोई महत्व है ?

ट्रेमेन—फव्वारा कहता है, उनके लिये सहवास के अतिरिक्त जीवन का और कोई महान उद्देश्य नहीं है ।

फ्लोरेन्स—कुछ क्षण पहिले मुझे भी उसने यही सलाह दी थी ।

ट्रेमेन—वास्तव में उसका कथन सत्य है.....अदृश के कारण अपने जीवन को कष्टमय क्यों बना रही हो ?

फ्लोरेन्स—नहीं ऐसा नहीं। मेरा दृढ़ विचार है, कि भोग-विलास के परे जीवन का एक महान तत्व छिपा हुआ है ।

ट्रेमेन—प्रेम का तुम्हारी दृष्टि में यही मूल्य है ?

फ्लोरेन्स—प्रेम का मूल्य त्याग में है ।

ट्रेमेन—तुम से तर्क मैं क्या कर सकता हूँ और मैं चाहता भी नहीं । यह विषय बुद्धिगम्य नहीं बल्कि प्रकृति-जन्य है । मैं तो केवल इतना जानता हूँ फ्लोरेन्स, कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ; वह भी मानवी प्रेम, और तुम्हें मेरे बच्चों को जन्म देना होगा ।

फ्लोरेन्स—नहीं, यह नहीं, यह अनुचित है । तुम जानते हो मुझे बच्चे कितने प्यारे लगते हैं ।

ट्रेमेन—जानती हो मैं तुम्हारे बच्चों से कितना प्यार करूँगा ।

फ्लोरेन्स—उद्देश्य के लिये यह मोह मुझे त्यागना ही होगा ।

ट्रेमेन—अपने बच्चों को पढ़ा लिखा कर शिक्षित करना और उन्हें मनुष्य बनाना क्या महान काम नहीं है ? इससे महान काम स्त्रियों के लिये और कौनसा होगा ? (उसे अपने भुजपाश में एकदम बाँध लेता है) आहं, मेरा कहना नहीं मानोगी ? मेरा जीवन तुम्हारे लिये न्योछावर है । तुम्हारा जीवन सौन्दर्यमय और सुखमय बनाना ही मेरे जीवन का लक्ष्य रहेगा । मुझ पर और मेरी सब वस्तुओं पर तुम्हारा पूर्ण अधिकार रहेगा । (चुम्बन करता है)

तुम मेरे हृदय की रानी बनोगी । क्योंकि मैं तुम्हें चाहता हूँ, तुमसे प्रेम करता हूँ ।

फ्लोरेन्स (भटका देकर अलग हो जाती है)—नहीं, हेनरी नहीं, कदापि नहीं, मैं इसे नहीं मान सकती । ऐसा करना अपने आपको धोखा देना है ।

ट्रेमेन—इसका अर्थ ?

फ्लोरेन्स—यह अपराध अक्षम्य होगा, मुझे ईश्वर की ओर से प्रेरणा हुई है ।

ट्रेमेन—प्रेरणा किस किसम की ? क्या सन्यासिनी बनने की ?

फ्लोरेन्स—वह मुझे अग्रसर होने के लिये प्रेरित करती है ।

ट्रेमेन—तुम्हारा मतलब अस्पताल में नर्स बनने का है ? यह प्रेरणा नहीं है फ्लो, यह तुम्हारे मस्तिष्क का विकार मात्र है ।

[चुप रहती है ।

प्रिये, विवाह के एक वर्ष बाद ही तुम्हारी यह सारी नासमझी दूर हो जायगी । तुम्हारा पारिवारिक जीवन इसे दूर कर देगा ।

फ्लोरेन्स (सिर हिलाते हुए)—यह दैवी प्रेरणा है, हेनरी !

ट्रेमेन (पीछे खड़े होकर)—फ्लो, तुम्हारी यह दैवी प्रेरणा केवल मृग-तृष्णा है और मेरा आवाहन एक नैसर्गिक इच्छा की पूर्ति। यह प्रेरणा ऐसी है जो सृष्टि के साथ से ही चली आ रही है और अन्त तक रहेगी। यह प्रेरणा जंगलों में, पहाड़ों की तलेटियों में, मैदानों में अर्थात् सर्वत्र भूमण्डल पर विद्यमान है। वह मानव जीवन के पूर्व भी पाई जाती थी, और मनुष्य जाति से परे भी है।

फ्लोरेन्स—परन्तु उच्चतम जीवन में नहीं।

ट्रेमेन—अधिक मूल्यवान और प्रभावशाली। मानव जाति की उत्पत्ति और विनाश में उसका अस्तित्व है, जीवन का प्रारम्भ और उसका उद्देश भी यही है। सन्तानोत्पत्ति में भी यही शक्ति काम करती है।

फ्लोरेन्स—ईश्वर के लिये ! हेनरी, मुझे अपने पथ से विचलित न करो। मेरी आत्मा की अनिच्छा रहते हुए भी शरीर पर अपना अधिकार मत करो।

ट्रेमेन—तुम मुझसे प्रेम करती हो ?

फ्लोरेन्स—जी।

ट्रेमेन—सब वस्तुओं की तुलना में ?

फ्लोरेन्स—बेहद।

ट्रेमेन—क्या मुझसे विवाह करोगी, फ्लोरेन्स ?

[वह चुप रहती है।

मुझे क्यों सताती हो, फ्लोरेन्स ?

फ्लोरेन्स—मैं नहीं, तुम ही मुझे सता रहे हो ।

ट्रेमेन—तुम्हारे अपने ही शब्दों में, तुम मुझसे प्रेम करती हो ।

फ्लोरेन्स—निःसन्देह ! परन्तु बस इतना ही, इससे अधिक नहीं ।

ट्रेमेन—तुम्हें इससे आगे बढ़ना होगा । फ्लो, तुम्हें मेरी होकर रहना होगा, तुम ना नहीं कर सकती ।

फ्लोरेन्स—मुझे जाने दीजिये । मैं विवाह के लिये प्रस्तुत नहीं ।

ट्रेमेन—तुम टाल नहीं सकती । तुम्हें मुझसे विवाह करना ही पड़ेगा । (चुम्बन लेने को आगे बढ़ता है)

फ्लोरेन्स—नहीं ! (साहस करके) नहीं, मैं विवाह कदापि नहीं करूंगी, दिव्य वाणी में मेरा दृढ़ विश्वास है ।

ट्रेमेन—प्रियतमे, जिसे तुम दिव्य वाणी बतलाती हो वह तुम्हारी कल्पना की असार प्रतिध्वनि मात्र है । तुम्हारी आन्तरिक प्रेरणा का स्वरूप क्या है ? प्रमाण-चिन्ह क्या है ?

फ्लोरेन्स—मुझे पता नहीं ।

ट्रेमेन—नहीं ! तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं, उसका प्रमाण हो भी क्या सकता है !

[कुछ क्षण के लिये रुक जाते हैं ।

फ्लोरेन्स (अपने शब्दों पर भी किंचित अविश्वास के साथ)
—परन्तु प्रमाण है.....हेनरी.....तुम नहीं देखते.....
देखो.....मनुष्य ।

ट्रेमेन—यहाँ तो आदमी नज़र नहीं आते ।

फ्लोरेन्स (ध्यानावस्था में उठती है)—देखो, करोड़ों
मनुष्य मृत्यु से लड़ रहे हैं । मेरा भी स्थान उन्हीं में है...
हे प्रभो, अपने कर्तव्य का भार वहन करने के लिये मेरे
हाथों को पवित्र बनाओ, और मुझे शक्ति प्रदान करो,
ताकि मैं दत्तचित्त होकर अपने कर्तव्य के लिये प्रस्तुत हो
सकूँ; और मुझे साहस दो कि मैं वासनाओं पर विजय
पा सकूँ ।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स !

फ्लोरेन्स—.....हमारे प्रेम की भेंट स्वीकार करो
ताकि मैं तुम्हारी सेवा स्वतन्त्रता पूर्वक कर सकूँ ।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, ऐसा न कहो । अपने शब्द वापिस
ले लो ।

फ्लोरेन्स—हमारी मित्रता, हे प्रभो, बनाये रखना ।
हम दोनों को बल दो ।

ट्रेमेन—.....तथास्तु ।

[ट्रेमेन उसके सामने घुटने टेक देता है, और उसके हाथों

पर अपना सिर इस प्रकार डाल देता है जैसे भक्त अपने इष्टदेव
के सामने नव जाता है ।

[पर्दा गिरता है]

॥ पहिला अंक समाप्त ॥



दूसरा अंक

दृश्य तीसरा

दृश्य—हारले स्ट्रीट में नर्सिङ्ग-होम का एक कमरा—
अध्यक्षोचित साज सामान से सजा हुआ ।

स्त्रियों की सभा हो रही है, जिसमें लेडी हेरीटेज, श्रीमती काल्डेर, लेडी क्रिस्टावेल डीन, और कुमारी पेल्ट विद्यमान हैं । श्रीमती सिडनी हर्बर्ट सभानेत्री के पद पर हैं । नाम मात्र के लिये उनकी नौकरी में, पर वास्तव में उनकी संचालिका फ्लोरेन्स नाईटिंगेल सभा का संचालन कर रही है ।

एम्बले की उस घटना को हुए आज छै वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । फ्लोरेन्स इस समय ३४ वर्ष की हो गई है । उसका मुख-मंडल कुछ कठोर प्रतीत होने लग गया है । वह सुन्दर अवश्य है परन्तु उसके सौन्दर्य पर सन्यास की आभा पड़ चुकी है । एलिज़ाबेथ हर्बर्ट नटखट लड़की से एक सुन्दर प्रभावशालिनी युवती बन गई है ।

एलिज़ाबेथ (सकुचाते हुए)—समस्या यह है कि हाऊस सर्जन किसे नियुक्त किया जाय । (लेडी हेरीटेज से जो पास ही बैठी है) क्षमा कीजिये, क्या फरमाया आपने ?

[आपस में कानाफूसी करती हैं।

क्रिस्टाबेल—मिस नाईटिंगेल, क्या जिनमें से नियुक्त करना है उनकी सूची है ?

[फ्लोरेन्स उसके पास पहुंचती है।

पेल्ट (पास में बैठी हुई श्रीमती काल्डेर को सम्बोधन करके)—क्रीमिया से फिर दर्दनाक समाचार आ रहे हैं।

काल्डेर—मैंने भी टाइम्स में पढ़ा है। क्या यह वास्तव में बहुत दुःखदायी नहीं ? बेकसूर काँड़े-मकोड़ों की तरह मर रहे हैं। इसी तरह आल्मा की लड़ाई में भी।

पेल्ट (जोर देकर)—क्रीमिया में जाना भयंकर भूल थी, अगर कहीं लार्ड पामर्स्टन विदेशीय विभाग में होते तो, दुष्ट रूसी लड़ने का अच्छा सबक ले लेते।

एलिजाबेथ (बीच में रोक कर)—मिस नाईटिंगेल हाऊस सर्जन की नियुक्ति के बारे में कुछ कहेंगी।

सब (खुश होकर)—वाह, वाह, बिल्कुल ठीक, वगैरह २।

फ्लोरेन्स—मैं केवल इस बात पर जोर देना चाहती हूँ कि जो भी नियुक्त किया जावे वह हमारी दवाइयाँ अच्छी तरह दे सके।

हेरीटेज (विचलित होकर)—क्या रसायनिक की तरह उसे उनके मिश्रण बनाने पड़ेंगे।

फ्लोरेन्स—जी हाँ, सब ही करना पड़ेगा।

काल्डेर—पर, क्या हमें कोई भला आदमी यह सब काम करने के लिये मिल जावेगा ? क्योंकि अब पहिले जैसी बात नहीं, जब डॉक्टर घर घर दवाइयां लेकर फेरी किया करते थे । ये सब पुरानी बातें हैं । आजकल डॉक्टरों के पेशे में बहुत से युवक शामिल हैं और हमें कोई भला आदमी मिले तभी हमारा काम चल सकता है । क्या ऐसा भला आदमी जो दवाइयां तैय्यार भी कर सकें मिलना मुश्किल न होगा । मेरा मतलब यह..... ।

क्रिस्टाबेल—जी, मैं आपका तात्पर्य समझ गई ।

पेल्ट (सोच समझ कर) —ठीक, ठीक ।

फ्लोरेन्स (जोर देकर)—इस प्रकार वर्ष में लगभग हमें १५० पौंड की बचत, दवाइयों के बिल में, हो जावेगी । अगर गन्दे बर्तन साफ करने में मेरी बदनामी नहीं होती तो डॉक्टर का भी अपनी दवाइयां आप तैय्यार करने में क्या हरज होगा ।

हेरीटेज (सहानुभूति दिखा कर)—पर प्यारी मिस नाई-टिंगेल, तुम्हें इस प्रकार के गन्दे काम करने की जरूरत ही क्या है ? अगर सब काम अपने हाथों से ही करने हैं तो फिर नर्सों किस लिये हैं ?

फ्लोरेन्स (सरलता से)—मैं भी तो एक नर्स ही हूँ, लेडी हेरीटेज ?

हेरीटेज (कुछ तेज होकर)—क्यों नहीं, एक प्रकार से हो भी !

फ्लोरेन्स—नहीं, एक प्रकार से नहीं ! पर वास्तव में अन्य सब नर्सों से, जो मेरे नीचे काम कर रही हैं, हर एक काम मैं अच्छा कर लेती हूँ ।

हेरीटेज (रुष्ट होकर)—क्यों नहीं, मुझ से क्या छिपा है ?

एलिजाबेथ (चातुर्यपूर्ण हस्ताक्षेप करते हुए)—क्या हम हाऊस सर्जन की नियुक्ति का प्रश्न छोड़ कर विषयान्तर नहीं हो रहे ?

काल्डेर—मिस नाईटिंगेल के प्रस्ताव पर सलाह कारिणी समिति की क्या राय है ?

फ्लोरेन्स—वे इससे सहमत हैं । यह प्रस्ताव मेरी अपेक्षा उन्हीं की ओर से आया था ।

पेल्ट—अगर उनकी यह राय है तो बहुत ठीक.....

एलिजाबेथ (शीघ्रता से)—तो क्या हम भी अपनी राय दे दें ? किसी की ओर से कोई रुकावट—

[सब सोचने लगती हैं ।

तो मिस नाईटिंगेल यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हो गया । तुम इसे नियम पूर्वक डायरी में नोट कर लो ।

[फ्लोरेन्स और एलिजाबेथ आपस में सलाह करती हैं ।

पेल्ट (श्रीमती काल्डेर की तरफ मुखातिब होकर)—युद्ध

की ओर से जो उदासीनता और सुस्ती सरकार की ओर से दिखाई जा रही है वह बड़ी शर्म की बात है ।

काल्डेर—घटनास्थल से जो समाचार आ रहे हैं वे कितने भीषण हैं ।

पेल्ट—अगर मैं कमान्डर-इन-चीफ़ होती तो फिर आप देखतीं..... ।

एलिजाबेथ (बीच में बात काट कर)—हमें अब लेडी सुपरिन्टेन्डेन्ट की रिपोर्ट पर विचार करना है ।

सब—जी, अवश्य, निःसन्देह ।

एलिजाबेथ—बहुत कुछ उसके बारे में हम जानते ही हैं । विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि मिस नाईटिंगेल ने प्रयत्न करके हर एक रोगी का खर्चा प्रति दिन १ शिलिंग १० पेन्स से १ शिलिंग कर दिया है ।

हेरीटेज (बहुत २ प्रशंसा करते हुए)—बहुत अच्छा, वाह खूब ! इसका तात्पर्य यह है कि एक रोगी के पीछे प्रति दिन १० पेन्स की बचत होगी । मेरी राय में लेडी सुपरिन्टेन्डेन्ट के प्रति हमें अपनी कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिये ।

एलिजाबेथ—क्या आप सब इससे सहमत हैं ? (कोई विरोध नहीं) मैं इसे नोट किये लेती हूँ ।

फ्लोरेन्स (विरोध करती है)—कृतज्ञता-सूचक प्रस्ताव

पास करने के पूर्व यह आवश्यक है कि आप रिपोर्ट की खूब छान-बीन कर लें। संभव है कि रोगियों को भूखे रख कर मैंने बचत दिखाई हो।

काल्डेर—मिस नाईटिंगेल, हम आप के कार्यों से भली प्रकार परिचित हैं।

[एलिजाबेथ अपने काम में लगी रहती है।

काल्डेर (मि० पेल्ट से)—क्या आपको मालूम हो गया, विचारी लेडी स्विनफोर्ड का लड़का मर गया ?

पेल्ट—सारा गया ?

काल्डेर—घावों के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

पेल्ट—और युवक कप्तान फेयरमाइल भी मारा गया। दोनों लेनोक्स भी जखमी हो गये हैं। आल्मा में भयानक रक्तपात हुआ है। रोगियों की बड़ी खतरनाक हालत है। सरकार के लिये नर्सों भेजना अत्यावश्यक है।

काल्डेर—सरकार का कहना है कि रागलेन संचालन करने के सर्वथा अयोग्य है।

पेल्ट—सचमुच ? वह तो इस काम में निपुण होना चाहिये था। क्योंकि वह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का वाटरलू पर शरीर-रक्षक रहा है।

एलिजाबेथ—हमारे कार्य-क्रम का अन्तिम प्रस्ताव उसमें लिखा हुआ नहीं है। यह प्रस्ताव आपके सामने

रखा जाता है कि लेडी सुपरिन्टेन्डेन्ट को प्रति मास ५० पौंड दिये जाया करें जो वह संस्था के लिये खर्च कर सकती है, उसकी अनुमति अर्थ-समिति की ओर से मिल चुकी है, और—

फ्लोरेन्स—किन्तु इसके लिये मेरी अनुमति नहीं ली गई है और न ही मैं इसके लिये अनुमति दे सकती हूँ। यह व्यर्थ है, क्योंकि मेरी अपनी परिस्थिति ऐसी है कि समय पड़ने पर मैं अपने पास से भी खर्च कर सकती हूँ।

हेरीटेज—परन्तु तुम्हें अपना रुपया खर्च करने की ज़रूरत ही क्या पड़ी है ?

फ्लोरेन्स—हम दूसरों का धन भी क्यों खर्च करें ? साथ ही यह उसके लिये उपयुक्त अवसर भी नहीं है। अगर फण्ड में गुंजायिश है तो फिर वह क्रीमिया में घायलों की मदद में जाना चाहिये।

एलिजाबेथ (शान्त मुद्रा से)—सरकार के पाम उसके लिये प्रचुर धन है।

फ्लोरेन्स—जी, पर क्या वह इसे प्रयोग में लावेगी ?

एलिजाबेथ—क्या तुम पत्रों की राय से सहमत हो ?

फ्लोरेन्स—कदापि नहीं ! लेकिन.....।

पेल्ट (बीच में बात काट कर)—मेरा ऐसा विचार है। मिसेज़ हर्बर्ट, मैं इसे खूब जानती हूँ कि मि० हर्बर्ट के

द्वि-विभाग में होने से तुम इस कठिनाई में हो। परन्तु
आप अपना विचार तो यह है कि युद्ध का प्रबन्ध लज्जा-
जनक है।

एलिज़ाबेथ (अपने आपको संयमित रख कर)—मिस
पेल्ट, यह तो सवाल ही नहीं है। इस संस्था को युद्ध-पीड़ितों
की सहायता के लिये चन्दा देना चाहिये यह प्रश्न है।
मिस नाईटिंगेल का यह प्रस्ताव है।

फ्लोरेन्स—बिल्कुल नहीं ! कमेटी व्यर्थ में इस संस्था
के लिये खर्च करना चाहती है। अगर आप लोग खर्च
करना चाहती हैं तो घायल सिपाहियों के लिये क्यों न
किया जावे जहाँ उसकी बहुत अधिक जरूरत है।

पेल्ट—अच्छा, मैं यह प्रस्ताव रखती हूँ।

एलिज़ाबेथ (कोमल स्वर में)—मेरे विचार से यह इस
संस्था के नियमों के विरुद्ध है ! इसके लिये सूचना देने की
जरूरत है। प्रश्न तो यह है कि क्या दूसरा प्रस्ताव वापिस
ले लिया जावे। क्या इससे आप सब सहमत हैं ? (कोई
विरोध नहीं होता) आज का कार्य-क्रम समाप्त होता है।

[सब एक दूसरे से विदा लेती हैं। सिर्फ एलिज़ाबेथ व
फ्लोरेन्स ठहर जाती हैं।]

फ्लोरेन्स—क्या आप नोट-बुक पर हस्ताक्षर करेंगी ?

एलिज़ाबेथ (हस्ताक्षर करते हुए)—सिडनी का विरोध

तुमने क्यों कर किया ?

फ्लोरेन्स—प्यारी लिज, कुछ बुद्धिमानी से काम लो । यह तो किसी का भी खयाल नहीं कि क्रीमिया का कुप्रबन्ध सिडनी के कारण है ।

एलिजाबेथ—इसका उत्तरदायित्व उन्हीं पर है, क्योंकि वह इसी विभाग के मन्त्री हैं ।

फ्लोरेन्स—नहीं, वह तो ड्यूक ऑफ न्यूकैसल की वजह से है । वास्तव में वह युद्ध-विभाग के अन्तर्गत जो औपधि-विभाग है उसके कारण है ।

एलिजाबेथ—नुक्ताचीनी करना बड़ी सरल बात है ।

फ्लोरेन्स—मैं भूली हुई नहीं, मैं टीका-टिप्पणी करना नहीं चाहती । मैं तो क्रियात्मक रूप से आगे बढ़ना चाहती हूँ ।

एलिजाबेथ (सहानुभूति से)—प्यारी फ्लो, तुम क्या कर सकोगी ?

फ्लोरेन्स—सेवा सुश्रुषा ।

एलिजाबेथ—फौज में नर्सैज भेजने की आज्ञा नहीं है ।

फ्लोरेन्स—लेडी मेरिया फोरेस्टर ने मुझ से नर्सैज की एक टोली बनाने के लिये कहा है । उसके लिये हम दोनों खर्च करेंगी । सरकार पर हमारे खर्च का कोई भार न पड़ेगा ?

एलिजाबेथ—क्या तुम हमें छोड़ कर जाना चाहती हो ?
प्यारी फ्लोरेन्स, तुम्हारी माता ठीक कहती है कि तुम्हें
व्यवहारिक ज्ञान कम है ।

फ्लोरेन्स—अगर आप लोग मुझे न जाने देंगी तो मुझे
यहीं रहना होगा.....मैं तो यहाँ जकड़ी हुई हूँ । मैं इस
प्रस्ताव को आज सुबह रखना चाहती थी पर मेरी इच्छा
पहिले तुम्हारी सलाह लेने की थी ।

एलिजाबेथ—निःसन्देह प्यारी फ्लोरेन्स, यह तुम्हारे
लिये एक प्रशंसात्मक कार्य होगा, यह मैं जानती हूँ । परन्तु
दो चार नर्सों से स्कुटारी में क्या होगा । फिर तुम्हारे माता
पिता ? क्या वे तुम्हें जाने देंगे ?

फ्लोरेन्स—मेरे चाचा साम उनसे फिर बातचीत करने
गये हुए हैं ।.....मेरा ख्याल है कि उन्हें मैं इसमें
हस्ताक्षर न करने दूँगी ।

एलिजाबेथ—प्यारी, अगर तुम पहिले ही से इस
निश्चय पर पहुँच चुकी हो तो वाद-विवाद व्यर्थ है ।

फ्लोरेन्स—मि० हर्वर्ट इस बारे में क्या विचार रखते
हैं यह मैं जानना चाहती थी ।

एलिजाबेथ—सिडनी ? सिडनी से तुम भली भाँति
परिचित हो ? वह तुम्हारे काम की कितनी प्रशंसा किया
करते हैं यह भी तुम से छिपा हुआ नहीं है । वह तुम्हें मना

नहीं करेंगे। मैं भी अपनी अनुमति दे देती अगर तुम्हारी योजना इतनी अस्पष्ट न होती।

फ्लोरेन्स—किसी भी काम का आरम्भ कुछ अस्पष्ट ही होता है।

एलिजाबेथ—मुझे तो कुछ भय सा लगता है। क्यों यह मैं नहीं जानती। यह एक अच्छा विचार है। इतना अवश्य कह सकती हूँ कि यह तुम्हारे योग्य है। इससे आगे कुछ नहीं.....मुझे कुछ भय सा प्रतीत होता है..... अगर मेरा तुम से इतना प्रेम न होता और तुम पर इतना विश्वास न होता तो मैं सिडनी को इससे कुछ वास्ता न रखने देती।

फ्लोरेन्स—पर ऐसा क्यों ?

एलिजाबेथ—अगर यह मैं जानती होती कि क्या करना चाहिये।

फ्लोरेन्स—क्या तुम इतना कर सकोगी कि अपने व्यक्तिगत विचारों को...मेरे रास्ते में न आने दो.....।

एलिजाबेथ—जी, मैं प्रयत्न करूँगी। तुम सन्यासिनी हो पर मैं नहीं। मैं स्त्री का हृदय रखती हूँ। अगर तुम्हारे जाने से सिडनी को किसी प्रकार का धक्का लगता है तो फिर दूसरे आदमी, विचार व आदर्श, सब भाड़ में जावें मुझे क्या ?

फ्लोरेन्स—हाँ मुझे इतना सन्तोष है कि मेरा क्रीमिया जाना सिडनी के लिये हानिप्रद न होगा ।

एलिजाबेथ (उसका समाधान नहीं होता)—नहीं.....न जाने मुझे यह सुन कर क्यों घबराहट सी होती है ।

[दरवाजा खुलता है व श्रीमती नाईटिंगेल अन्दर आती हैं ।

श्री० ना० (अभिवादन में समय नष्ट न करके)—फ्लोरेन्स साम चाचा क्या बकता फिरता है । मेरी प्यारी यह असम्भव है ।

फ्लोरेन्स—यह बिलकुल असम्भव नहीं है ।

श्री० ना०—प्यारी बेटा, क्यों नहीं यह तो बिलकुल, बिलकुल ही असम्भव में । हे ईश्वर ! भला यह तू क्या सोच रही है, क्या तुझे हम युद्ध में निपट अकेली भेज दें ? वहाँ तो सिपाहियों के डेरे होंगे, न घर न बार । मिसेज़ हर्वर्ट, तुम तो यह जानती हो । ऐसा मत होने देना ।

एलिजाबेथ—जी,.....परन्तु मैं हस्ताक्षेप नहीं करना चाहती ।

फ्लोरेन्स—अगर वे समर में सम्मुख लोहा ले सकते हैं तो उनकी सेवा-सुश्रुसा करना भी उतना ही आवश्यक है ।

श्री० ना०—अच्छा, मैं तो इतना जानती हूँ कि अगर तेरे जाने की इतनी ही प्रबल इच्छा है तब हम रोकने

वाले कौन हो सकते हैं ? परन्तु इतना मैं कह देती हूँ कि तेरे जाने में हमारी सम्मति कतई नहीं है ।

फ्लोरेन्स—माँ, जिस काम से रोगी और घायलों के दुःख दूर होते हैं उसमें योग देने में आपकी अनिच्छा ?

श्री० ना०—हे ईश्वर ! जान पड़ता है पत्रों में निकले हुए समाचारों से तू बहक गई है ।

फ्लोरेन्स—युद्ध में जखमी होना प्राकृतिक है । पत्रों का इससे क्या सम्बन्ध ?

श्री० ना०—पर तेरे हस्ताक्षेप करने का तात्पर्य ? तू क्या कोई अवतार है ? प्यारी फ्लो ! यह तेरे योग्य काम नहीं । मुझे यह पता नहीं लगता कि तुझे यह सनक कहां से सवार हो गई है । हमें तो यह प्रतीत होता है कि एक बतख के जोड़े ने जंगली हंस को जनम दिया हो ।

फ्लोरेन्स (व्यङ्ग असह्य हो जाता है)—माँ, राजहंसां ने तो नहीं, यह तुम निश्चय से कह सकती हो । (इसका प्रभाव कम करने के लिये प्यार से हाथ दबाती है) ।

एलिजाबेथ (दुखित होकर)—फ्लो...प्यारी ।

श्री० ना०—नहीं, नहीं, उसका यह मतलब नहीं है । वह उसने विनोद में कहा था ।

फ्लोरेन्स—मैं यह अवश्य चाहती हूँ कि और लोग भी मेरे दृष्टिकोण से कभी २ चीजों को देखें ।

श्री० ना० (पुष्टि में)—प्यारी फ्लो ! यह तो तू मानेगी ना कि तेरे पिता जी ने व मैंने तेरे रास्ते में कोई रण्डे नहीं अटकाये । हमने तुम्हे इस संस्था में आने की अनुमति दे दी । और तेरे पिता जी ने तेरा महीना भी बांध दिया, जिस प्रकार बाप एक बेटे का बाँध देता है । तुझे यह उचित नहीं कि इस प्रकार इधर उधर की नर्सेज को अपने साथ लेकर सुदूर एशिया माइनर में जाने की जिद करे । वहाँ जाने का परिणाम यह होगा कि हमें किसी दिन यह समाचार मिलेगा कि फ्लो को भगाकर किसी तुर्की सुलतान ने अपने हरम में दाखिल कर लिया । यह आङ्गल युवतियों को नहीं सुहाता ।

फ्लोरेन्स—फ्राँसिसी स्त्रियाँ तो यह काम करती हैं ना ।

श्री० ना०—क्या फ्राँसिसी ?

फ्लोरेन्स—हाँ, चैरिटी आश्रम की नर्सेज ।

श्री० ना०—पर उनकी और तेरी क्या समानता । वे तो सन्यासिनियाँ हैं ।

फ्लोरेन्स—तो जिस प्रकार एक अस्पताल की नर्स भगाई जा सकती है उसी प्रकार एक सन्यासिनी भी भगाई जा सकती है ।

श्री० ना०—प्यारी, मैं यह नहीं चाहती कि इस प्रकार तू सन्यासिनियों के बारे में कहे । उनकी बात ही दूसरी

है। मेरे में इतनी ताकत तो नहीं है—पर है यह ऐसी ही बात, और तू कितनी.....नादान है फ्लो।

[एक नर्स दरवाजा खटखटाती है और अन्दर दाखिल होती है।

फ्लोरेन्स—कहा ?

नर्स—एक सज्जन आपसे मिलना चाहते हैं—मि० ट्रेमेन।

फ्लोरेन्स—थोड़ी देर में मैं घंटी बजा दूँगी। उन्हें अन्दर लिवा लाना। (नर्स चली जाती है)

श्री० ना०—मि० ट्रेमेन तुझसे मिलने आये हैं यह बड़ी अच्छी बात है। तुझे अब देर तक न रोकूँगी। मेरी प्यारी, तेरे उस व्यवहार पर भी वह तुझ से मिलने आये हैं यह कितने सौभाग्य की बात है।

फ्लोरेन्स—ट्रेमेन और मुझ में मित्रता हो गई है, माँ।

श्री० ना०—तुझमें और ट्रेमेन में मित्रता क्यों न हो। अगर.....(कुछ देर ठहर कर) मुझ में और तेरे पिता में भी तो घनिष्ठ मित्रता है। यह तो बड़ी अच्छी बात है, पर मैं अभी कुछ नहीं कहना चाहती। (एलिज़ाबेथ से) क्या तुम मेरे साथ डाकखाने तक चलोगी ? मुझे कुछ टिकट लेने हैं।

फ्लोरेन्स—लिज, तुम वापिस आओगी न, जरूर

आना । हमें कुछ काम भी है और फिर मुझ तुम स सलाह भी लेना है ।

एलिजाबेथ—हां, मैं लौट कर आती हूँ । प्यारी, तुम्हें अपनी मां का कहना मानना चाहिये । (वे दोनों जाती हैं)

[फ्लोरेन्स मेज पर झुक जाती है और दोनों हाथों से अपने नेत्र ढक लेती है ।

फ्लोरेन्स (ऊँचे स्वर में)—ओफ़ ! मेरा अब क्या कर्तव्य है ?

[जरा ठहर कर आँखों पर से हाथ हटा लेती है । घन्टी बजती है । नर्स अन्दर आती है ।

मि० ट्रेमेन को अन्दर लिवा लाओ ।

[नर्स चली जाती है और थोड़ी देर बाद ट्रेमेन को अन्दर पहुँचा जाती है । इन छै वर्षों का कोई भी प्रभाव उस पर गोचर नहीं होता ।

हेनरी अन्दर आओ, मुझे तुम्हें देख कर बड़ा आनन्द हुआ ।

ट्रेमेन—कोई एक वर्ष से मैं यात्रा में ही हूँ ।

फ्लोरेन्स—किस जगह की ?

ट्रेमेन—रेगिस्तान की ।

फ्लोरेन्स—मज्जेदार ! परन्तु मेरा खयाल है, कुछ अकेलापन अनुभव किया होगा ।

ट्रेमेन—जब तुम ही मेरी नहीं बन सकती तो मेरे लिये सब स्थान ऐसे ही हैं।

फ्लोरेन्स (उल्लाहने के स्वर में)—हेनरी, तुम तो स्कूल के छोकरो के सदृश प्रेम में पागल हो रहे हो। तुम जानते हो इस वक़्त तुम्हारी उमर क्या होगी, ४० से कम नहीं। मेरे मित्र, मेरी ही उमर इस समय ३४ वर्ष की है।

ट्रेमेन—क्या तुम सुखी हो ?

फ्लोरेन्स—मैं काम में संलग्न रहती हूँ यह क्या कम अच्छा है।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, फव्वारे पर हमारा आपस में जो वार्तालाप उस रात को हुआ था उसके बाद विवाह के बारे में एक शब्द भी मैंने नहीं कहा। तुमने मुझसे मित्र बन के रहने के लिये कहा था, और गत छै वर्षों से मैं उसका प्रयत्न भी करता आ रहा हूँ।

फ्लोरेन्स—तुम आश्चर्यजनक प्राणी हो, हेनरी ! तुम्हारे पत्रों ने मेरी बड़ी सहायता की है। तुम्हारे दर्शनों से मुझ में नई स्फूर्ति आती रही है। हेनरी, क्या तुम इन बातों को नहीं छोड़ोगे और अपनी मित्रता को नष्ट करोगे ?

ट्रेमेन—तुम्हारे उद्देश्य की पूर्ति में मुझे प्रतीक्षा करते हुए छै वर्ष हो गये, परन्तु अभी तक उसका स्वरूप देखने को न मिल सका। क्या यही काम है जिसे तुम अपना

जीवनोद्देश्य समझे बैठी हो ।

फ्लोरेन्स—हेनरी, विनोद न करो । यह अभी उसका आरम्भ ही है । लन्दन की सड़कों पर घूमने, दूसरी स्त्रियों में जाकर गप्पबाजी करने या बुनने बुनाने के काम में अपना समय काटने से क्या इस वातावरण में काम करना बुरा है ?

ट्रेमेन—मैं इसे बुरा कब कहता हूँ, परन्तु वह उद्देश्य तक नहीं पहुँचाता ।

फ्लोरेन्स—मेरा भी कोई निश्चित विश्वास नहीं । मैं क्रीमिया जाने के लिये प्रबन्ध कर रही हूँ ।

ट्रेमेन—कैसे ?

फ्लोरेन्स—नर्स बन कर ।

ट्रेमेन—.....परन्तु फ्लो, वहाँ काम करने के लिये नर्सैज कहाँ है ?

फ्लोरेन्स—एक तो मैं होऊँगी, और जहाँ तक मेरा ख्याल है दो चार साथ में ले जाने के लिये रुपये का प्रबन्ध हो जावेगा ।

ट्रेमेन (भौंचक्का सा)—क्या निजी तौर पर ?

फ्लोरेन्स—क्यों नहीं ।

ट्रेमेन—क्यों नहीं ? क्या यह तुम्हारा पागलपन नहीं है ? वहाँ तुम्हारे हक्क में कोई बात नहीं होगी । क्या तुम

सोचती हो कि फौजी अफसर हम लोगों को अपने अस्पतालों में जगह देने को तैयार हो जावेंगे ? बिल्कुल नहीं । युद्ध-विभाग के अधिकार में यह सब काम है । तुम्हारा यह विचार मूर्खतापूर्ण है ।

फ्लोरेन्स—हम राजदूत के नाम परिचय-पत्र ले जावेंगी ।

ट्रेमेन—क्या कुस्तुनतुनिया में ? समर वहाँ तो नहीं छिड़ा हुआ ।

फ्लोरेन्स—स्कुटारी, जहाँ पर अस्पताल हैं, कुस्तुन-तुनिया के पास ही स्थित है, बल्कि उसी का एक हिस्सा है ।

ट्रेमेन—मेरी प्यारी, वह फौजी अधिकार में है । राजदूत के हाथ में इसके लिये कोई शक्ति नहीं है । मान लो थोड़ी देर को कि उसके हाथ में ऐसा करने की शक्ति है, पर क्या वह यह करेगा ?

फ्लोरेन्स—सरकार की ओर से उसे विशेष अधिकार प्राप्त हैं ।

ट्रेमेन—वह फौजी आज्ञा का विरोध नहीं कर सकता । क्या वह एक अज्ञात महिला के लिये ऐसा करेगा । थोड़ी देर के लिये मान लो कि वह ऐसा करने को तैयार हो भी जावे । मैं तुम्हें ठीक २ बतलाऊँ कि वह तुम्हारे साथ किस प्रकार बर्तेगा । वह अपनी गृहिणी से तुम्हारे लिये चाय व

एक दो भोजनों का प्रबन्ध करवा देगा । जब तक तुम चुप रहोगी सब भले प्रतीत होंगे । जहाँ तुमने अपना काम आरम्भ करने की सोची, वहीं सब ठंडे हो जावेंगे । तुम्हारे रास्ते में विघ्न पड़ने आरम्भ होंगे । जिधर भी तुम सहायता के लिये पग रखोगी वहीं तुम्हें अधिकारी-वर्ग की सीधी दीवार खड़ी दिखाई पड़ेगी । फ्लोरेन्स यह विचार मन में मत लाओ । तुम दूसरों के लिये बोझ बन जाओगी और वे तुम्हें पगली समझेंगे । मेरी प्यारी, मेरा कहा मानो । तुम्हें स्मरण होगा कि मैंने तीन वर्ष तक राजनैतिक विभाग में काम किया है । सरकार बाहर वालों को प्रोत्साहन नहीं देती । विशेषतः दूसरे जब काम को भली प्रकार समझते हैं, और कर भी सकते हैं ।

फ्लोरेन्स (हड़ता से)—मुझे इसकी रत्ती भर भी चिंता नहीं । दुःखी और पीड़ित जनों की सेवा करने का मुझे जो आदेश मिला है, उस पर मैं अटल हूँ ।

ट्रेमेन—संसार में ऐसे भी मनुष्य हैं जिनका यह विश्वास है कि पृथ्वी चपटी है और वे अपने विचारों पर दृढ़ हैं । पृथ्वी के चपटी होने के विरोध में यद्यपि असंख्य प्रमाण भी मौजूद हैं ।

फ्लोरेन्स—हेनरी, क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ?

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, जरा सोचो ! अपना यौवन तुमने

व्यर्थ में गवाँ दिया । एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में तुम भटकती फिरी हो । तुम्हारे हाथ न जाने इससे क्या आया है ?

फ्लोरेन्स—अनुभव, ज्ञान-वृद्धि ।

ट्रेमेन—परन्तु जितनी योग्यता से तुम इस काम को कर रही हो उतनी योग्यता से करने वाली और भी सैकड़ों स्त्रियाँ विद्यमान हैं ।

फ्लोरेन्स—मेरे कार्य की इतिश्री यहीं पर नहीं हो जाती, यह तो उसकी प्रथम सीढ़ी है ।

ट्रेमेन—अच्छा यही सही, पर क्या मेरी सहायता स्वीकार करोगी ?

फ्लोरेन्स—किस रूप में ?

ट्रेमेन—सुनो ! उचित स्थान खोज लो । मैं तुम्हारे लिये अस्पताल स्थापित कर दूँगा । जिस प्रकार अस्पताल तुम्हें जर्मनी में देखने को मिला था, उसी प्रकार का यहाँ पर बनवा लो । तुम्हारे उद्देश्य की उससे पूर्ति हो सकेगी । उसमें हम दोनों काम करेंगे । पूरी लगन और जी-जान से मैं उसमें सहयोग दूँगा । तुम उसकी अध्यक्षता रहोगी । हम दोनों रोगी और पीड़ितों की सेवा में अपना जीवन लगा देंगे ।

फ्लोरेन्स—परन्तु बचे हुए समय में ये काम नहीं

हो सकते ।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स मुझे तो यह प्रतीत होता है कि तुम्हारे हृदय में प्रेम के लिये कोई स्थान ही नहीं रह गया ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें ऐसा कहना क्या शोभा देता है ? तुम नहीं जानते कि तुम मेरे साथ कितना अन्याय कर रहे हो ।

ट्रेमेन—तुम भी इसी प्रकार की बातों से जो कुछ मैं कहता हूँ उसे टाल देती हो ।

फ्लोरेन्स—हेनरी, क्या तुम समझते हो कि मुझे इन्कार करने में कोई खुशी है ? क्या मैं कष्ट नहीं उठा रही ? तुम इतना भी समझ नहीं पाये । पुरुषों को समझा कर भी क्या लाभ ?

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, क्षमा करो । तुम देवी हो ऐसा मेरा विश्वास रहा है ।

फ्लोरेन्स (तीव्र स्वर में)—नहीं, एक सताई हुई वीतरागिनी । ऐसे ही संसार में पूजनीय हैं । यही विचार मेरे प्रति तुम्हारे भी हैं ।

ट्रेमेन—सताई हुई कैसे ?

फ्लोरेन्स—कैसे नहीं ? वासनाओं से पूर्ण हृदय रख कर भी उसकी तृप्ति न कर सकना यातनामय नहीं तो और क्या है ? परन्तु हेनरी यह असम्भव है । तुम्हें एक बात निश्चित करनी होगी । अगर विवाहित आनन्द तुम

चाहते हो तो फिर उद्देश्य को एक ओर रखना होगा ।
परन्तु यह कितना मुश्किल है । हे प्रभो !...मैं न जाने क्या
कर रही हूँ.....क्या मुझे ऐसा कहना चाहिये ?

ट्रेमेन—प्रिये, मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि तुम्हें
क्या उत्तर दूँ, मैं तुम पर अधिक दबाव नहीं डालना
चाहता—परन्तु..... ।

फ्लोरेन्स—हेनरी, मैं तुम्हें ऐसा करने भी न दूँगी ।

ट्रेमेन—क्या तुम्हें अपने ऊपर पूर्ण विश्वास है ?

फ्लोरेन्स—अवश्य । अगर ऐसा न होता तो फिर मैं
इतना वाद-विवाद भी न कर पाती ।

ट्रेमेन—.....पर मेरे कहने को ऐसे ही न टाल दो ।
उस पर कुछ विचार करो । तुम्हारे माता-पिता सुखी होंगे,
तुम भी सुख से रहोगी और मैं भी ।

फ्लोरेन्स—क्रीमिया की लड़ाई में घायल व्यक्तियों की
क्या दशा होगी ? क्या तुम समझते हो कि वे भी सुखी
हो जावेंगे ?

ट्रेमेन (घबरा कर)—सरकार उनका प्रबन्ध करेगी । यह
काम उसका है न कि तुम्हारा ।

फ्लोरेन्स—सब कोई यही कहता है, मगर घायल
देख-रेख और सहायता के अभाव में मर रहे हैं ।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, तुम सरीखी एक औरत से युद्ध की

मारकाट में क्या भला हो सकेगा ? लड़ाई के साथ तो मारकाट लगी हुई ही है । क्या सिपाहियों ने स्वयम् तुम्हारे सामने ऐसा नहीं कहा । तुम्हारे लिये इतने बड़े काम को हाथ में लेना ऐसा है जैसे चुल्लु भर २ कर समुद्र को उलीचना ।

फ्लोरेन्स—विश्वास क्या नहीं कर दिखाता । मेरे लिये आवाज़ पड़ चुकी है । मेरा जीवन-कार्य मेरे सामने विद्यमान है ।

ट्रेमेन (निराश होकर)—अगर तुम्हें दीवार से ही सिर फोड़ना है तो..... । फ्लो, तुम किस प्रकार आरम्भ करोगी ?

फ्लोरेन्स—ईश्वर की कृपा से मुझे पथ-प्रदर्शक भी मिल जावेंगे ।

[दरवाजे पर टकटक का शब्द होता है और नर्स भीतर देखती है ।

नर्स—बीच में आकर बाधा डालने के लिये क्षमा चाहती हूँ । मि० हर्वर्ट अन्य दो व्यक्तियों के साथ उपस्थित हैं । कोई आवश्यक कार्य बतलाते हैं ।

फ्लोरेन्स (जैसे स्वर्ग से पृथ्वी पर आ जाती है)—... हेनरी, उनसे बात करना जरूरी है । उनकी पत्नी हाँ कमेटी की सदस्या हैं, वह स्वयम् भी इस काम में दिलचस्पी

रखते हैं । कदाचित एक नये हाऊस सर्जन के साथ होंगे ।.....उन्हें भीतर लिवा लाओ ।

[नर्स चली जाती है ।

ट्रेमेन—अच्छा, तो मैं जाता हूँ । मेरी अस्पताल की स्कीम पर क्या तुम विचार करोगी ?

फ्लोरेन्स—हेनरी, मुझे खेद है मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ ।

ट्रेमेन—अच्छा, नमस्कार !.....कदाचित मेरी तुम्हारी भेंट अब एक.....काल विशेष तक न हो सकेगी ।

फ्लोरेन्स—तो क्या तुम फिर कहीं जा रहे हो ?

ट्रेमेन—हाँ ।

फ्लोरेन्स—सैर के लिये ?

ट्रेमेन—ऐसा ही समझो ।

फ्लोरेन्स (भयभीत होती है)—.....ऐसा क्यों हेनरी ?
क्या तुम..... ।

[उसके वाक्य समाप्त करने से पहिले ही वे दरवाजा खोल कर अन्दर आ जाते हैं ।

मिस्टर हर्बर्ट.....लॉर्ड पामस्टन..... ।

[अभिवादन के बीच में ही हेनरी मौक़ा पाकर चला जाता है ।

[हर्बर्ट और पामस्टन से हम परिचित हैं । छै वर्ष व्यतीत

हो गये हैं, पर लॉर्ड पामस्टन के स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव गोचर नहीं होता। वह सत्तर वर्ष के प्रतीत भी नहीं होते। हर्बर्ट महोदय दुबले पतले व कुछ घबराये से प्रतीत होते हैं। उनका साथी एक अघेड़ उम्र का व्यक्ति है जो एक उच्च कर्मचारी प्रतीत होता है।

पामस्टन—मुझे यह जान कर बड़ा हर्ष होता है कि अपने उद्देश्य की पूर्ति में तुम प्रयत्नशील हो।

फ्लोरेन्स—जी हाँ, हमें यहाँ पर बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। क्यों मि० हर्बर्ट ठीक है न यह ?

हर्बर्ट—एलिजाबेथ आपकी प्रशंसा करते २ थकती ही नहीं।

फ्लोरेन्स (खुशी से)—यह उन्हीं के कारण है कि हम इतना काम चला रही हैं। कमेटी की बैठकों व अनावश्यक मनुष्यों की पूछताछ से हमें ईश्वर ही बचाए।

पामस्टन (उत्सुकता से)—परन्तु तुम में और कमेटी में मत-भेद तो नहीं रहता ?

फ्लोरेन्स—जी नहीं, मैं ही उसका प्रबन्ध करती हूँ। सभा में आँकड़े देना, कुछ अपने अनुभव बताना और कुछ व्यवहारिक ज्ञान से सब मामला निपट जाता है।

पामस्टन—तुम्हारे कहने के ढंग से तो ऐसा मालूम होता है मानो तुम इसमें विशेषज्ञ हो। (हर्बर्ट से)

देखो, किस प्रकार अपना काम निकालना चाहिये, यह वह जानती है ।

फ्लोरेन्स—क्या आप निरीक्षण के लिये आये हैं ?

हर्बर्ट—नहीं, हम तो आपसे कुछ परामर्श करने आये हैं ।

पामस्टन—युद्ध-स्थल में जिस प्रकार की घटनाएँ घट रही हैं उनका तो तुम परिचय प्राप्त कर रही होगी ।

फ्लोरेन्स—पत्रों से ? जी ।

पामस्टन—टाइम्स में जो लेख निकल रहे हैं वे तो तुमने पढ़े होंगे ?

फ्लोरेन्स—पढ़े हैं । मेरा ख्याल तो यह है कि उनमें अतिशयोक्ति अधिक है ।

पामस्टन—परन्तु मेरा ऐसा ख्याल नहीं क्योंकि वे भी किसी आधार पर लिखे गये हैं ।

फ्लोरेन्स—हम लोग वहाँ नर्सों नही भेज रहे हैं ? फ्राँस की ओर से तो वहाँ प्रबन्ध है । फ्राँसिसी नर्सों वहाँ पहुँच चुकी हैं ।

हर्बर्ट—बात तो ठीक है ।

फ्लोरेन्स—मेरी व लेडी मेरिया फोरेस्टर की यह सलाह है कि अगर सरकार नहीं तो हम ही कुछ करें । लॉर्ड पामस्टन आपको हमारा कार्य-क्रम तो विदित ही होगा । लेडी फोरेस्टर कह रही थी कि आप राजदूत को

पत्र लिखने वाले हैं ।

पामस्टन—मैंने उनसे कहा था कि मैं लॉर्ड क्लेरेन्डन से लिखवा दूँगा । परन्तु उसकी कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती । लेडी मेरिया की जो स्कीम है वह कार्य-रूप में आ भी सकती है या नहीं इसमें मुझे सन्देह है ।

फ्लोरेन्स—हम लोग अभी तक कुछ निश्चित ही नहीं कर पाये और वहाँ घायल व्यक्ति मौत के मुख में जा रहे हैं ।

हर्बर्ट—धीरज रखो ।

फ्लोरेन्स—.....क्या सरकार इसके लिये कुछ नहीं करेगी ?

हर्बर्ट—क्यों नहीं.....यह जो महाशय डॉक्टर एन्ड्र्यू स्मिथ मेरे साथ हैं यह फौजी औषध-विभाग के अध्यक्ष हैं ।

फ्लोरेन्स—जी । आप मजे में तो हैं ?

स्मिथ—और आप ?

हर्बर्ट—सरकार की यह इच्छा है कि यह काम सर्वसाधारण की इच्छा और दया पर न छोड़ा जाय । यद्यपि सेना-विभाग के लिये यह नई बात होगी तब भी हम वहाँ के कुछ अस्पतालों के लिये नर्सों का एक दल भेजना चाहते हैं ।

फ्लोरेन्स—सरकार का यह निश्चय उचित है ।

हर्बर्ट—इतना करने के लिये भी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि हर एक चीज़ नये सिरे से जुटानी पड़ेगी । हम आपसे सहायता चाहते हैं । डॉक्टर स्मिथ से आपको विस्तृत हाल विदित हो सकेगा ।

फ्लोरेन्स—कहिये, क्या आप चाहते हैं कि मैं आपके लिये नर्सिज़ का प्रबन्ध कर दूँ ?

पामस्टर्न—नहीं, यह तो तुमको मानना पड़ेगा कि मन्त्री-मण्डल में इस विषय का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति कम हैं । परन्तु नर्सिज़ का प्रबन्ध करने का दावा तो हम कर सकते हैं । अब हम इस तलाश में हैं कि हमें एक ऐसा योग्य नेता मिल जावे जो इस काम को सम्हाल सके । यह बगैर तुम्हारी सहायता के होना कठिन है ।

फ्लोरेन्स—.....क्या ?

हर्बर्ट—हम युद्ध-स्थल में नर्सिज़ के साथ भेजने के लिये एक ऐसी महिला चाहते हैं, जो सच्चरित्र, योग्य और अनुभवी हो । वह वास्तव में उनके साथ जावे, और वहाँ औषध-विभाग को नये सिरे से संगठित करे ।

फ्लोरेन्स—.....मुझे ?

पामस्टर्न—हां तुम्हें ! तुम्हारी क्या सलाह है ?

स्मिथ (उत्तर देने के पूर्व ही कहना शुरू करता है)—इसे

आप एक साधारण काम न समझें । जिसे करने में औषध-विभाग और युद्ध-विभाग की समस्त शक्तियां असफल रहीं, उसे एक स्त्री कर लेगी, इसमें मुझे सन्देह है ।

फ्लोरेन्स—अगर वह इतना सा दिल लेकर जावेगी तो कुछ भी नहीं कर सकती ।

हर्बर्ट (अपने मातहत का पत्र लेता है)—डॉ० स्मिथ का इन कठिनाइयों को सामने रखना उचित ही है ।

फ्लोरेन्स—परन्तु झूट बोलना ठीक नहीं ।

पामस्टर्न—बिल्कुल शलत.....स्थिति इस प्रकार की है । छिपाने की आवश्यकता भी क्या है । युद्ध का प्रबन्ध ठीक नहीं हुआ । कुछ कारणों से इंग्लैंड आरम्भ में हमेशा ही गड़बड़ कर बैठता है । इसका उत्तर-दायित्व किन पर है यह जानने की अब ज़रूरत नहीं । हमें तो अब प्रबन्ध ठीक करना है । कई समस्याएँ हमारे सामने हैं; परन्तु मैंने और हर्बर्ट ने यह निश्चय किया है कि युद्ध-स्थल में जो भयंकर बरबादी हो रही है उसे रोका जावे । उसके लिये घायलों की सेवा के अतिरिक्त और भी कई बातें अत्यन्त आवश्यक हैं । इसके लिये औषध और खाद्य विभागों में एक अनुभवी मनुष्य रखने की ज़रूरत है । हर्बर्ट यह काम तुम्हारे सुपुर्द करना चाहते हैं । मैं उनसे सहमत हूँ । हम जो कुछ मन्त्री-मंडल के सामने रखेंगे वह

उसे मान्य होगा । (धुमा फिरा कर) क्या तुम इसे कर सकोगी ?

फ्लोरेन्स—क्या आप दोनों का यही निश्चय है कि मैं इस काम को अपने हाथ में लूँ—जो कुछ मैं उचित समझूँ करूँ, और जिस चीज की मुझे आवश्यकता होगी वह मुझे मिल सकेगी ? क्या नर्सेज़ मेरे हाथ में रहेंगी ?

स्मिथ (व्यग्र होकर)—मेरा तो यह ख्याल है कि केवल परामर्ष देना ही इनका काम होगा । वास्तव में प्रबन्ध बड़े २ डॉक्टरों ।

पामस्टन—(घबरा कर) डॉ० स्मिथ आप व्यर्थ में समय खराब कर रहे हैं ।

फ्लोरेन्स—यह अत्यावश्यक है । कौन उसका अध्यक्ष होगा ? मेरा क्या स्थान होगा ?

हर्बर्ट—आपका वास्ता राज्य-सचिव से होगा और आप उन्हीं से परामर्ष भी करेंगी । परन्तु वास्तव में लॉर्ड रेगलेन कमान्डर-इन-चीफ़ हैं, और आपको उनके नियुक्त किये हुए अफसरों के सहयोग में काम करना पड़ेगा ।

फ्लोरेन्स—यह तो ठीक है पर नर्सेज़ ?

पामस्टन—पूर्णतः तुम्हारे हाथ में । तो फिर तुम सहमत हो ?

[बिना खटखटाये दरवाजा खुलता है, श्रीमती नाईटिंगेल

और एलिज़ाबेथ फिर दिखलाई देती हैं ।

श्री० ना०—मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ—लॉर्ड पामस्टन, मैं धन्य हूँ कि आपके व मि० हर्बर्ट के दर्शन हो गये ।

हर्बर्ट (डॉक्टर स्मिथ को परिचय देते हैं)—डॉ० स्मिथ, आप मिसेज़ नाईटिंगेल.....और मेरी पत्नी से तो आप परिचित ही हैं ।

फ्लोरेन्स—लॉर्ड पामस्टन, मेरी माता से भी आप पूछ लीजिये ।

श्री० ना० (अवज्ञा से)—फ्लो किस बारे में ! क्या कोई पार्टी की बात-चीत है ?

फ्लोरेन्स (दृढ़ता से)—इसे भी तो एक पार्टी ही कहा जा सकता है ।

श्री० ना० (परेशान होकर)—प्यारी, तू बड़ी आज्ञा-कारिणी है । परन्तु इतनी छोटी २ बातों के लिये जैसा तू ठीक समझे कर सकती है, अब कोई तू निरी बच्ची तो नहीं है ।

पामस्टन—हर्बर्ट, तुम समझाओ ।

हर्बर्ट—मिसेज़ नाईटिंगेल, सरकार फ्लोरेन्स को अस्पतालों के प्रबन्ध के लिये क्रीमिया भेजना चाहती है ।

श्री० ना०—युद्ध-स्थल में ! फ्लोरेन्स को ! सरकार !

पामस्टर्न—जी, मन्त्री-मंडल ! हम यहां पर उसी की
रफ से आये हुए हैं ।

श्री० ना०—परन्तु वह.....इसे कर भी सकेगी ?

हर्वर्ट—संसार में इनके अतिरिक्त और कौन है जो
इस काम को कर सकता है ?

एलिजाबेथ—(गुन-गुनाते हुए) संसार में इनके अति-
रिक्त..... ।

[कुछ देर बाद ।

श्री० ना० (अपनी पुत्री से)—वास्तव में प्यारी, तेरा
कहना सत्य निकला । मेरा तात्पर्य राजहंसों से था.....
तेरे बारे में हम कितने अनभिज्ञ रहे । प्यारी, मुझे तेरा गर्व
है । मैं ईश्वर को किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ।

[वृद्धा स्त्री अधिक और कुछ न कह सकी ।

फ्लोरेन्स (लिपट जाती है)—मां ! मेरी प्यारी मां.....!

[थोड़ी देर तक सब चुप रहते हैं ।

(शान्त होकर)—महानुभावो, जैसी आपकी इच्छा ।

[पर्दा गिरता है]

दृश्य चौथा

दृश्य—स्कुटारी का बैरक अस्पताल, सिस्टर टॉवर की

पहिली मंजिल का एक छोटा कमरा ।

शीतकाल की कड़ाके की सर्दी । संध्या का समय ।

सेलीना ब्रेसब्रिज के सम्मुख एक छोटी सी मेज पड़ी हुई है । वह बैठी हिसाब किताब देख रही है । कॉरपोरल जोन्स (अस्पताल का अर्दली) बड़ी लगन के साथ एक नये आये हुए बड़े पार्सल में से गरम कपड़ों को छांट रहा है ।

आज काम बहुत है । अस्पताल के दो जहाज सुबह से ही घायल व्यक्तियों को अस्पताल में पहुंचाने में लगे हुए हैं । प्रधान महिला से मिलने वाले व्यक्तियों के लिये बड़े २ परदे जो रसोई घर और इस कमरे के बीच में पड़े हुए हैं बार २ इधर उधर सरकाये जा रहे हैं ।

एक परिश्रान्त फौजी सर्जन अन्दर घुसता है । कुमारी नार्डिंगेल को वहाँ न पाकर कुछ रुकता है ।

सर्जन—ओह.....मिसेज़ ब्रेसब्रिज, प्रधान महिला किस जगह हैं ?

सेलीना (कठोर स्वर में)—वह स्टोर कीपर से आज के नये आये हुए घायलों के लिये कुछ कम्बलों का बन्दोबस्त करने गई हैं ।

सर्जन—यह बड़ी शरम की बात है कि मुझे मरहम पट्टी के लिये साधारण सा सामान भी नहीं मिल रहा । इङ्ग्लैंड में बैठे हुए वे लोग शायद यह सोचते हैं कि फौजी

अस्पतालों में सिवाय इप्सम् सॉल्ट के और किसी दवाई की जरूरत ही नहीं पड़ती ।

कॉरपोरल (गिनते हुए)—अड़तालीस की पाँच व पचास की दो गड़ियाँ (उनके बंडल बाँधता है और मुस्कराते हुए कहता है) देखिये, ज़मा कीजिये जनाब, आप इस जगह पर बिल्कुल नये आये हैं । आपको इस काम पर आये अभी मुश्किल से एक महीना ही गुजरा है ।

सर्जन (गुस्से में)—क्या कहा नया ? हाँ, नया तो जरूर हूँ मगर बदइन्तजामी समझने में एक महीना तो नहीं लगता ।

कॉरपोरल (अपने काम में लग जाता है और धीमे स्वर में कहता है)—बदइन्तजामी । फौजी वेश में सिविल वाले... । भला ये लोग फौज के मामलों को क्या जानें ।

सर्जन—.....क्या कहा ?

कॉरपोरल—कुछ नहीं जनाब, कुछ नहीं । मेरे इस कहने से केवल यही तात्पर्य था कि सिविलियन लोग इन चीजों को किसी अन्य दृष्टि से देखते हैं । ज़मा कीजिये, आप सिविलियन ही हैं न ?

सर्जन—चुप रहो । तुम्हारी इस बेअदबी की मुझे जरूरत नहीं ।

कॉरपोरल—(नम्रता से)—नहीं जनाब ।

सर्जन (श्रीमती ब्रेसब्रिज से)—हमारी पट्टियाँ व रुई वगैरह सब ख़तम हो चुकी हैं और न ही घावों को धोने की दवाइयाँ ही हमारे पास हैं । ये जो नये आये हुए घायल व्यक्ति हैं इनके पास थैले भी नहीं हैं । उनके थैले बल्गेरिया में दबवा दिये गये थे । उनके पास न चम्मच हैं, न काँटे, न छुरियां, न कमीजें अं र न जुराबें । जो कुछ वे पहिने हैं वही सब कुछ है । उनके घाव सड़ रहे हैं और उन सबको संग्रहणी हो रही है । कोई प्रबन्ध.....उनकी यह दुर्दशा । (अर्दली से) कमीजें ! यहाँ लाओ मुझे इनकी ज़रूरत है ।

कॉरपोरल (परेशानी में)—जरा ठहरिये साहब, जरा ठहरिये । इन बंडलों पर नम्बर गलत पड़े हुए हैं । (श्रीमती ब्रेसब्रिज से)—मिसेज़ ब्रेसब्रिज, यह भी कम है । यह चौथा है ।

सर्जन—कुछ परवाह नहीं । तुमने कितनी सभ्हाल ली हैं ।

कॉरपोरल—एक-आठ-सात । दो सौ कुल होना चाहिये थीं ।

सर्जन (श्रीमती ब्रेसब्रिज से)—उनमें से पचास मुझे भी वार्ड के लिये दे दीजिये ।

सेलीना—एक रसीद लिख दीजिये, जिससे हमारे पास

यह सबूत हो जावे कि आपको स्टोर से ये नहीं मिलें।

सर्जन (लिखते हुए)—स्टोर से ? कभी किसी को वहाँ से कुछ मिला भी है ? मेरा विश्वास है कि वह बदमाश स्टोर कीपर खजाने वालों से बाह्वाही पाने के लिये सब चीजें वापिस इङ्गलैंड भेज देता है। मैं इन्हें इकट्ठी करवाने के लिये अभी एक आदमी भेजता हूँ। ये कहाँ से आई हैं ?

सेलीना—हमने इन्हें पेरा से खरीदी हैं। एक बदमाश तुर्क हमेशा ही कम भेज देता है। इसलिये हमें यहाँ सम्हालनी पड़ती हैं।

सर्जन (अधीरता से)—आपके पास पट्टियाँ तो होंगी। उन घायलों को बड़ी बुरी दशा है।

सेलीना (अल्मारी की ओर बढ़ती हुई)—मैं देखती हूँ। (नीले कागज में बँधे हुए कुछ पैकेट उसकी ओर बढ़ाती है)

सर्जन (प्रसन्नता से)—वाह खूब। वास्तव में मिस नाइटिंगेल बड़ी कर्तव्य-परायणा हैं। उनका सार्वजनिक स्थान में एक स्मारक बनना चाहिये। मैं सच कहता हूँ। क्या आप इसे विनोद समझती हैं ?

सेलीना—सर्जन जनरल के ये विचार नहीं हैं।

सर्जन—वह तो एक विदूषक है। उसे कुछ काम थोड़े ही करना पड़ता है। वह तो लम्बी २ रिपोर्टें ही तैय्यार

करने में लगा रहता है। औषध-विभाग को तो वह एक खिलवाड़ समझता है।

[अपना खजाना सम्हाल कर वह चला जाता है।

कॉरपोरल (जोर से गिनता है)—चार-सात-दस-पन्द्रह-बीस। अरे ये तो फलालेन की कमीजें नहीं हैं। ये तो सूती हैं।

सेलीना—अच्छा, रजिस्टर में नोट कर लो।

कॉरपोरल (नोट करते हुए)—समझ में नहीं आता इन दोनों में से कौन अधिक बदमाश है। स्टोर कीपर से कोई भी चीज मांगो वह उसके लिये मना कर देता है। और जब जरूरत का वक़्त निकल जाता है तो वह उसे ला कर रख देता है और वह अब्दुल उससे कोई भी चीज मांगो—यह भी है और वह भी है सब के लिये हाँ कर देता है, मगर ज्योंही उसके हाथ पैसे पड़े तब जो मिला सो इकट्ठा कर के भेज देता है।

[पर्दे हटते हैं और एक घबराई हुई लज़ीली स्टाफ नर्स दाखिल होती है।

सेलीना—कहिये मिसेज़ विलियमस्।

श्री० वि०—अरारोट की और २७० खुराकों के लिये हुकम दिया गया है। ये कहाँ से बन पड़ेंगी।

सेलीना—क्या तुमने उनके लिये बोल दिया है ?

श्री० वि०—यह उसका जबाब है । (एक छपा हुआ कागज हाथ पर रख देती है जिस पर एक कोने में हाथ से कुछ घसीटा हुआ है) “खेद है कि स्टोर कीपर की तरफ से अरारोट नहीं मिल रहा” स्टोर कीपर ।

कॉरपोरल—जानती हो कि उसने इस प्रकार का जबाब क्यों दिया है । यहाँ का मेडिकल स्टोर युद्ध-विभाग के अधिकार में है । उन्हें बन्दूकें, बारूद व अण्डे और शराब के अलावा और सूझता ही कुछ नहीं ।

सेलीना (सहृदयता से)—इस तरह मज्जाक उड़ाने की क्या जरूरत है ?

कॉरपोरल—मैंने शाबाशी दो मैडम, अगर कहीं ब्रिटिश युद्ध-विभाग की हरेक बात पर ध्यान दिया जावे तो तुम सोचते २ सिर दर्द व दिल टूटने की बीमारी से मर भी गई होती ।

सेलीना—जो कुछ उनसे बन पड़ता है वे कर रहे हैं । मि० हर्वर्ट ने यहां आने से पहले इस बात का विश्वास दिलाया था, और सरकार के नाम पर उन्होंने यह वायदा किया था ।

कॉरपोरल—मैडम, यह तुम भूल करती हो, सार्जेंट के सामने मि० हर्वर्ट की कौन सुनता है । उसके सामने तो फौजी अफसर व स्टोर कीपर की कदर है । उसे खजाने व

युद्ध-विभाग का ख्याल है। तुम अभी हाल में ही आई हो। तुम क्या जानो, कौजी गोरख-धन्धों को समझने में उमर बीत जाती है। इसी लिये युद्ध-विभाग की नौकरियां मुस्तकिल हैं, सरकार में आज है और कल नहीं। तुम जानती हो मुस्तकिल आदमियों की कदर ज्यादा होती है। मि० हर्वर्ट को कौन पूछता है, यहां तो सार्जेंट व स्टोर कीपर का बोलबाला है।

सेलीना—इस बकबक से हमें अरारोट तो नहीं मिल सकता। हमारे पास अल्मारी में थोड़ा सा है, परन्तु मिस नार्डिंगेल की यह इच्छा है कि यह किसी ग्लास मौक्रे पर काम देगा। मिसेज़ विलियमस् क्या अण्डों से काम नहीं चलेगा ? मैं कुछ अण्डों का प्रबन्ध कर सकती हूँ।

श्री० वि०—उनमें से अधिकांश इतने कमजोर हैं कि वे अण्डे हज़म नहीं कर सकते।

सेलीना—हां प्यारी.....कॉरपोरल जोन्स, क्या तुम्हारा ख्याल नहीं कि बदमाश स्टोर कीपर के पास अरारोट स्टोर में है ? उसे खुद यह मालूम नहीं कि उसके पास क्या है और क्या नहीं। मैंने कल वहां से ६० पौंड लाईम स्टोराइड ढूँढ निकाला था, जब कि वह कसम खा कर कहता था कि उसके पास रत्ती भर भी नहीं है।

कॉरपोरल—मैडम, मैं जानता हूँ कि स्टोर में अरारोट है। टर्किश कस्टम हाऊस में भी बहुत जमा है। परन्तु तुम जानती हो कि स्टोर कीपर उन्हें खोल नहीं सकता, जब तक कि बोर्ड उनकी सम्हाल न कर ले। बोर्ड अभी कहीं अगले हफ्ते में सम्हालेगा। टर्किश कस्टम हाऊस में जो माल पड़ा है शायद वह समुद्र में डुबो दिया गया होगा, क्योंकि वहां से कभी कुछ वापिस न आता है और न आगे को आने की उम्मीद ही है।

सेलीना—आह प्यारी ! क्या ये आदमी बच्चों की तरह बर्ताव नहीं कर रहे ? क्या किसी को इतना भी ख्याल है कि लड़ाई जोरों पर है ? अच्छा, मैं तुम्हारे लिये बन्दोबस्त करती हूँ।

श्री० वि०—बहुत अच्छा। परन्तु उसके लिये.....।

[ब्रामदे में कुछ व्यक्तियों के आने की आवाज़ होती है वह चुप हो जाती है।

फ्लोरेन्स (बाहर से)—नहीं, नहीं, हम तो इसका फैसला अभी करेंगे (वह दरवाजे में दिखाई पड़ती है) मि० बाम्फोर्ड, अन्दर आओ।

[बाम्फोर्ड स्कुटारी का स्टोर कीपर है। वह भारी बदन का आदमी है। उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता है कि वह कुछ घबराया हुआ है और उसे किसी बात की शिकायत है। वह

अनिच्छा रहते हुए भी अन्दर दाखिल होता है ।

बैठो....सेलीना, जो २ मैने अस्पताल में दिया है उसका हिस्सा लाओ ।

सेलीना (अल्मारी से रजिस्टर लाकर)—लीजिये, वे ये हैं ।

बाम्फोर्ड (जोर से)—मिस नाईटिंगेल ! मुझे इन सब से क्या मतलब । अगर आप अपने पास से ही खर्च करती जाएँ और मेरे पास न आएँ, तो आपको खजाने से रुपये कौन लिये बैठा है ।

फ्लोरेन्स (त्योंरी चढ़ा कर)—जब मैं रुपया मांगू तब कहना । और तुम्हारे स्टोर के बारे में—क्या तुम्हें मालूम है जब से मैं यहां आई हूं, मैंने तुम्हारे स्टोर से क्या कुछ मँगवाया है ? कुछ भी नहीं । ज़रा सुनो । हमारे पास पिछले माह में दो सौ कुड़ते थे । मैंने कितनों के लिये लिखा है, क्या तुम बतला सकते हो ? जो कुछ मांगो 'स्टोर में नहीं है', 'स्टोर में नहीं है', यह तुम्हारे क्लर्क के ही हस्ताक्षर हैं न ?

बाम्फोर्ड (अवज्ञा से)—.....फिर ?

फ्लोरेन्स—जिस महीने में मैं यहां आई थी उससे पहले महीने में कितने कपड़े अस्पताल में धोए गये थे, क्या तुम्हें मालूम है ? केवल छै । क्या यह देखना तुम्हारा काम नहीं था ?

बाम्फोर्ड (बड़बड़ाता हुआ)—ठेकेदार ने मुझे धोका दिया ।

फ्लोरेन्स—तुमने देखभाल क्यों नहीं की । मेरे पास भी तो वही ठेकेदार है ।

बाम्फोर्ड (गर्व के साथ)—मेरे पास धोबियों का काम देखने के अतिरिक्त और भी कई काम हैं ।

फ्लोरेन्स—खेद है कि तुम उनमें से कोई भी नहीं करते । तुम इस अस्पताल की देख-रेख के लिये हो । मैंने कितना सामान इस अस्पताल में अपने पास से दिया है क्या वह तुम जानना चाहते हो ? ग्यारह हजार कमीजें । सात हजार से ऊपर काँटे, छुरियाँ, व चम्मच । दो हजार टर्किश गाऊन । जरा इस पर दृष्टि डालो । अब तुम अपने काम पर भी निगाह फेरो । तुम्हारा यह दो महीने पहिले का हिस्साब है जो तुमने अपने आप मेरे माँगने पर तैयार किया था । इसी को देख कर मैंने चीजें मंगवाई थीं, जो रोगियों में बंट भी चुकी हैं । तशतरियाँ—नहीं हैं । मोमबत्तियाँ—कोई नहीं । प्याले—नहीं हैं । छुरी काँटे व चम्मच—नहीं हैं । तकिये नहीं—चप्पल तक नहीं हैं । फलालेन की कमीजें नहीं, जुराबें नहीं हैं.....टोपियाँ थोड़ी सी हैं । पाजामे वाली बूढ़ी औरतों के पहिनने के लिये न !

बाम्फोर्ड (नर्माई के साथ)—हम पर जो २ मुसीबतें पड़ रही हैं उनका भी थोड़ा सा खयाल आपको रखना चाहिये । आप शायद भूल रही हैं कि एक जहाज आंधी के

कारण हमारा डूब चुका है ।

फ्लोरेन्स—सारे कुप्रबन्ध का बोझ बस एक जहाज डूबने पर डाला जा रहा है । जब से मैं आई हूँ इसके सिवाय और कुछ सुनने को नहीं मिलता । उस जहाज के साथ ग्रेट ब्रिटेन की सारी धन दौलत तो डूब नहीं गई । प्रिन्स नामक जहाज १४ नवम्बर को डूबा था । ६ हफ्ते पूरे तुम्हें उन चीजों के दुबारा मंगाने को मिले—या फिर यहीं आस पास से उनका प्रबन्ध कर सकते थे ।

बाम्फोर्ड—यहां पर ये चीजें नहीं मिलतीं ।

फ्लोरेन्स—श्रीमान जी ! अगर मुझे मिल सकती हैं तो फिर आप को भी ।

बाम्फोर्ड (बड़बड़ाते हुए)—वे नियमानुसार नहीं हैं ।

फ्लोरेन्स—ठीक है ! रोगी हाथ से तोड़ कर रोटियां खावें व टोपियों में भर कर पानी पीवें, और तुम अपने नियमों का राग अलापते रहो ।

बाम्फोर्ड (उसकी बात को काटते हुए)—अच्छा, पर उन्हें मेस के नये वर्तन नहीं मिल सकते । सब जरूरी चीजें उनके पास अपने २ थैलों में हैं । अस्पताल में जब वे आते हैं तो उन चीजों को उन्हें साथ लाना ही चाहिये ।

फ्लोरेन्स—फौज को जब क्रीमिया जाने का हुक्म दिया गया था, उससे पहिले ही उनके थैले बल्गेरिया में दबवा

दिये गये थे । यह तुम भी जानते हो और मैं भी ।

बाम्फोर्ड—तो फिर उन्हें ये वस्तुएँ रेजीमेन्ट की ओर से मिलना चाहियें ।

फ्लोरेन्स—अपने साथियों से जब वे सकड़ों कांस दूर पड़े हुए हैं तो फिर किस तरह उन्हें ये चीजें वहां से मिल सकते हैं ?

बाम्फोर्ड (दृढ़ता से)—तो फिर मैं उन्हें ये सब चीजें दुबारा नहीं दे सकता । मुझे युद्ध-विभाग से इजाजत नहीं है ।

फ्लोरेन्स—तुम्हारे इस तरह के विचार हमेशा के लिये तुम्हारे नाम पर कलंक रहेंगे ।

बाम्फोर्ड—कलंक ? इसमें कौनसा कलंक है ? मैं अपना कर्तव्य ही तो पालन कर रहा हूँ । और सब स्टोर कीपर भी तो इसी प्रकार अपना कर्तव्य पालन करते हैं ।

फ्लोरेन्स—यही तो कारण है कि क्रीमिया की ब्रिटिश फौज का खुद उसके कमान्डर के आगे यह हाल हो रहा है । सब जगह यही रोना है । मूर्खता, अयोग्यता, बीमारी और गन्दगी । यही इंग्लैण्ड के शत्रु हैं, रूस नहीं ।

बाम्फोर्ड—इतना बदनाम न कीजिये मिस नाईटिंगेल । और चाहे कुछ भी हो मगर गन्दगी नहीं ।

फ्लोरेन्स—मिस्टर बाम्फोर्ड, गन्दगी । आज से चार

महीने पहले की बात है, जब मैं यहां आई थी। न इस जगह भाड़ू था, न कोई साफ करने का बुरुश और न साबुन की टिकिया.....तुम जानते हो, इसमें कुछ भी भूँठ नहीं। मैंने यहाँ आकर जिन चीजों के लिये तुम्हें लिखा था वे ये चीजें थीं—बाल्टियां, भाड़ने का बुरुश, व साबुन। तुमने या तो इनके देने से मना कर दिया था या ये तुम्हारे पास थी ही नहीं।

बाम्फोर्ड—मिस नाईटिंगेल, मैंने मना नहीं किया।

फ्लोरेन्स—हां, तुमने मना किया था। तुम्हारे स्टोर में बाल्टियां व साबुन अपनी आंखों से रखा हुआ मैंने देखा था। उसके बाद मैंने बाज़ार से मँगवाई थीं।

बाम्फोर्ड—जी हाँ मिस नाईटिंगेल, पर तब तक बोर्ड ने उनकी जांच नहीं की थी। यहां के जो नियम हैं उन्हें आप भी जानती हैं और मैं भी। सरकारी चीजें यहां की जितनी भी हैं वे बोर्ड की बैठक होने तक बरती नहीं जा सकतीं।

फ्लोरेन्स—रोगी छूत के रोगों से मर क्यों न रहे हों।

बाम्फोर्ड—नियम ही ऐसे हैं। मैं क्या कर सकता हूँ।

फ्लोरेन्स—ये कौन से नियम हैं जिनसे रोगी मृत्यु के मुख में जावें। तुम्हारे अपने इन नियमों के बारे में क्या विचार हैं ?

बाम्फोर्ड (सतर्क होकर)—युद्ध-विभाग की आलोचना करना मेरा काम नहीं ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिये कल डाक्टर एम्स ने कुछ लकड़ी अपना वार्ड गरम करने के लिये माँगी थीं । तुमने मना कर दिया । जानते हो उनका वार्ड कितना खुला हुआ है ? मैंने अपने पास से लकड़ी भिजवाई जब कि तुम्हारे पास लकड़ी की कोई कमी नहीं थी ।

बाम्फोर्ड—डाक्टर एम्स को नियमानुकूल मिल चुकी थीं ।

फ्लोरेन्स—अरे भाई, वह जगह तो बरफ से भी अधिक ठंडी थी । और हवा रुकने के लिये उसमें बिल्कुल ही गुआइश नहीं है । रोगी ठंडे हो गये होते ।

बाम्फोर्ड (सहानुभूति दिखलाते हुए)—बोर्ड की आज्ञा बिना लकड़ी की मिकदार बढ़ाई नहीं जा सकती । जो स्त्रियां हमेशा हुक्म चलाना जानती हैं उनके लिये, युद्ध-विभाग के क्रायदों पर किस लिये चलना चाहिये, यह जानना कठिन है । परन्तु जब आप फौजी महकमे में आगई हैं तो आपको यह सब समझना ही पड़ेगा ।

फ्लोरेन्स—बको मत । मेरे पास जो नर्सेज़ हैं उनके लिये भी बड़े कड़े नियम हैं । परन्तु वे नियम तुम्हारे नियमों की तरह नहीं हैं जो बेवकूफी से भरे हों और

परिणाम में संघातक हों। हमारे नियम जीवन की महत्ता को सम्मुख रख कर बनाये व बरते जाते हैं। फौज में केवल साधारण बुद्धि से काम लेने की जरूरत है।

बाम्फोर्ड (जोर देकर)—हमारी कीजिये श्रीमती जी, सेना-विभाग इससे भिन्न है। इस विभाग में आज्ञा मानना ही सब कुछ है।

फ्लोरेन्स—यह क्या कम खुशी की बात है कि कम से कम तुम दोनों का अन्तर तो समझने लग गये हो। अपनी बुद्धि के अनुसार चल कर विजय प्राप्त करने की बजाय नियमानुसार चल कर हारना तुम अधिक प्रशंसनीय समझते हो।

बाम्फोर्ड (धृष्टता से)—मुझे तो हुक्म बजाना है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता।

फ्लोरेन्स—मिस्टर बाम्फोर्ड, अब कुछ अपनी बुद्धि से काम लो। मैंने तुम्हें हिसाब किताब बता दिया है। तुम जानते हो कि हमने कहां तक जरूरी वस्तुओं का प्रबन्ध अपने आप किया है। तुम्हें हमारी सहायता करनी होगी। दो जहाज घायल व्यक्तियों को यहाँ लाने में लगे हुए हैं। मुझे उनके लिये कम्बल व कुड़ते चाहियें।

बाम्फोर्ड—अफसोस, आपको कुछ नहीं मिल सकता(कुटिल हँसी हँसते हुए) क्यों नहीं अब भी आप अपने पास से प्रबन्ध कर लेतीं ?

फ्लोरेन्स (उपहास को टालते हुए)—तुम्हारे स्टोर में इन चीजों की कई गांठें पड़ी हुई हैं ।

बाम्फोर्ड (अपने हाथों को मसलते हुए)—पर मैं कहता हूँ वे अभी पास नहीं हुईं । अगले हफ्ते तक बोर्ड की बैठक नहीं हो सकती ।

फ्लोरेन्स (शान्तिपूर्वक)—तुम्हारी आपत्ति को मैं पूरी तरह समझती हूँ । अगर और कहीं मुझे यह सामान मिल जाता तो मैं तुम्हें बाध्य न करती । मैंने सब जगह भरसक प्रयत्न कर लिया है । और कहीं भी प्रबन्ध नहीं हो सकता ।

बाम्फोर्ड (प्रसन्नता को छिपाते हुए)—आपकी स्थिति दयनीय है । आखिर उस स्टोर कीपर बगैर गुजारा नहीं चला, जिसे हमेशा हिकारत की दृष्टि से देखा जाता है । आपको किसी न किसी प्रकार से काम चलाना ही पड़ेगा, मेरे बस की बात नहीं ।

फ्लोरेन्स—रोगी उन चीजों के बिना गुजारा नहीं कर सकते, मि० बाम्फोर्ड ! तुम्हें वे सब चीजें देनी होंगी, यह मेरी आज्ञा है । वे नितान्त आवश्यक हैं ।

बाम्फोर्ड—मुझे खेद है, मैं कुछ नहीं कर सकता ।

फ्लोरेन्स—एक बार फिर सोच लो ।

बाम्फोर्ड—वे नहीं मिल सकतीं ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें वे सब चीजें देनी होंगी ।

बाम्फोर्ड (लापरवाही से)—मैं तुम्हारे या सेना-विभाग के अधिकार में नहीं हूँ । मैं खजाने की ओर से नियुक्त हूँ । आप नियम जानती हैं, उन्हें बदल दीजिये । फिर प्रसन्नता-पूर्वक आप सब चीजें ले सकती हैं ।

फ्लोरेन्स—मुझे नियमों के बदलने की जरूरत नहीं, मैं स्टोर कीपर को ही हटाये देती हूँ ।

बाम्फोर्ड (कुटिल हंसी हंसते हुए)—मैं भी देखूँ ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें हटना पड़ेगा ।

बाम्फोर्ड (विचलित होकर)—आपको मेरे विरुद्ध कोई शिकायत नहीं है, मैं अपना कर्तव्य पालन कर रहा हूँ ।

फ्लोरेन्स—अगर मुझे, जितनी चीजें मैंने मांगी हैं, एक घन्टे में लाकर तुमने नहीं दीं, तो मैं सरकार को सूचना भेज दूँगी कि दोनों में से एक ही यहाँ रह सकेगा या तुम या मैं ।

बाम्फोर्ड (बड़बड़ाते हुए)—परन्तु मि० हर्बर्ट मेरी परिस्थिति से परिचित हैं और अब मि० हर्बर्ट के हाथ में है क्या ? वह अब मंत्री पद पर नहीं हैं ।

फ्लोरेन्स—मैं मि० हर्बर्ट को नहीं लिखूंगी, मैं तो सीधे लॉर्ड पामस्टन को तार दूँगी ।

बाम्फोर्ड (पीला पड़ जाता है)—आपके हाथ में यह

नहीं है ।

फ्लोरेन्स—क्या मेरे हाथ में नहीं है ? अच्छा, तुम अभी जान जाओगे ।

बाम्फोर्ड (काँपने लगता है)—परन्तु मैडम.....मैं विवाहित हूँ, मेरी स्त्री के लिये ही रहम खाओ । मैं केवल अपना कर्तव्य ही पालन कर रहा हूँ ।

फ्लोरेन्स—मि० बाम्फोर्ड यह ठीक है । मैं भी तो अपना कर्तव्य पालन कर रही हूँ । पीड़ितों के प्रति कर्तव्य । मि० बाम्फोर्ड उनमें भी कुछ विवाहित हैं । उनकी स्त्रियों का क्या होगा यह भी तुमने सोचा है ।

बाम्फोर्ड (विनीत भाव से)—आपका कहना मानता हूँ तो मैं नौकरी से हटा दिया जाऊँगा ।

फ्लोरेन्स—नौकरी को बचाना चाहते हो तो मेरे कहने के अनुसार चलो, बदनामी से भी तभी बच सकोगे । मैं तुम्हें एक घण्टे का समय देती हूँ ।

बाम्फोर्ड—इतनी लम्बी माँग.....(अनिच्छा पूर्वक) क्या एक सौ से काम नहीं चलेगा ? मेरा मतलब हर एक किस्म की सौ सौ चीजों से है ? अगर सौ २ से आपका काम चल सके तो मेरा ख्याल है इतना, बोर्ड की आँखें बचा कर, किया जा सकता है ।

फ्लोरेन्स—मुझे तो जो संख्या उसमें लिखी हुई है,

अर्थात्, पाँच सौ नव्वे । न ज्यादा न कम और वह भी एक घण्टे के अन्दर २ ।

[कुछ देर के बाद ।

बाम्फोर्ड (गिड़गिड़ाते हुए)—अच्छा, तो उन चीजों को लाने के लिये मेरे साथ किसी को भेज दीजिये ।

फ्लोरेन्स—अच्छा कॉरपोरल जोन्स, तुम इसके साथ चले जाओ ।

[उसे कुछ हिचकते देख कर, गुस्से से ।

देर मत करना ।

कॉरपोरल (घबड़ा कर)—नहीं मैडम, बिल्कुल नहीं ।

[वह होशियार हो जाता है और स्टोर कीपर के पीछे हो लेता है ।

सेलीना—ठीक ही हुआ.....हमें कुछ अधिक खुराकों के लिये अरारोट की जरूरत है ।

फ्लोरेन्स—पोर्टवाइन ? क्या वह तुम्हारे पास काफ़ी है ?

सेलीना—जी.....कॉरपोरल जोन्स का कहना है कि स्टोर कीपर के स्टोर में अरारोट है । अभी कहीं भेजा नहीं है ।

फ्लोरेन्स—वह हमें पेरा में मिल सकता है । जब तक इधर उधर से मिल सकता है तब तक नियमों का उल्लंघन

करने की जरूरत नहीं ।

सेलीना (पदों के पास से)—मिसेज़ विलियमस् (श्रीमती विलियमस् अन्दर दाखिल होती है) मिसेज़ विलियमस्, आप अरारोट की २७० खुराकों के लिये लिख कर मंगवा सकती हैं ।

श्री० वि०—बहुत अच्छा जी ।

फ्लोरेन्स—आज शाम तक सेनेटरी कमिशनर (Sanitary Commissioners) यहाँ पर आ जाना चाहिये.....सेलीना, क्या नर्सिज़ के कामों की सूची तुम्हारे पास मौजूद है ?

सेलीना—क्यों नहीं ।

फ्लोरेन्स—उनमें से कोई चार कमरों में काम करती है ।

सेलीना—जी, नर्स बेट्स ।

फ्लोरेन्स—क्या वह अकेली ही है ?

सेलीना—जी हाँ ।

फ्लोरेन्स—उसे बुला भेजो ।

सेलीना—(पदों के पास जाकर)—चपरासी.....नर्स बेट्स को यहाँ आने के लिये कह दो । वह 'जी' वार्ड में है । (फ्लोरेन्स से) क्या बात हो गई ?

फ्लोरेन्स—हमें अपने आपको पुरुषों की तरह शिक्षित बनाने की जरूरत है, केवल इस लिये नहीं कि हम इस

युद्ध में कुछ अच्छा काम कर के दिखला सकें, बल्कि इसलिये कि हम पुरुषों के कन्धे से कन्धा लगा कर काम कर सकें ।

सेलीना—इसमें क्या सन्देह है ?

फ्लोरेन्स—इन्सपेक्टर जनरल क्यूमिंग ने मुझे पत्र का यह भाग लाकर दिया है । जितनी सहानुभूति वह अपने काम से रखते हैं, वह तुम जानती ही हो ! वह अपने ढंग के एक ही हैं ।

[सेलीना पढ़ने लग जाती है ।

भूँट, बिल्कुल भूँट, महज्ज बदमाशी कि रोगी दुर्व्यवहार और कुप्रबन्ध के कारण मर रहे हैं । ऐसा कहना अन्याय करना है । डाक्टर अपनी सामर्थ्य को देखते हुए आश्चर्यजनक काम कर रहे हैं ।

सेलीना—परन्तु वस्तुओं की इस प्रकार की कमी..... ।

फ्लोरेन्स—इसमें डॉक्टरों का क्या कसूर ? और अगर मान भी लिया जावे, तो इसका उत्तरदायित्व सब मेरे ऊपर है । नर्स को हटाना ही होगा ।

सेलीना—पर फ्लोरेन्स.....उसने किसी बुरी नियत से तो यह खबर नहीं दी ।

फ्लोरेन्स—वह हमें अपने विरोधियों के पंजे में ढकेल रही है । क्यूमिंग यह साबित कर सकता है कि यह सब

परले सिरे की मूर्खता है। सेलीना, यह हमें हानि पहुँचाने वाली बात है जो अब बदली नहीं जा सकती। हमें केवल सत्य का आसरा लेकर काम करना है। उसके लिये किसी दिखावे की जरूरत नहीं। हमें इससे यह लाभ होगा कि जब हम असली अपराधियों को साधारण सफाई न रखने और अपना कर्तव्य न करने के लिये दोषी ठहरावेंगे, तब उन्हें जवाब देना मुश्किल हो जावेगा। सुधार के क्षेत्र में निपट सत्य के कारण ही सफलता मिलती है।

[कमरे में तीन आदमी दाखिल होते हैं। पहिला, एक लम्बे क़द का कठोर आकृति का आदमी फौज़ी पोशाक में; दूसरा, स्टोर कीपर बाम्फोर्ड; और तीसरा, टाइम्स पत्र का प्रतिनिधि मि० मैक्डोनेल्ड। उनका नेता बढ़ता हुआ मिस नाईटिंगेल की मेज तक आ जाता है। यह इन्स्पेक्टर जनरल डा० क्यूमिंग है।

क्यूमिंग—मिस नाईटिंगेल, मैंने सुना है कि आपने स्टोर कीपर को बोर्ड की अनुमति के बग़ैर ही गाँठें खोलने का हुकम दिया है ?

फ्लोरेन्स—जी, उनकी अस्पताल में आवश्यकता है।

क्यूमिंग—मैं आपकी इस बात से कतई सहमत नहीं। यह मैं बोर्ड के एक सदस्य की व अस्पतालों के इन्स्पेक्टर जनरल की हैसियत से कह रहा हूँ। मैं आपके इस काम का

विरोध करता हूँ, और स्टोर कीपर इस मामले में जो रिपोर्ट करेगा उसमें उसका साथ दूँगा । उसका कथन बिल्कुल ठीक था ।

बाम्फोर्ड—मैडम, मैंने आपको पहिले से ही यह सब जतला दिया था, क्यों न ?

मैक्डोनेल्ड—परन्तु मैं टाइम्स पत्र के द्वारा जनता तक इस बात की सूचना पहुँचा दूँगा कि मिस नाईटिंगेल ने यह सब उचित ही किया था ।

क्यूमिंग (गुराते हुए)—मि० मैक्डोनेल्ड, मुझे तुम्हारे टाइम्स पत्र की ओर से रत्ती भर भी परवाह नहीं ।

फ्लोरेन्स—सज्जनों, कृपया मेरी उपस्थिति में आप शोर न मचाइये ।

क्यूमिंग—मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह आपकी अनाधिकार चेष्टा है । आप नर्सिंग विभाग की अधिष्ठात्री हैं, न कि स्टोर कीपर पर भी अपना हुकम चला सकती हैं । मैं इसकी रिपोर्ट करूँगा ।

फ्लोरेन्स—डा० क्यूमिंग, आपको जो कुछ ठीक जंचता हो वह आप कर सकते हैं । परन्तु रिपोर्ट भेजने के पहिले आप अपने अन्य डाक्टरों की परामर्श अवश्य ले लीजियेगा । आपको विदित हो जाएगा कि अगर मैं स्टोर कीपर के काम में मदद न करती तो आपको कई आवश्यक

वस्तुएँ मिल भी न पातीं । मि० मैक्डोनेल्ड के टाइम्स फण्ड व मेरी बदौलत ही यह सब कुछ है ।

मैक्डोनेल्ड—बात बढ़ती ही जाती है । केवल मिस नाईटिंगेल के कारण ही मुझे कई बार यह समाचार भेजने से रुकना पड़ा । मैं अब अधिक नहीं रुक सकता । रोगियों और घायलों की ओर अधिक ध्यान न देकर केवल कागजी कार्यवाही पर ही अधिक जोर दिया जा रहा है । कम्बलों की कमी पड़ जाना क्या कम अपमानजनक है ।

क्यूमिंग—ऐसा मान भी लिया जावे, पर तब भी मिस नाईटिंगेल को इन चीजों के निकलवाने का कोई अधिकार नहीं है मिस नाईटिंगेल, मैं यह सब समझता हूँ कि आप यह सब भले के लिये कर रही हैं परन्तु यह स्टोर कीपर के अधिकार का काम है, आपका नहीं ।

फ्लोरेन्स—घायलों की अच्छी तरह देख-रेख करके उनको जोवित रखने की अपेक्षा कायदे कानून की रक्षा करके उनको मरने देना आपके विचारों में उचित है ।

क्यूमिंग (घबरा कर बीच में ही)—नहीं, नहीं ।

फ्लोरेन्स—.....शायद आप सोचते हैं कि कायदे के मुताबिक उन्हें मरना नहीं चाहिये । इसलिये वे मरेंगे नहीं ।

क्यूमिंग (क्रोध से)—मेरे ऐसे विचार बिल्कुल नहीं हैं ।

पब्लिक सर्विस (Public Service) में स्त्रियों को लेने में यही बुराई फैलती है। जहाँ भी उन्हें यह कार्य-विधान समझाने का प्रयत्न किया जाता है, वहीं वे कई और इधर उधर के विषय लेकर बैठ जाती हैं। मैं आपको समझाना चाहता था.....।

फ्लोरेन्स—मैं अधिक वाद-विवाद में नहीं पड़ना चाहती। मैं यहाँ पर रोगियों और घायलों की सेवा और सुश्रुषा के लिये भेजी गई हूँ। इससे केवल यह तात्पर्य नहीं निकलता कि हमारा काम उनके विस्तर ठीक करने व दवाई देने भर का रह जाता है। हमें उनके लिये आवश्यक और आराम देने वाली सभी वस्तुएँ भी जुटानी पड़ती हैं। सब काम भली प्रकार हो रहा है या नहीं, यह जानना मेरा कर्तव्य है।.....(बाम्फोर्ड से) मि० बाम्फोर्ड, क्या वे कमबल दे दिये गये हैं ?

बाम्फोर्ड (साहस इकट्ठा करके)—नहीं, मैडम।

फ्लोरेन्स (तार दिखला कर)—तब १५ मिनट के अन्दर ही यह तार मैं लॉर्ड पामस्टन के पास भेजे देती हूँ। मैं वापिस इंग्लैंड लौट जाऊँगी, और अगर यहां के सब आदमी बरखास्त हो गये तो फिर मेरे सिर दोष न मढ़ना।

मैकडोनेल्ड—जहाँ तक मेरे बस में है, मैं भी टाइम्स पत्र द्वारा मिस नार्डिंगेल का समर्थन करूँगा।

क्यूमिंग (राब से)—मि० मैक्डोनेल्ड, पत्रों द्वारा किये गये दोषारोपण की हमारे सरीखे आर्दामियों के सामने क्या कीमत है। इसलिये अपने मन में यह विचार न कर बैठना कि यह तुम्हारा डर है जिसके कारण हम कुछ कर रहे हैं। पत्रों में तो हमारे खिलाफ हमेशा ही छपता रहता है। परन्तु मि० बाम्फोर्ड, हमें एक सभ्य स्त्री का कुछ तो लिहाज रखना ही होगा।

फ्लोरेन्स—स्त्री समझ कर और दया दिखाकर आपको कुछ करने की जरूरत नहीं। मैं जो कह रही हूँ, वह अवश्य होना चाहिये और मेरा कहना न मानने के फल-स्वरूप जो परिणाम होगा वह आप जानते ही हैं।

बाम्फोर्ड—मैडम, आप नाराज क्यों होती हैं। वे वस्तुएँ रास्ते में हैं।

फ्लोरेन्स—अच्छा तो तुम जाओ और जल्दी से उन्हें भिजवा दो।

[अभागा स्टोर कीपर एक निराशा की दृष्टि डा० क्यूमिंग पर डालता है और अपना रास्ता नापता है।

डाक्टर क्यूमिंग, आपको यह बात समझनी होगी कि, अस्पताल की आवश्यकता के सामने नियम भी तोड़े जा सकते हैं।

क्यूमिंग (गुराते हुए)—अच्छा—तब—फिर आगे से

ऐसा न होना चाहिये ।

फ्लोरेन्स (सामने होकर)—पर डा० क्यूमिंग, ऐसा तो फिर भी होगा । युद्ध वगैरह में कायदे कानून की अवहेलना करनी पड़ जाती है ।

[क्यूमिंग अपना सा मुंह लेकर एक ओर हट जाता है ।
.....मि० मैकडोनेल्ड, मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि इस विषय का अपने पत्र में आप कोई भी जिकर न करना । सरकार चाहती है कि सब चीजें ठीक तौर पर हों । सेनेटरी कमिश्नर नियुक्त कर दिये गये हैं । उनमें से एक महाशय आज शाम को मुझसे मिलने के लिये आ रहे हैं । अगर सरकार सुधार का भरसक प्रयत्न कर रही है तो उस पर लाँच्छन लगाना अन्याय होगा ।

[सेलीना ब्रेसब्रिज आती है ।

सेलीना—क्षमा कीजिये । डाक्टर सदरलैंड आ गये हैं । वह वेटिंगरूम में बैठे हैं ।

फ्लोरेन्स—वह कमीशन के सभापति हैं । आप दोनों महाशय यहीं ठहरिये और उनसे मिल कर जाइये.....
सेलीना.....उन्हें अन्दर लिवा लाओ ।

क्यूमिंग—.....हमें स्त्रियों का लिहाज करना ही पड़ता है । अगर आपके स्थान पर कोई पुरुष होता तो मैं रिपोर्ट अवश्य ही करता, आप समझें न ।

फ्लोरेन्स—डा० क्यूमिंग, वह दिन दूर नहीं है जब पुरुष स्त्रियों को उनके काम के लिये महत्व देंगे, केवल स्त्री होने के लिये नहीं ।

सेलीना—डा० सदरलैंड ।

[वह अन्दर दाखिल होते हैं । उनकी उमर लगभग ४८ वर्ष की होगी । आप स्कॉटलैंड के रहने वाले हैं ।

सदरलैंड—मिस नाईटिंगेल ?

फ्लोरेन्स—जी, मैं ही हूँ ।

सदरलैंड—मैं हाल ही में नियुक्त सेनेटरी कमीशन का सभापति हूँ । डाक्टर गाविन और मि० रॉलिन्सन मेरे सहकारियों में से हैं ।.....इस बदवू से तो यह प्रतीत होता है कि कदाचित् हम यहाँ ठीक समय पर ही आ गये हैं ।

फ्लोरेन्स—आप टाइम्स पत्र के मि० मैकडोनेल्ड..... आप स्कुटारी के अस्पतालों के इन्सपेक्टर जनरल डाक्टर क्यूमिंग ।

सदरलैंड (क्यूमिंग से)—क्या आप सन् ३२ में एडिनबर्ग में थे ? मुझे ऐसा याद पड़ता है । अपने स्कॉच भाई से मिलने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है ।.....पर यह स्थान स्वास्थ्य के लिये ठीक प्रतीत नहीं होता । डा० क्यूमिंग आपने यह स्थान अस्पताल के लिये क्यों चुना ? मैं तो इसे मरघट के लिये बेहतर समझता हूँ । यह तो निरा बिमारी

का घर है ।

क्यूमिंग (संक्षेप में)—इसके अलावा और कोई चारा न था ।

सदरलैंड—ऐसी जगह लेने की आपको जरूरत भी क्या थी ? इससे तम्बू और भोंपड़ियां अच्छी रहतीं । इस मकान के नक्शे पर आपने गौर किया है ?

क्यूमिंग—मैंने देखा क्यों नहीं ।

सदरलैंड—इस मकान के नक्शे को देखो । मेरा जहाँ तक ख्याल है इसमें आधुनिक स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों के पालन की ओर ध्यान नहीं दिया गया । मेरा ख्याल है कि आपको गन्दे पानी की नालियां बगैरह नये सिरे से बनवानी होंगी ।

क्यूमिंग—हमें इसके लिये मजदूर कहाँ से मिल सकेंगे ?

सदरलैंड (नम्रता से)—यह मैं नहीं बता सकता । न ही यह मेरा काम है । परन्तु आपको इसे अवश्य ही ठीक करवाना पड़ेगा ।

क्यूमिंग—अवश्य ही ? ऐसा किसका हुकम है ?

सदरलैंड—मेरा । मुझे लॉर्ड पामस्टन से इस बारे में पूरे अधिकार प्राप्त हैं ।

फ्लोरेन्स—क्या आप सब कमरों (Wards) का निरीक्षण कीजियेगा ? मैं आपके साथ में एक नर्स किये

देती हूँ। जब तक आप अपनी एक निश्चित राय न बना लें, तब तक मैं अपनी राय नहीं देना चाहतो.....अगर आप चाहें तो डाक्टर क्यूमिंग को साथ ले जा सकते हैं।

सदरलैंड (स्वीकार करते हुए)—मिस नाईटिंगेल, आप अपना अधिक समय नष्ट न करें। अच्छा.....डाक्टर क्यूमिंग क्या आप मेरे साथ चल सकेंगे ? आपके पास समय तो होगा।

क्यूमिंग (संक्षेप में)—अगर आपकी यही इच्छा है, तो मैं तैयार हूँ। यह मकान फिर से बनवाने की कोई आवश्यकता नहीं दीखती। यह मकान जिस प्रकार भी बना हुआ है बिल्कुल ठीक है।

सदरलैंड (धीमे स्वर में)—यह देखना मेरा काम है। मैं अभी घूम-घाम कर इसको देख लेता हूँ।

सेलोना (फ्लोरेन्स से)—जिस नर्स को आपने बुला भेजा था, वह आ गई है।

फ्लोरेन्स—अच्छा.....

[नर्स अन्दर बुलाई जाती है। वह घबराई सी पीछे खड़ी हो जाती है। फ्लोरेन्स सदरलैंड से वार्तालाप में लगी रहती है।

क्या आप जाने से पहिले यहाँ आने का कष्ट कीजियेगा, जिससे कि मुझे आपकी राय मालूम हो सके ? आप कहाँ पर ठहरे हुए हैं ?

सदरलैंड—अच्छा, तो मैं लौट कर आता हूँ और आपको बतला दूँगा। हम कहाँ ठहरेंगे, यह अभी कुछ निश्चित नहीं। कुस्तुनतुनिया के किसी बढ़िया होटल का हम सोच रहे हैं। परन्तु यह सम्भव नहीं। यहां की देख-रेख ठीक तौर पर करने के लिये मुझे यहाँ पर ही कहीं ठहरना पड़ेगा।

फ्लोरेन्स—तो आप लगभग आधे घण्टे में वापिस आ सकेंगे।

[सदरलैंड और क्यूमिंग जाते हैं।]

(मैकडोनेल्ड से) मि० मैकडोनेल्ड क्या आज रात को आप हमारा कुछ काम कर सकेंगे ?

मैकडोनेल्ड—जी, अवश्य।

फ्लोरेन्स—हमारे पास अरारोट की कमी है। स्टोर कीपर हमें अभी देना नहीं चाहता। आप बाज़ार जाकर जितना भी अरारोट मिल सके, खरीद लाना।

मैकडोनेल्ड—अच्छा, कुछ और ?

फ्लोरेन्स—सेलीना ?

सेलीना—कुछ कमीजें। मोमबत्तियाँ। साबुन। सुई और डोरा।

मैकडोनेल्ड (लिख लेता है)—अच्छा और कुछ।

फ्लोरेन्स—और जूते भी तलाश करना। वे गरम होने

चाहिये । काफ़ी तादाद में, कोई एक हजार जोड़े ।

मैक्डोनेल्ड—बस.....और तो कुछ नहीं ?

[बहुत शीघ्रता से चला जाता है ।

अभी वह कमरे से बाहर भी नहीं होने पाता कि फ्लोरेन्स
अगले काम में लग जाती है ।

फ्लोरेन्स—अच्छा, नर्स बेट्स ।

नर्स बेट्स—क्या आपने मुझे बुलाया था, मैडम ।

फ्लोरेन्स—अच्छा बैठो । तुम्हें यहाँ के नियम मालूम
हैं न ?

नर्स बेट्स (प्रसन्नता से)—क्यों नहीं, ज़रूर मैडम ।

फ्लोरेन्स—पत्रों में सम्वाद वगैरह भेजने की हमारे
लिये सख्त मुमानियत है ।

नर्स बेट्स (विचलित होती है)—जी, ज़रूर ।

फ्लोरेन्स—क्या तुमने कोई ऐसी चिट्ठी लिखी है,
जो पत्रों में छप गई है ?

नर्स बेट्स—नहीं जी, बिल्कुल नहीं ।

फ्लोरेन्स—क्या बिल्कुल नहीं ?

नर्स बेट्स—बिल्कुल नहीं जी ।

फ्लोरेन्स—अच्छा.....तुम ए, सी, ई, और जी
नामक कमरों में काम करती हो न ?

नर्स बेट्स—जी हाँ ।

फ्लोरेन्स—क्या तुमने इस अस्पताल में कोई व्यक्ति भूख से तड़प कर मरते देखा है ?

नर्स बेट्स (दीनता दिखाते हुए)—नहीं जी ।

फ्लोरेन्स—असावधानी से या औषधि का प्रबन्ध न होने से ? (वह चुप रहती है) अच्छा इसे देखो (पत्र का भाग देती है) क्या तुमने यह पत्र पहिले भी देखा है ? मुझे विश्वास है कि तुम मेरे सामने झूट न बोलोगी । क्या तुमने इसे पहिले भी देखा है ?

नर्स बेट्स (धीमे से)—जी ।

फ्लोरेन्स—क्या यह तुमने लिखा था ?

नर्स बेट्स—मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि मैंने किसी पत्र को नहीं लिखा ।

फ्लोरेन्स—मुझे इससे कोई मतलब नहीं । तुमने लिखा था न ?

नर्स बेट्स—जी ।

फ्लोरेन्स—तुम्हें मालूम हो गया था कि यह पत्र में छप गया है ?

नर्स बेट्स (धीमे से)—जी ।

फ्लोरेन्स—अपना बोरिया बिस्तर बाँध लो व कल सुबह यहाँ से रवाना हो जाओ ।

नर्स बेट्स—मिस नाईटिंगेल, मुझे निकालिये नहीं ।

मुझ पर दया कीजिये ।

फ्लोरेन्स—यह असम्भव है ।

नर्स बेट्स—क्या आप मुझे क्षमा न कर सकेंगी ?

फ्लोरेन्स—क्षमा की इसमें क्या बात है, मेरी तुमसे कोई नाराजगी थोड़े ही है । तुम जानती ही हो मैं यहाँ पर अस्पताल का प्रबन्ध करने को भेजी गई हूँ । जिन आदमियों पर मेरा विश्वास ही नहीं रहा, उनसे आगे मैं यह काम कैसे चला सकती हूँ ? तुमने मेरे आगे झूट बोला है । तुम फिर ऐसा कर सकती हो । इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, तुम्हारी संस्कृति का दोष है ।

नर्स बेट्स—मैं अब जीवन-पर्यन्त कभी भी झूट न बोलूंगी ।

फ्लोरेन्स—मैं यह नहीं मान सकती ।

सेलीना—फ्लोरेन्स, इसे इस बार क्षमा कर दो ।

फ्लोरेन्स (बहुत नम्रता से)—नाव सुबह छूटती है । तुम्हें तैय्यार रहना चाहिये.....इससे अधिक और मैं कुछ नहीं कहना चाहती । (नर्स अपना सा मुँह लिये चली जाती है)

सेलीना (नर्स के चले जाने के बाद)—क्या और कोई इलाज नहीं ?

फ्लोरेन्स—क्या.....नर्स के लिये ? ऐसा ही करना

ज़रूरी था सेलीना, ताकि दूसरों के लिये भी शिक्षा हो जावे ।
आगे को फिर ऐसा होने की सम्भावना न रहेगी ।

सेलीना (मान लेती है)—ठीक है, फ्लोरेन्स । क्या
तुमने अभी तक कुछ खाया है या नहीं ?

फ्लोरेन्स—नाश्ता किया था ।

सेलीना—मतलब तुमने सिर्फ एक अण्डा, थोड़ी सी
ढबल रोटी व मक्खन खाया था ।

फ्लोरेन्स—वक़्त कहाँ है । अभी चिट्ठियों का उत्तर
देना बाक़ी है ।

सेलीना (जोर देकर)—मैं तुम्हारे लिये चाय व बिस्कुट
ला रही हूँ । तुम्हें पांच-सात मिनट आराम करना होगा ।
(इधर से उधर जाती है) अगर तुम इसी प्रकार लगी रहों
तो अपने आपसे हाथ धो बैठोगी । जब से यहां आई हो
तुमने एक दिन भी भर पेट नहीं खाया । सब गड़बड़
सड़बड़ में ही ।

फ्लोरेन्स—सेलीना, मुझे लेक्चर देने की ज़रूरत नहीं ।

सेलीना—तुम बीमार पड़ जाओगी ।

फ्लोरेन्स—चिल्लाओ नहीं.....हैजे के रोगियों का क्या
प्रबन्ध किया है ? सफ़ाई के लिये गरम पानी व कुछ कम्बलों
की भी ज़रूरत है ।

सेलीना—वह सब ठीक होगया है.....तुम्हारी चाय

तैय्यार है । भटपट पी लो ।

फ्लोरेन्स—एक मिनट ठहरो ।

[कॉरपोरल जोन्स थका-मांदा सा अन्दर दाखिल होता है ।
कहो ?

कॉरपोरल—मैडम, जहाज में सब से पीछे आने वाले मरीजों को लाया जा रहा है ।

फ्लोरेन्स—बड़ी देर हो गई है । जब तक वे सब अस्पताल में पहुँचेंगे अन्धेरा हो जावेगा.....सेलीना, क्या कमरों में नर्सें हैं ?

सेलीना—जी ।

फ्लोरेन्स (बुलाती है)—मिसेज़ विलियमस् !

[मिसेज़ विलियमस् पर्दा हटा कर अन्दर भाँकती है ।

अन्तिम टोली आ रही है चाय वगैरह तैय्यार रखना ।

मिसेज़ विलियमस्—सब तैय्यार है जी ।

कॉरपोरल—घायलों में से एक व्यक्ति आपके बारे में पूछता था ।

फ्लोरेन्स—अच्छा, मैं दरवाजे में खड़ी होती हूँ और जो २ आवेगा उसे देखती जाऊँगी ।

सेलीना—नहीं, फ्लोरेन्स तुम बहुत थकी हुई हो ।

फ्लोरेन्स—उतनी नहीं जितने कि वे लोग थके हुए हैं ।
सेलीना, मैं उन लोगों को निराश नहीं कर सकती ।

(कारपोरल से) मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी । क्यों वे कब तक आ रहे हैं ?

कारपोरल—वे फाटक तक आ पहुँचे हैं, मैडम ।

फ्लोरेन्स (उठ खड़ी होती है)—अच्छा ।

[वह चला जाता है ।

सेलीना—प्यारी फ्लो, तुम्हारी चाय ।

फ्लोरेन्स—मुझे उसकी इस वक्रत जरूरत नहीं ।
पीड़ित मनुष्यों को देखना आवश्यक है ।

सेलीना (पीछे २ चलती है)—केवल एक घूंट, प्यारी ।

फ्लोरेन्स—अच्छा.... (वह लेती है).....तुमने
इसमें ब्रांडी मिला रखी है ।

सेलीना—वह तुम्हारे लिये जरूरी है ।

फ्लोरेन्स—ब्रांडी तो बीमारों के लिये है न कि भले
चंगों के लिये । ऐसी अमूल्य वस्तु को इस लापरवाही से
खर्च करने की जरूरत नहीं.....(सेलीना को प्याला देकर)
शेप तुम पी डालो । तुम भी बहुत थकी हुई हो ।

सेलीना—मैं बिलकुल ठीक हूँ ।

फ्लोरेन्स—(किसी प्रकार का भी जवाब सुनने को तैयार
नहीं) मैं जो कह रही हूँ, वह तुम्हें करना होगा ।

[वह दरवाजा खोलती है । घायल व्यक्ति अन्दर लाये जा रहे
हैं और वे दोनों उन्हें खड़े २ देखती हैं । मरीजों को लाने वाले

आदमियों के पैरों का शब्द और आवाज़ सुनाई दे रही है ।

सेलीना—गरीब बेचारे ।

फ्लोरेन्स (सिर हिलाते हुए)—बड़ी चीर-फाड़ की जरूरत पड़ेगी । हे प्रभो ! उनकी यह दशा । शरीर पर कपड़े तक नहीं.....सेलीना, कपड़ों की जरूरत पड़ेगी, सो लिख लो । देखो, हैजे के मरीज़ भी हैं । गरम पानी तो अपने पास काफ़ी तैयार होगा न ।

[कॉरपोरल जोन्स दरवाजे तक आता है ।

कॉरपोरल—उस व्यक्ति को अब लाया जा रहा है, मैडम ।

फ्लोरेन्स (दरवाजे पर से ही बाहर देखते हुए)—अच्छा । (सेलीना से) हर एक उनमें से शीत से ठिठुर रहा है, सेलीना । फिर शीत काल की रात.....ठहरो.....नहीं.....क्या वह ही यह आदमी है ? (कॉरपोरल जोन्स से) उन लाने वालों से कह दो कि वे उसे अन्दर ले आवें ।

कॉरपोरल (आवाज़ देता है)—इस मरीज़ को यहाँ ले आओ, इधर ।

फ्लोरेन्स (मरीज़ को अन्दर लाने के साथ जो घबराहट पैदा होती है उसे रोकने का प्रयत्न करती हुई)—उसे यहाँ पर ले आओ ।

स्ट्रैचर पर लेटा हुआ मरीज़ (धीरे से)—फ्लोरेन्स.....

क्या तुम ही फ्लोरेन्स हो ?

[लाने वाले आदमी मरोज़ का स्ट्रेचर नीचे रखते हैं और चले जाते हैं ।

यह हेनरी ट्रेमेन है ।

फ्लोरेन्स—.....हेनरी, यह तुमने क्या किया ?

ट्रेमेन (कराहते हुए)—अगर तुम इतना कर सकती थीं तो मैं क्यों नहीं ।

फ्लोरेन्स—.....प्रिय, उन्होंने तुम्हें घायल कर दिया ।

ट्रेमेन—मैं मृत्यु-मुख में हूँ । फ्लो, मैं उस भयावने जहाज पर केवल तुम्हारे दर्शनों की आशा में ही अपने आपको जीवित रख सका हूँ । (अपनी पूरी शक्ति एकत्रित करते हुए) हे ईश्वर, फ्लोरेन्स । उन जहाजों की दशा ठीक करने का कुछ प्रबन्ध करो । इतने गन्दे, दुर्गन्ध से भरे हुए व घृणित हैं वे, जिनकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती । हम लोग सब खून से लथपथ हैं और हमारे सब घाव विपाक्त हो चुके हैं । डैक पर पड़े रहने के कारण हमारी चमड़ी सारी छिल गई है । अपने लिये मुझे कोई चिन्ता नहीं, यह तो.....(अचानक उसका बोल रुक जाता है) घायल व्यक्ति इतना कष्ट कहाँ सह सकते हैं ।

फ्लोरेन्स (दिलासा देती हुई)—ठीक, बिल्कुल ठीक, मुझसे उनकी यह दशा छिपी हुई नहीं है । हम उसे ठीक

करने में प्रयत्नशील हैं। प्रिय, मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि हम जहाजों को भी अपने हाथ में लेंगे। अब मुझे तुम्हारे घावों की देख-रेख करने दो।

ट्रेमेन (धीमे से)—तुम्हारी मेहनत वृथा जावेगी। फ्लोरेन्स..... जहाज का वह सफर। मैं तो बस गया समझो।

फ्लोरेन्स—अभी नहीं। (वह उसकी छाती से कपड़ा अलग करती है। उसका मुख पीका पड़ जाता है, और वह गर्दन घुमा लेती है) डॉक्टर, सेलीना। शीघ्रता करो ! एम्स को बुला लाओ।

(सेलीना शीघ्रता से बुलाने चली जाती है।)

हेनरी, मैं डॉक्टर के आने पर तुम्हारी मरहम पट्टी करूँगी।

ट्रेमेन—फ्लोरेन्स, तुम्हें इसके लिये समय नहीं मिल सकेगा। मैं यहाँ पर मरहम पट्टी करवाने नहीं आया। केवल तुम्हारे दर्शनों के लिये व तुमसे विदा माँगने के लिये।

फ्लोरेन्स—प्रियतम, तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये।

ट्रेमेन—वाद-विवाद करने की मुझमें शक्ति नहीं है।

फ्लोरेन्स—बोलो मत। शान्त हो जाओ, प्यारे।

ट्रेमेन—मेरी शक्ति लोप होती जा रही है, मुझे ऐसा भास हो रहा है.....क्या तुम्हें स्मरण है.....फव्वारा

फ्लोरेन्स ?

फ्लोरेन्स—प्यारे, उसकी सुध न दिलाओ ।

ट्रेमेन—वह खिड़कियों का प्रकाश और घायलों का
अन्दर लाना.....

फ्लोरेन्स—चुप २.....चुप रहो ।

ट्रेमेन (उसे उस क्रीड़ा की सुध आ जाती है) अच्छा,
मैं.....फव्वारे से.....एक प्रश्न पूछूं ?

फ्लोरेन्स (प्यार से)—फव्वारा कहता है पूछो.....
परन्तु प्रिय, अपने को कष्ट मत दो ।

ट्रेमेन—फव्वारे बताओ.....क्या वह वास्तव में मुझे
प्रेम करती थी ?

फ्लोरेन्स—फव्वारा कहता है:—वह तुमसे प्रेम करती
रहेगी और अपने इस अभागो जीवन की अन्तिम घड़ी
तक तुम्हारे लिये तड़पती रहेगी ।

ट्रेमेन—सचमुच ?.....बस मुझे यही सुनना था.....

[सेलीना का प्रवेश]

फ्लोरेन्स—क्या वह आ रहा है ?

सेलीना—मैंने उससे कह दिया है ।

फ्लोरेन्स (ट्रेमेन से)—डॉक्टर बस अभी आता ही
होगा । (एक कार्ड उठा लेती है । चेहरे पर कृत्रिम मुस्कराहट
लाकर वह कहती है) मैं तुम्हारा नाम अस्पताल के रजिस्टर में

दर्ज किये लेती हूँ । नाम हेनरी, पेशा अफसर ?

ट्रेमेन (हंसने का प्रयत्न करता है, साँस ऊपर को आ जाती है) हँसा नहीं जाता, बड़ा दर्द होता है । फ्लोरेन्स, मैं अफसर कहाँ था ? मैं भरती.....इन्करमन की लड़ाई के बाद मैं कॉरपोरल बना दिया गया था ।

फ्लोरेन्स (तफसील लिखती है)—किस विभाग में ?

ट्रेमेन—राइफल ब्रिगेड में ।

फ्लोरेन्स (लिखना जारी रखती है)—क्या इसी नाम से थे, हेनरी ?

ट्रेमेन (किञ्चित् क्रोध से)—हाँ.....इसमें क्या कोई शरम की बात है ?

फ्लोरेन्स—मेरे प्यारे, इस प्रकार तेज न होओ । (कार्ड लाकर उसके बटन को बांधती है) तुम अब भरती कर लिये गये हो । तुम मेरे अपने खास कमरे में रखे जाओगे ।

ट्रेमेन(कुछ ऊँचे स्वर में)—फ्लोरेन्स, कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अच्छा हो जाऊँगा । अचानक मुझमें शक्ति आ गई है ।

फ्लोरेन्स—तुम ठीक कहते हो.....परन्तु अधिक बातें न करो । (दबे हुए स्वर में चिन्ता के साथ) मुझे तो ये अन्तिम साँस दीखते हैं । अकस्मात् तब्दीली हो जाना हमेशा खतरनाक होता है ।.....सेलीना, क्या तुम जल्दी

से डॉक्टर को नहीं ला सकती ?

सेलीना (धीमे स्वर में)—क्या वे उन रोगियों को छोड़ कर आ सकते हैं जो मरने से शायद बच सकें ?
प्यारी, तुम ही बतलाओ ?

फ्लोरेन्स—सदरलैंड जो अभी आये हुए हैं उन्हें बुला लाओ। वह अस्पताल में ही होंगे। उन्हें कोई विशेष काम भी नहीं है। ईश्वर के लिये उन्हें तलाश कर के बुला लाओ।

[सेलीना शीघ्रता से चली जाती है।]

ट्रेमेन—बहुत अँधेरा हो गया है.....

फ्लोरेन्स (बत्ती जलाती हुई)—मेरे प्यारे, अँधेरा अवश्य काफी हो गया है पर अभी बत्ती जलाने पर प्रकाश हो जावेगा।

ट्रेमेन—...हाँ प्रकाश.....(इस शब्द के साथ स्मरण आ जाता है) हे प्रभो, हम धिनती करते हैं कि हमें अँधकार से निकालिये। हे प्रभो.....

फ्लोरेन्स—.....हे प्रभो, दया करो और इस रात्रि में आने वाली आपदाओं से इसकी रक्षा करो (स्वगत) यह मेरी ही करनी है...मैंने ही उसे मृत्यु-मुख तक पहुँचाया है।

ट्रेमेन (उसका मस्तिष्क घूमने लगता है)—सामने की ओर खड़े होओ.....पार्टी ! सीधे खड़े होओ, आराम से

खड़े हो जाओ खाई में ठीक है । मशीनगन के पास जाकर खड़े होओ ... (हाथ पैर मारते हुए) मैं इस पार्टी के साथ में हूँ, या उसके ? कीचड़ खून... .. साजेंट तुम ठीक कहते हो ! तुम्हें याद है वे किस प्रकार चिल्लाये थे जब हम भाले लेकर उनके अन्दर घुस गये थे ? (चिल्लाते हुए) घुसेड़ दो उनके अन्दर । (एक दम शान्त होकर) गरीब विचारे ! यह क्या ? अच्छा पर वे आदमी ही हैं न ? हाँ, तुम्हें ... चिल्लाओ, दाँत पीसो.....

फ्लोरेन्स (सान्त्वना देती हुई)—मेरे प्रिय, शान्त होओ, (चम्मच से कुछ चीज उसके मुह में डालती है) डॉक्टर के आने तक शान्त रहने का प्रयत्न करो ।

ट्रेमेन (अस्पष्ट शब्दों में)—क्या...है.....म.....रा (आँखें बन्द कर लेता है) ।

फ्लोरेन्स (उसे सान्त्वना देने के लिए अपनी शक्ति एकत्रित करती है और साथ ही अपने आपको आश्वासन देने का प्रयत्न करती है)—अब कोई आशा नहीं.....मेरे प्यारे, घबराओ नहीं । तुम्हें पुनः अपने में शक्ति का प्रादुर्भाव करना होगा । प्रिय हेनरी, जब तुम ठीक हो जाओगे और यहाँ का काम निपट जावेगा, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी और जीवन-पर्यन्त तुम्हारी सेवा करती रहूँगी । (पुचकारते हुए) मैं तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैय्यार हूँ । तुम बस जीते

रहो और मुझे अकेली छोड़ कर न चले जाओ । तुम निराश न होओ, हेनरी । हम किसी सुदूर स्थान पर जाकर रहेंगे, और कभी भी एक दूसरे से अलग न होंगे । तुमने मेरे लिये कितनी यातनाएँ सही हैं । मैं आजन्म तुम्हारी दासी बन कर रहूंगी ।.....हे ईश्वर, मुझसे उसे न छीनो.....

[कुछ देर स्तब्धता रहती है, वह अपने नेत्र खोलता है ।

ट्रेमेन (कुछ विचित्र सी दूर से आने वाली आवाज़ में)—
फ्लो, क्या तुम ही हो ? मैं किस स्थान पर हूँ ?

फ्लोरेन्स—सब ठीक है । तुम मेरे पास हो ।

ट्रेमेन (उसका हाथ जोर से अपनी छाती से लगा लेता है) —अँधेरा ही अँधेरा नज़र आ रहा है ।

फ्लोरेन्स—क्या पादरी को बुला भेजूं ?

ट्रेमेन—न, मैं अच्छी तरह हूँ.....फ्लो, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे । (उसके होठों पर खून दौड़ जाता है) पानी । मेरा गला रुन्ध रहा है ।

[पास में मेज पर पड़े हुए गिलास को उठा कर उसे झटपट पानी से भरती है । उसके गिलास लाने से पहिले ही उसका सिर एक ओर लटक पड़ता है । वह मूर्तिवत् खड़ी रह जाती है ।

फ्लोरेन्स (उद्विग्न होकर)—.....हेनरी.....बोलो, ईश्वर के लिये.....(अपने आपको सम्हालती हुई) मेरा कर्तव्य, मुझे अपना कर्तव्य पालन करना है । मरना हम

सबको है मृत्यु केवल रूपान्तर मात्र है । आत्मा का हनन नहीं होता । आह, प्रियतम मेरे सर्वस्व.....

[डॉक्टर सदरलैंड का धक्का देकर एकाएक किवाड़ खोलना ।

डॉ० सदरलैंड—मुझे बुलाया था ? अभी २ मुझे इसकी सूचना मिली है ।

फ्लोरेन्स—अब तो बहुत देर हो गई.....वह मर चुका ।

सदरलैंड (शव के पास जाता है)—ओफ़, वह मर चुका ! (कपड़े हटा कर देखता है) हे ईश्वर ! मरने में आश्चर्य ही क्या था ? (फ्लोरेन्स के मुर्झाये हुए मुख से प्रभावित होकर)

क्या वह आपका मित्र था ?

[मुंह से शब्द नहीं निकलता । गर्दन हिलाकर हामी भरती है ।

स्त्री की कोख से जिसने जनम लिया है उसका मरना जरूरी है । आप इतनी महान स्त्री हैं, आपको इस प्रकार विचलित नहीं होना चाहिये ।

[वह उत्तर नहीं देती ।

आपको दूसरों की भी तो देखभाल करना है—वे कमरों में हैं ।

[वह मशीनवत् अपनी गर्दन हिला देती है ।

कॉरपोरल जोन्स का जल्दी में प्रवेश ।

कॉरपोरल जोन्स—मिस नाईटिंगेल । अँग काटना है । शीघ्रता करो । डा० एम्स ने आपको सहायता के लिये

बुलाया है ।

फ्लोरेन्स—... . मैं आ रही हूँ कह दो ।

[वह लौट जाता है ।

सदरलैंड (धीमे से)—वह एक वीर स्त्री है ।

[वह लालटेन उठा लेती है और धीरे धीरे दरवाजे की ओर
कदम बढ़ाती है ।

फ्लोरेन्स (दरवाजे में घूम कर)—प्रियतम, बिदा ।

[वह वीरतापूर्वक चली जाती है ।

[पर्दा गिरता है]

॥ दूसरा अंक समाप्त ॥



तीसरा अंक

दृश्य पाँचवां

दृश्य—ओल्ड ब्रिलिंग्टन स्ट्रीट का एक कमरा ।

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल अपनी पार्टी के साथ जब क्रीमिया के लिये रवाना हुई थी उस घटना को आज सात वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, हेनरी ट्रेमेन की मृत्यु को छै वर्ष, और क्रीमिया की लड़ाई समाप्त हुए पाँच वर्ष हो गये हैं । घोर परिश्रम के वे वर्ष । तपस्या का वह जीवन ।

इकतालीस वर्षीया फ्लोरेन्स की शक्ति व मानसिक विकास अपनी प्रौढ़ावस्था को पहुँच चुके हैं । युद्ध में जो २ कठिनाइयाँ उसे भुगतनी पड़ी हैं उनके कारण उसका स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ चुका है, कभी २ तो उसके जीवन की ओर से निराश हो जाना पड़ता है । १८५५ में जब वह बालकलावा अस्पताल व खाइयों को देखने गई थी, तो मरते मरते बची । वहाँ से लौटने के पश्चात भी वह एक के बाद एक संघातक रोगों से मरते २ बची है । स्कुटारी के युद्धक्षेत्र में जो भूलें हुईं और जिनके कारण ब्रिटिश सैनिकों को घोर यातनायें भुगतनी पड़ीं वे भविष्य में फिर से दुहराई न जावें यही उसके जीवन का उद्देश्य है, और जब तक

शरीर में प्राण है और मनुष्य मात्र के बस की बात है वह अपनी सारी शक्ति को व गत अनुभवों को प्रयोग में लाकर उसी के लिये प्रयत्न करती रहेगी ।

इकतालीस वर्षीया फ्लोरेन्स जो अपने मानसिक विकास की उन्नत अवस्था को पहुँच चुकी है, फव्वारे पर की उत्सुक लड़की से अथवा शोकाकुल स्त्री से जिसने अपने प्रेमी को अपने सामने प्राण छोड़ते देखा है, कुछ भी समता नहीं रखती । अपने शरीर की ओर से सदा उदासीन रहने के कारण, उन लोगों से जो शरीर की अस्वस्थता के कारण अपने कर्तव्य से विमुख होना चाहते हैं वह धृणा करने लग गई है । सात वर्ष के कठोर ब्रह्मचर्य के कारण उसकी मुखकृति सन्यासियों के सदृश हो गई है, उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ चुकी हैं, और विनोद-वृत्ति का स्थान तीव्र कठोरता ने ले लिया है ।

इकतालीस वर्षीया फ्लोरेन्स कदाचित् इङ्ग्लैंड के प्रभावशाली व्यक्तियों में मानी जाती है । मन्त्री-मण्डल उसकी आज्ञा पर चलता है । महारानी उसे युद्ध-विभाग में लेने के लिये अपनी इच्छा प्रकट कर चुकी हैं । लॉर्ड पामस्टन, देश के पूज्य और स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति जिनकी उमर सत्तर साल की है और जो दुबारा ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री के पद पर हैं, फ्लोरेन्स के जबरदस्त सहायकों में से हैं । आप तक उसकी पहुँच है और वह केवल अपनी आज्ञा से ही उसकी बनाई हुई स्कीमों पर काम करने को

प्रस्तुत रहते हैं। लेडी पामस्टन उससे इतनी सहानुभूति नहीं रखती। स्त्रियाँ आने पतियों के ऊपर अन्य स्त्रियों का प्रभाव नहीं सहन कर पातीं, चाहे सम्बन्ध विषय-वामना से कितना भी रिक्त क्यों न हो। फ्लोरेन्स के प्रभाव को ईर्ष्या की दृष्टि से देखने वाली केवल लेडी पामस्टन ही नहीं है, बल्कि लेडी हर्वर्ट ऑफ ली भी है जो कि फ्लोरेन्स के रंग-दंग को बड़े गौर से देखती आ रही है। और जो स्कुटारी की इस वीरांगना का अपने स्वामी पर बढ़ता हुआ प्रभाव देख कर केवल चिन्तित ही नहीं बल्कि भयभीत भी रहने लग गई है।

सिडनी हर्वर्ट का स्वास्थ्य बिगड़ चुका है। फ्लोरेन्स को प्रसन्न रखने के लिये अपनी अनिच्छा रहते हुए भी, अभी हाल ही में, युद्ध-विभाग के मन्त्री पद पर कायम रहने के लिये, उन्होंने हाऊस ऑफ कॉमन्स को छोड़ कर हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में अपना नाम लिखवा लिया है। उनकी अपनी इच्छा मन्त्री-पद को त्यागने की थी। वह केवल एक सदस्य बन कर ही रहना चाहते थे। उनकी पत्नी चाहती थी कि वह सार्वजनिक संस्थाओं में भाग लेना छोड़ दें, और अपने स्वास्थ्य को सुधारने की ओर अधिक ध्यान दें..... इतना होते हुए भी उसने फ्लोरेन्स को हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में उनकी नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में धन्यवाद सूचक एक पत्र लिख दिया। निर्दयी फ्लोरेन्स तो यहाँ तक चाहती थी कि वह हाऊस ऑफ कॉमन्स में ही रह कर

युद्ध-विभाग में काम करते रहें ।

ग्रीष्म का एक सुहावना दिन । फ्लोरेन्स को सरकार पर अपना प्रभाव कायम किये आज पाँच वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । उसकी अब यह इच्छा है कि युद्ध-विभाग में पूर्णतः सुधार कर अपनी आज तक की सफलता को एक स्थायी रूप दे सके । उसके विभाग के विशेषज्ञों की कुछ ही मिनटों में बैठक होने वाली है, जिसका कार्य यह होगा कि सिडनी हर्बर्ट के लिये एक मसविदा तैयार किया जावे जो मन्त्री-मंडल की अगली बैठक में पेश हो । फ्लोरेन्स इस विषय में डॉक्टर सदरलैंड से सलाह कर रही है । डॉक्टर सदरलैंड क्रीमिया के युद्ध के पश्चात् से उसके सलाहकार की हैसियत से काम कर रहे हैं । वे दोनों अभी २ आवश्यक पत्रों को एकत्रित कर चुके हैं ।

फ्लोरेन्स—सब ठीक है ! सन्देह के लिये उसमें कोई स्थान नहीं है । केवल सिडनी के हस्ताक्षरों की कमी रह गई है, वरन् सब ठीक हो चुका है ।

सदरलैंड—बिल्कुल, पर.....।

फ्लोरेन्स—क्यों स्कॉटी, क्या तुम्हें सन्देह है कि सिडनी हर्बर्ट हमें धोका दे जावेंगे ?

सदरलैंड—मेरा यह आशय नहीं । परन्तु वह दुर्बल होते जा रहे हैं, उनका स्वास्थ्य गिर रहा है । यह एक आश्चर्य की बात है कि इतनी अस्वस्थता की हालत में

भी वह हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में गये हैं। अवश्य ही कोई विशेष कारण होना चाहिये।

फ्लोरेन्स—हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में वह इसलिये गये हैं कि हमारे इस काम की पूर्ति हो सके। वह इस काम को अधूरा नहीं छोड़ना चाहते। छै महीनों में.....

सदरलैंड—छै महीनों में न जाने क्या का क्या हो जावे।

फ्लोरेन्स—अच्छा जो कुछ भी हो।.....आज उनसे भेंट होगी, कल अधिक दूर तो नहीं है। आर्मी एप्रोप्रियेशन बिल (Army Appropriation Bill) के सिलसिले में कल वह हमारी स्कीम को हाऊस के सामने रखेंगे। हमें शुभ ही सोचना चाहिये। अगले सप्ताह में, पहिले ही तैय्यार किये हुए कुछ प्रश्नों के उत्तर में, वह सुधार पर बोलेंगे, और छै महीनों में स्कॉटी.....

[दासी का प्रवेश।

दासी—मैडम, लेडी हर्वर्ट ऑफ ली आपसे मिलने आई हैं।

फ्लोरेन्स—लेडी हर्वर्ट। क्या तुम्हारा तात्पर्य लॉर्ड हर्वर्ट से है।

दासी—नहीं, मैडम। लेडी हर्वर्ट ही हैं

फ्लोरेन्स—अच्छा, उन्हें अन्दर लिवा लाओ।

[दासी चली जाती है ।

फ्लोरेन्स—क्यों स्कॉटी, यह क्या ? वह तो महीनों से कभी इधर नहीं आई । कदाचित वह सोचने लगी है..... कि मेरा प्रभाव बहुत है । क्या वह.....कुछ बाधा डालना चाहती है ? तुम्हारा क्या ख्याल है ? (कजोरता से) उसके लिये यह अच्छा न होगा ।

सदरलैंड (रुद्धता से)—व्यर्थ की कल्पित बातों से मैं तुम्हारे मन को दुःखित क्यों करूँ ? वह तुम्हारी सहेली भी तो है, शायद वह वैसे ही सहेली की हैसियत से आई होगी ।

फ्लोरेन्स—मेरी तसल्ली नहीं होती । मुझे क्रीमिया पहुंचे अभी पन्द्रह दिन भी नहीं हुए थे कि मेरे काम में विघ्न डालने के लिये नर्सों का एक दूसरा दल युद्ध-स्थल पर रवाना कर दिया गया था । यद्यपि वहां का सारा काम मेरे हाथों में सौंपा गया था फिर भी यह दूसरी पार्टी डाक्टर क्यूमिंग की—जो मेरे प्रमुख विरोधियों में से थे—देख रेख में भेजी गई थी । मेरा तो यह सन्देह बना हुआ है कि यह काम मेरे किसी.....विरोधी का था ।

सदरलैंड (अशिष्टता से)—ऐसी व्यर्थ की बातों से मैं तुम्हारा दिमाग खराब नहीं करना चाहता । वह तुम्हारे लिये उतनी ही लगन से काम करते आये हैं जितनी से मैं करता आया हूँ ।

फ्लोरेन्स—भीरु प्रकृति हर्वर्ट ... वह तभी तक ठीक है जब तक मेरी निगाह में रहता है। परन्तु वह निर्बल, कानों का कच्चा है। दूसरों की बातों में जल्द आ जाता है..... पता नहीं क्यों मेरा दिल काँपता है।

[दासी का प्रवेश।

दासी—मैडम, लेडी हर्वर्ट ऑफ ली आ गई हैं।

[एलिजाबेथ हर्वर्ट अन्दर आती है। समय ने उसके साथ ज़रूरत से ज़्यादा रियायत की है। वह इस समय ३५ वर्ष की उमर में भी उतनी ही सुन्दर लग रही है जितनी कोई षोड्प वर्षीया युवति हो।

एलिजाबेथ (उसके तीव्र आलिङ्गन में कुछ दया, विरोध, भय और कपटता है)—प्यारी फ्लो.....

फ्लोरेन्स—कहो एलिजाबेथ, कैसी हो ?

एलिजाबेथ—मारे काम के परेशान। तुम नहीं जानती काम काज के दिन होने के कारण छुटकारा नहीं होता। और भी कई कारण हैं। प्यारी, तुमसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

फ्लोरेन्स—डॉक्टर सदरलैंड से तो तुम परिचित हो ही।

एलिजाबेथ—क्यों नहीं। डॉक्टर सदरलैंड, आप अच्छी तरह से तो हैं ? क्यों फ्लोरेन्स, तुम कल रानेलॉ पर नहीं थी ? तुम्हें वहां जाने से क्या प्रयोजन। तुम उत्सवों

के भगड़ों में अपनी शक्ति नष्ट नहीं करना चाहती ।
मन्त्रि-मंडल में होते हुए तो गये बगैर सरता ही नहीं ।

फ्लोरेन्स—ठीक कह रही हो, एलिजाबेथ.....अच्छा
तो क्या तुम उत्सव में जा रही हो ?

एलिजाबेथ—नहीं प्यारी, नहीं ! इन दिनों में (Season)
हमें बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है । मेरी स्पा की
तैयारी है.....तुम जानती हो न, स्पा जर्मनी में है ।

फ्लोरेन्स—हां, स्पा से मैं परिचित हूं ।

एलिजाबेथ—मैंने सिडनी को भी अपने साथ चलने
के लिये तैयार कर लिया है ।

फ्लोरेन्स—कब ?

एलिजाबेथ—यही पांच-सात दिनों तक ।

फ्लोरेन्स—क्या उन्होंने ही तुम्हें मेरे पास यह समा-
चार देने के लिये भेजा है ?

एलिजाबेथ—इससे तुम्हारा आशय .. फ्लोरेन्स ?

[वाक्-युद्ध शुरू हो जाता है, दोनों आमने सामने तन कर
खड़ी हो जाती हैं ।

सदरलैंड (परेशान होता है)—मेरा आज शाम के लिये
जो डाफ्ट चाहिये वह अभी तैयार नहीं हुआ । क्षमा करना,
मुझे अधिक समय नहीं लगेगा ।

[उन दोनों में से किसी के कुछ कहने से पहिले ही वह

कमरे से बाहर चला जाता है ।

एलिजाबेथ—यह भी अच्छा ही हुआ । अब हम खुल कर बातें... कर सकेंगी ।

फ्लोरेन्स—मैं कोई बात छिपाना नहीं जानती । अच्छा, तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ।

एलिजाबेथ—मेरे स्वामी से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर देना क्या जरूरी है ?

फ्लोरेन्स—तुमने जो सूचना मुझे दी है, उसका आरम्भ कहां से हुआ है यह जानने का मुझे अधिकार है ।

एलिजाबेथ—सिडनी को डॉक्टरों ने यह राय दी है ।

फ्लोरेन्स (फीकी पड़ जाती है)—डॉक्टरों की सम्मति है ?

एलिजाबेथ—मन्त्रि-पद से उन्होंने इस्तीफा दे दिया है ।

फ्लोरेन्स (सारे शरीर में बिजली सी दौड़ जाती है)—और मुझे उसकी सूचना देने के लिये तुम्हें भेजा गया है ।

एलिजाबेथ—फ्लोरेन्स, तुम मेरा और उनका सम्बन्ध भूल रही हो । मैं उनकी पत्नी हूँ ।

फ्लोरेन्स—त्याग-पत्र कब दिया ? वह आज यहां आने वाले थे । तुम यहां पड़े हुए ये कागज और किताबों के ढेर देख रही हो । उन्हीं के लिये ही हमने यह सब कुछ किया था, इसका सारा श्रेय उन्हें मिलेगा । सेना-विभाग में

भी जो २ सुधार होंगे, उन सब का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त होगा। इसी लिये सब कुछ गुप्त नाम पर किया गया है। स्वेच्छा से व प्रसन्नता-पूर्वक मैंने इन सब कागजों को देखा है। उन्हें आधुनिक काल के युद्ध-विभाग के मन्त्रियों में प्रमुख स्थान दिया गया है। मुझे यह जान कर कितना आनन्द होता था कि उनके द्वारा अपने पवित्र उद्देश्य की पूर्ति का हमें अवसर मिल रहा है जिसका सारा सम्मान उन्हें मिलेगा। हम सोचते थे कि वृद्ध लॉर्ड पामस्टन के स्थान पर अर्थात् प्रधान मन्त्री के पद पर आप किसी दिन सुशोभित होंगे, और उनके इस महत् पद की प्राप्ति में हमारा हाथ होगा। हमारा नेता ! हम विजय की अन्तिम सीढ़ी पर थे। केवल एक प्रयत्न की और आवश्यकता थी, फिर वह आराम करते। (कठोरता से) और तुम मुझे यह सुनाती हो कि डॉक्टरों की ऐसी आज्ञा है। सात वर्ष से डाक्टरों ने मुझे भी ऐसी ही आज्ञा दे रखी है। उनके कथनानुसार तो मैं कब की मर चुकी हूँ, और दफना भी दी गई हूँ। डॉक्टर सदरलैंड भी यही कहते हैं कि इतना काम तुम्हारे प्राणों तक को भी हर लेगा। परन्तु मैं आज भी अपने काम पर हूँ। दिन-रात एक कर काम कर रही हूँ। फिर भी मैं एक स्त्री हूँ, और तुम मुझे यह सूचना देने आई हो कि हमारा नेता जिस पर हम अपना सब कुछ न्योछावर कर चुके हैं,

एक कायर लड़के की तरह दौड़ के मैदान से भाग निकला है। वह भी उस समय जब फासला लग-भग तय हो चुका है।

एलिजाबेथ—तुम्हें ऐसा कहने का क्या अधिकार है ? उन्हें बेवसी से छोड़ना पड़ रहा है। वह काम के भार से मर रहे हैं।

फ्लोरेन्स—मान भी लिया जावे कि मुझे, उन्हें, तुम्हें या और किसी को अपना कर्तव्य निभाते हुए प्राणों से हाथ धोना पड़े, पर परिणाम उसका कितना महत् होगा। अस्वस्थता का बहाना कर अपने महान उद्देश्य को छोड़ कर कलंकित होने से क्या मर जाना अच्छा नहीं है ? क्या काम को आरम्भ कर के उसे बीच में छोड़ देने से यह अच्छा नहीं कि काम शुरू ही न किया जावे ? तुम्हें यह समझना चाहिये था कि यह काम सिडनी के नाम पर किया जा रहा है। अब उनके हट जाने पर कौन इस काम के बोझ को अपने सिर पर लेगा ? इन पुरुषों से और आशा भी क्या की जा सकती है ?

एलिजाबेथ—स्त्रियों की भी कौन कहे, अपना मतलब हल करने के लिये कौन सा काम उनसे बचा रहता है। यह सुधार है क्या बला ! किनका पक्ष लेकर तुम आगे आना चाहती हो ?

फ्लोरेन्स—मैं उनका पक्ष लिये हूँ, जिन्होंने पिछली लड़ाई में मेरे हाथों में अपने प्राण छोड़े हैं।

एलिजाबेथ (घबरा कर)—युद्ध ! वह तो कभी का निपट चुका।

फ्लोरेन्स—आगे होने वाले के लिये।

एलिजाबेथ—प्यारी फ्लो.....पगली न बनो। लोगों को अब युद्ध में विश्वास नहीं रहा।

फ्लोरेन्स—इसी लिये मैं उनका पक्ष ले रही हूँ, एलिजाबेथ ! सब भूल चुके हैं, परन्तु मैं नहीं भूली। युद्ध में जिन सैनिकों ने और घायल व्यक्तियों ने हंसते २ प्राण दिये हैं वे मेरे लिये आदेश छोड़ गये हैं—कायदे और कानून का दम भरने वाले अफसरों की भूलों के कारण देश के लिये प्राण देने वाले घायल सैनिकों को आगे के लिये ऐसी यातनाएँ सहन न करनी पड़ें।

एलिजाबेथ—क्या यह सत्य है कि तुम उनका पक्ष लेकर आगे आ रही हो ? नहीं, तुम अपने वृथा के अभिमान के लिये झगड़ रही हो। उस थोथे अभिमान के लिये जिसने हेनरी ट्रैमेन को मृत्यु-मुख में भेजा।

फ्लोरेन्स—तुमने हेनरी ट्रैमेन के बारे में किससे जाना ?

एलिजाबेथ—क्या वह उन देश-भक्तों में से नहीं था जो तुम्हारे हाथों में मर चुके हैं ?

फ्लोरेन्स—क्या सिडनी ने यह सब तुमसे कहा है ?
मैं यह भूल गई थी कि पति-पत्नी में कोई बात बिना एक
दूसरे के जाने नहीं रह सकती । मैं सैमसन व डेलीलाह
का किस्सा भूल गई थी ।

एलिजाबेथ—फ्लोरेन्स, तुम्हारा यह कहने का साहस
कैसे हुआ ?.....क्षमा करो । मैंने तुमसे यह कह कर
भूल की ।

फ्लोरेन्स (तीव्र स्वर में)—मैं तुम्हें दोष नहीं देती,
एलिजाबेथ । जीवन क्या वस्तु है यह तुम नहीं जानती ।
इसमें तुम्हारी भूल भी क्या है । जिस वातावरण में हमारा
लालन-पालन होता है उस वातावरण में पली हुई स्त्रियों
का मन भोग-विलास की वस्तुओं के अतिरिक्त और आगे
कहां बढ़ सकता है ? परन्तु सिडनी का अलग होना । ओफ्
वह कितना दुखद है.....तुम्हें पता है युद्ध में एक सिपाही
अगर किसी बहाने अपने काम से अलग होता है तो उसके
लिये क्या सजा है ? केवल क्षमा मांग लेने से या अस्वस्थता
का बहाना करने से वह दोष-मुक्त नहीं हो सकता । सुबह की
कड़केदार सर्दी में उसकी कबर के पास ही उसे गोली से
उड़ा दिया जाता है । आश्चर्य की बात यह है कि मृत्यु-दण्ड
पर राज्य-सचिव अपने हस्ताक्षर करता है ।

एलिजाबेथ—उसकी इससे क्या तुलना । तुम हमेशा

ही बात का बतंगड़ बना लेती हो। इस प्रकार की बातें करना बेवकूफी है।

फ्लोरेन्स—ऐसा क्यों ? इसलिये कि एक तो कुपड़ और पराधीन है, उसे जो भी कहा जावे मानना पड़ेगा; और दूसरा राज्य का एक बड़ा कर्मचारी है जिस पर देश के भले बुरे का उत्तरदायित्व है ?

एलिज़ाबेथ—फ्लोरेन्स, छिपाने की अब आवश्यकता नहीं। तुम महत्वाकांक्षी हो और तुम्हारे प्रतिकूल अगर कोई काम होता है तो तुम्हें चोट पहुँचती है। प्यारी, विवेकशील बनो ! सिडनी का स्वास्थ्य ठीक हो जाने दो। तत्पश्चात् शायद वह दुगुने उत्साह से इस काम को अपने हाथ में ले सकेंगे।

फ्लोरेन्स (उग्रता से)—नये सिर से ? क्या यह कभी सम्भव है कि अपने स्थायी कर्म-चारियों से घबरा कर इस पद को अब छोड़ कर जाने से उन्हें वही सम्मान फिर मिल सकेगा ? यह क्या कोई समय छोड़ कर जाने का है ? स्कुटारी के अस्पतालों में कुप्रबन्ध के कारण जो बेइज्जती सहनी पड़ी थी, उससे क्या यह कम शरम की बात है ? एलिज़ाबेथ, तुमने यह भी सोचा है कि किस प्रकार वह हम सबको नीचे ढकेल रहे हैं ? जीती हुई बाजी के पत्ते फेंक रहे हैं। वह क्यों नहीं इसे निपटा कर चले जाते ?

एलिजाबेथ—क्योंकि वह अपना त्याग-पत्र भेज चुके हैं। वह अब राज्य-सचिव (Secretary of State) नहीं रह गये। यह मैं तुम्हें बतला ही चुकी हूँ।

फ्लोरेन्स—तुमने उन्हें बाध्य किया होगा ?

एलिजाबेथ—अवश्य।

फ्लोरेन्स—उनके काम का तुमने कोई ख्याल न किया ?

एलिजाबेथ—इसके विपरीत। मेरे सम्मुख उनके काम से उनके स्वास्थ्य का अधिक मूल्य है। मैं सिडनी को महान् व्यक्ति के रूप में देखना चाहती हूँ। परन्तु उससे कहीं अधिक अपने स्वामी को स्वस्थ और चिरजीवी बनाना चाहती हूँ।

फ्लोरेन्स—क्या लॉर्ड पामस्टन उनका त्याग-पत्र स्वीकार कर चुके हैं ?

[एलिजाबेथ कोई उत्तर नहीं देती।

कदाचित् अभी काम बिगड़ा नहीं.....

एलिजाबेथ—.....फ्लोरेन्स, तुम्हें अब इसमें दखल नहीं देना चाहिये।

फ्लोरेन्स—जिस दिन तुमने मुझे हार्ले स्ट्रीट में क्रीमिया जाने से रोका था, उसी दिन से मुझे कुछ संदेह है कि तुम हम दोनों का साथ २ काम करना सह नहीं सकती।

एलिजाबेथ (बिना किसी हिचकिचाहट के)—मैं नहीं चाहती थी कि तुम क्रीमिया जाओ। मैं शुरू से ही तुमसे डरती रही हूँ, और सिडनी से तुम्हारी . . . घनिष्टता ही मेरे संदेह का कारण है।

फ्लोरेन्स—... . इससे तुम्हारा तात्पर्य ?

एलिजाबेथ—इससे तुम कुछ और ही न समझ बैठना। जब इटली में तुमसे मैं सर्व प्रथम मिली थी..... मुझे कुछ संदेह हुआ था। परन्तु मैं तभी जान गई थी कि तुम्हारा प्रेम विषय-जन्य नहीं है.....अगर ऐसा होता तो अच्छा ही था, और स्वाभाविक व विश्वास के योग्य भी होता। तुम्हारे हाथों की कठपुतली बन कर इस तरह वह मृत्यु-मुख की ओर न बढ़ते.....अतिरिक्त इसके मैं, प्रयत्न कर, तुम्हारी ओर से उन्हें अपनी ओर खींच ही लेती।

फ्लोरेन्स (विनम्र स्वर में)—प्यारी लिज, मुझे इसके लिये बड़ा दुःख है। पुरुषों को घरों से अलग न करने में भी कितनी कठनाइयाँ सहन करनी पड़ जाती हैं।

एलिजाबेथ—तुम्हें ऐसा कहना शोभा नहीं देता।

फ्लोरेन्स—मेरा यह मतलब नहीं था। वास्तव में मुझे बहुत दुःख है। मुझे मृत्यु का कभी भय नहीं हुआ, और मेरी यह समझ में नहीं आता कि लोग मृत्यु से क्यों डरते हैं। क्या सिडनी का स्वास्थ्य इतना गिर चुका है..... ?

मुझे तो इस पर विश्वास नहीं होता ।

एलिज़ाबेथ—शायद तुम यह समझती होगी कि सिडनी के मुझे वचन दे देने पर भी तुम उनको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपनी तरफ खींच सकती हो । अच्छा, प्रयत्न करके देख लो ।

फ्लोरेन्स—मुझे अब जरूरत नहीं, और न ही उन्हें अपनी ओर खींचने का कोई विचार है । मेरा काम ऐसे दुर्बल-हृदय व्यक्ति के हाथ में सौंप देने से बहुत अधिक मूल्यवान है ।

[एलिज़ाबेथ यह सुन कर चकरा जाती है ।

तुम जर्मनी में अपने दिन अच्छी तरह बिताओ, यही मेरी इच्छा है । और वहाँ से लौटने पर कदाचित् सिडनी हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में पहुँचें तो कभी २ हमारे उद्देश्य को भी प्रकट करते रहें....अच्छा, नमस्ते ।

एलिज़ाबेथ—पर, प्यारी फ्लो.....तुम नहीं जानती मुझे तुम पर कितना अभिमान है, और मैं तुम्हें कितने पूज्यभाव से देखती हूँ । परन्तु सिडनी को मैं बहुत अधिक चाहती हूँ । मैं उनका गिरा हुआ स्वास्थ्य नहीं देख सकती । तुमने उन पर जो २ उपकार किये हैं और जिस निष्काम भावना से उनका साथ देती आई हो यह मुझसे छिपा हुआ नहीं है । क्या ही अच्छा होता कि मैं भी इसी

एलिजाबेथ (बिना किसी हिचकिचाहट के)—मैं नहीं चाहती थी कि तुम क्रीमिया जाओ। मैं शुरू से ही तुमसे डरती रही हूँ, और सिडनी से तुम्हारी . . . घनिष्टता ही मेरे संदेह का कारण है।

फ्लोरेन्स—... इससे तुम्हारा तात्पर्य ?

एलिजाबेथ—इससे तुम कुछ और ही न समझ बैठना। जब इटली में तुमसे मैं सर्व प्रथम मिली थी..... मुझे कुछ संदेह हुआ था। परन्तु मैं तभी जान गई थी कि तुम्हारा प्रेम विषय-जन्य नहीं है.....अगर ऐसा होता तो अच्छा ही था, और स्वाभाविक व विश्वास के योग्य भी होता। तुम्हारे हाथों की कठपुतली बन कर इस तरह वह मृत्यु-मुख की ओर न बढ़ते.....अतिरिक्त इसके मैं, प्रयत्न कर, तुम्हारी ओर से उन्हें अपनी ओर खींच ही लेती।

फ्लोरेन्स (विनम्र स्वर में)—प्यारी लिज्ज, मुझे इसके लिये बड़ा दुःख है। पुरुषों को घरों से अलग न करने में भी कितनी कठनाइयां सहन करनी पड़ जाती हैं।

एलिजाबेथ—तुम्हें ऐसा कहना शोभा नहीं देता।

फ्लोरेन्स—मेरा यह मतलब नहीं था। वास्तव में मुझे बहुत दुःख है। मुझे मृत्यु का कभी भय नहीं हुआ, और मेरी यह समझ में नहीं आता कि लोग मृत्यु से क्यों डरते हैं। क्या सिडनी का स्वास्थ्य इतना गिर चुका है..... ?

मुझे तो इस पर विश्वास नहीं होता ।

एलिजाबेथ—शायद तुम यह समझती होगी कि सिडनी के मुझे वचन दे देने पर भी तुम उनको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपनी तरफ खींच सकती हो । अच्छा, प्रयत्न करके देख लो ।

फ्लोरेन्स—मुझे अब जरूरत नहीं, और न ही उन्हें अपनी ओर खींचने का कोई विचार है । मेरा काम ऐसे दुर्बल-हृदय व्यक्ति के हाथ में सौंप देने से बहुत अधिक मूल्यवान है ।

[एलिजाबेथ यह सुन कर चकरा जाती है ।

तुम जर्मनी में अपने दिन अच्छी तरह बिताओ, यही मेरी इच्छा है । और वहाँ से लौटने पर कदाचित् सिडनी हाऊस ऑफ लॉर्ड्स में पहुँचें तो कभी २ हमारे उद्देश्य को भी प्रकट करते रहें.....अच्छा, नमस्ते ।

एलिजाबेथ—पर, प्यारी फ्लो.....तुम नहीं जानती मुझे तुम पर कितना अभिमान है, और मैं तुम्हें कितने पूज्यभाव से देखती हूँ । परन्तु सिडनी को मैं बहुत अधिक चाहती हूँ । मैं उनका गिरा हुआ स्वास्थ्य नहीं देख सकती । तुमने उन पर जो २ उपकार किये हैं और जिस निष्काम भावना से उनका साथ देती आई हो यह मुझसे छिपा हुआ नहीं है । क्या ही अच्छा होता कि मैं भी इसी

निःस्वार्थ भाव से तुम्हारा साथ दे सकती । परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती, मैं असमर्थ हूँ ।

फ्लोरेन्स—नहीं, लिज़, तुमसे यह नहीं हो सकता, और तुम्हें प्रयत्न भी नहीं करना चाहिये ।

एलिज़ाबेथ—तुम.....बुरा न मानना ?

फ्लोरेन्स (घबरा कर)—मानने, न मानने से क्या होगा ?

[दरवाजा खटखटाने की आवाज़ होती है ।

कौन है ?

[दासी का प्रवेश ।

दासी—लॉर्ड हर्बर्ट आए हैं ।

फ्लोरेन्स—उन्हें शीघ्र बुला लाओ ।

[दासी का प्रस्थान ।

एलिज़ाबेथ (चिन्तित होकर)—तुम उनसे क्या कहना चाहती हो, फ्लोरेन्स ?

फ्लोरेन्स—कुछ नहीं ।

[दरवाजा खुलता है और लॉर्ड हर्बर्ट अन्दर आते हैं । वह अस्वस्थ प्रतीत होते हैं ।

हर्बर्ट—आह ! (कृत्रिम हंसी से) लिज़, तुम ?

[वह प्रश्नार्थक दृष्टि से दोनों की तरफ देखते हैं ।

फ्लोरेन्स—अच्छा, सिडनी तुम स्पा जा रहे हो । तुम्हारी अस्वस्थता का सुन कर बहुत दुःख होता है । तुम्हारे

लिये वहाँ जाना ही सर्वोत्तम है ।

हर्बर्ट—क्या तुम्हारा भी यही विचार है ?

फ्लोरेन्स (धीरे से)—मेरी अपनी तो यही राय है.....
क्या लॉर्ड पामस्टन ने तुम्हारी जगह कोई दूसरा आदमी
नियुक्त कर दिया है ?

हर्बर्ट—तुम्हें यह कैसे विदित हुआ कि मेरी जगह
और कोई नियुक्त किया जा रहा है ।

एलिजाबेथ—मैंने बतलाया है ।

फ्लोरेन्स—अच्छा होता कि मैं यह तुम्हारे मुख से ही
जान पाती । पर ऐसा नहीं हुआ.....अच्छा, कौन नियुक्त
किया गया है ?

हर्बर्ट—मेरे ख्याल से, सर जॉर्ज लुई ।

फ्लोरेन्स (व्यङ्ग से)—बहुत खूब ! आप लैटिन में
कविता बहुत ही सुन्दर ढंग से लिखते हैं, पर सफाई के
विषय में कुछ नहीं जानते । हमारा काम तो उनके राज में
बड़ी उन्नति करेगा !

हर्बर्ट—तुम्हें अधिक बुरा तो नहीं लग रहा ?

फ्लोरेन्स—कम या ज्यादा ? मुझे बुरा क्यों लगने लगा ?

एलिजाबेथ (जल्दी से)—सिडनी, फ्लोरेन्स ने अपने
इन विचारों को कितना पसन्द किया है ।

हर्बर्ट—मैं अपने काम को बीच में ही छोड़ रहा हूँ ।

एलिजाबेथ—मैं जाती हूँ ताकि आप लोग अच्छी तरह बातचीत कर सकें ।

फ्लोरेन्स—लिज्ज, तुम्हें जाने की क्या जरूरत है । हमें ऐसी बातें ही कौनसी करनी हैं ।

एलिजाबेथ—मेरी इच्छा है.....मेरा विश्वास है कि तुम इन्हें किसी मूर्खता के काम के लिये प्रोत्साहन नहीं दोगी ।

फ्लोरेन्स (गुस्से में आकर)—क्या हमारे कार्य का तुम्हारे सामने यही महत्व है ? मूर्खता का काम ?

एलिजाबेथ—मेरा यह तात्पर्य नहीं था । काम फिर किसी तरह का भी हो इनके लिये कष्टप्रद ही होगा..... अच्छा, प्यारी मैं तुमसे बिदा लेती हूँ । जब हम वापिस आयेंगे तब तुमसे भेंट होगी ।

[वह चली जाती है । थोड़ी देर रुकने पर ।

हर्बर्ट (उदासीनता से)—वह ठीक कहती है । मुझे अब किसी भी काम में आनन्द नहीं आता.....मैं कोई भी काम नहीं कर सकता ।

फ्लोरेन्स—क्या तुम अपने आपको उसके योग्य नहीं पाते ?

हर्बर्ट—इसका कारण अयोग्यता नहीं । मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे अन्दर से कुछ लोप हो गया है ।

फ्लोरेन्स, मैं अब वापिस नहीं आ सकूंगा। इस बात को लिज्ज नहीं जानती। उससे कहना भी नहीं।

फ्लोरेन्स—तुम यह क्या कहते हो ?

हर्बर्ट—मैं एक महीने से अधिक जीवित न रह सकूंगा।

फ्लोरेन्स (विनीत स्वर में परन्तु अविश्वास करते हुए)—
क्या यह भी डाक्टर की आज्ञा है ? घबराओ नहीं, सिडनी।
डॉक्टर मेरे लिये भी कई वर्षों से यही कहते आये हैं।
परन्तु मैं तो अभी तक जीवित हूँ।

हर्बर्ट—मैंने कई बार प्रयत्न किया है, फ्लोरेन्स। परन्तु
आज सुबह मैं बेसुध हो गया था। सीढ़ियों पर चढ़ते २ मैं
बेहोश हो गया था।

फ्लोरेन्स (कठोरता से)—मैं जानती हूँ, मेरे साथ भी
कई बार इसी प्रकार बीता है।

हर्बर्ट—तुम्हारे आदमियों से मिलने की तो मेरे लिये
कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

फ्लोरेन्स—क्या लाभ होगा.....हमें अब नये सिरे
से सब कुछ करना पड़ेगा।

[कुछ देर के लिये दोनों चुप रहते हैं।]

हर्बर्ट—अच्छा, तो अब मुझे जाना चाहिये। विदा...

फ्लोरेन्स—यह मेरे जीवन की असीम दुःख की
घड़ी है। जब कि विचारे हेनरी की मृत्यु हुई थी तो मेरे

सम्मुख मेरा कार्य था । अब मेरे सारे किये पर पानी फिर गया...मेरे कार्य का भी अन्त दिखाई दे रहा है..... तो भी जीवन का कुछ उद्देश्य अवश्य है ।

हर्बर्ट (प्रभावित होकर)—विचारी फ्लोरेन्स.....अपना सम्मिलित काम.....

फ्लोरेन्स—मैं निरुत्साह नहीं होंगी । मैं अकेली ही इस भार को वहन करूँगी । सिडनी, नमस्ते । मेरे प्यारे, ईश्वर तुम्हें स्वास्थ्य लाभ करे । जो कुछ भी तुमने किया उसके लिये तुम्हें अनेकों धन्यवाद । ईश्वर तुम्हें चिरायु करे ।

हर्बर्ट (कम्पित स्वर में)—ईश्वर तुम्हारा भला करे, फ्लोरेन्स ।

[वह एकाएक मुंह फेर कर चले जाते हैं । लगातार पाँच वर्ष से जिस काम में जुटी रही है उस काम को मिट्टी में मिला हुआ देख कर फ्लोरेन्स कुछ क्षणों के लिये शोकातुर हो जाती है । दरवाजा खुलने की आवाज़ होती है । डॉक्टर सदरलैंड मुस्कराते हुए अन्दर आते हैं ।

सदरलैंड (चतुराई दिखाते हुए)—मैंने कुछ देर के लिये यहाँ से ग़िसक जाना ही उचित समझा था..... क्या लॉर्ड हर्बर्ट उन पत्रों के लिये नहीं आ रहे ? (उसके मौन भाव से चकित होकर) अरे, तुम्हें क्या हुआ ?

फ्लोरेन्स—वह इससे अलग हो गये हैं । हमें सब कुछ

फिर से करना पड़ेगा ।

सदरलैंड—ओफ ! क्या यह कम दुःख की बात है ?
अच्छा, ऐसे अवसर तो जीवन में कई बार आते हैं !

[पर्दा गिरता है]

दृश्य छटवाँ

दृश्य—वही कमरा । १८६१ का अगस्त का महीना ।

फ्लोरेन्स और उसकी माँ बातचीत कर रही हैं । श्रीमती नार्डिंगेल अब अपनी ७३ साल की आयु में विनोद-प्रिय हो गई है । अपने पति से आज भी उसका उतना ही प्रेम बना हुआ है । उसकी स्मरण-शक्ति ठीक है परन्तु बुढ़ापे ने उसे कोमल बना दिया है ।

श्री० ना०—.....और तेरे पिता जी लॉर्ड पामस्टन के साथ ब्रॉडलैंड में शिकार खेलने जा रहे हैं ।... .. हैरी व पॉप सितम्बर में क्लेडन से एम्बले हमारे साथ रहने के लिये आवेंगे, और शोअर परिवार भी कुछ काल के लिये हमारे साथ रहेगा क्या, मेरी प्यारी, उन दिनों में तू हमारे पास एम्बले में नहीं आ सकेगी ?

फ्लोरेन्स—मेरा विचार तो है । मैं प्रयत्न करूँगी ।

श्री० ना०—अगर कहीं सिडनी परिवार भी उस अवसर

पर आ सकता। सम्भव है वे भी आ जावें। क्या उनकी इन दिनों में कोई चिट्ठी-पत्रो नहीं आई ?

फ्लोरेन्स—कोई पन्द्रह दिन हुए होंगे, स्या से कुशल-क्षेम का पत्र आया था।

श्री० ना०—बड़ी खुशी की बात है। वह कितना प्रसन्न-चित्त आदमी है, और उसकी प्यारी स्त्री, एलिजाबेथ। ओह, किस प्रकार वे दोनों मन को मोह लेते हैं.....उसकी और तेरी कितनी गाढ़ी मित्रता थी, प्यारी.....किस प्रकार वह तेरे काम में हाथ बंटा रही थी। तेरा उसे कितना ख्याल था। क्या तुझे विदित है, तेरे क्रीमिया पहुँचने के पश्चात् तेरी सहायता के लिये जो और नसेंज भेजी गई थी वह उसी का प्रयत्न था ? तेरे कष्ट को कम करने के लिये ही उसने यह सब किया। क्या यह उसकी भलमनसाहत न थी ?

फ्लोरेन्स—.....तो यह बात थी !.....मुझे सन्देह अवश्य होता था, पर निश्चित तौर पर मैं नहीं जानती थी।

श्री० ना० (किञ्चित् कम्पित स्वर में)—फ्लो, मैं अनुभव करती हूँ और अर्से से सोचती आई हूँ कि तेरे सच्चे मित्र अपने परिवार के बाहर के लोग हैं, और इसके लिये मुझे दुःख भी है और साथ ही यह सोचते ही मुझे शरम भी आती है। हमने तुझे समझने में बड़ी भूल की। यह नहीं कि हम तेरा अशुभ चाहते थे, मन से तो हम

तेरी भलाई ही सोचते थे । यह तुम लोग नहीं जानते कि माँ बाप अपनी तरफ से बच्चों की भलाई के लिये ही उनका विरोध करते हैं । यह तू तभी जान सकती थी जब तेरे बच्चे होते.....फिर तुझे मालूम होता कि वे कितनी गलतियाँ करते हैं । क्या यह हमारी बदकिस्मती नहीं थी ?

फ्लोरेन्स—नहीं माँ, यह बात नहीं है । बच्चों के लालन-पालन का पूरा भार माता-पिता पर रहने के कारण वे उन्हें अपनी आज्ञा के अन्दर रखना चाहते हैं । मैं तो इसे बुरा नहीं मानती । फिर अगर किसी के विचार इतने दृढ़ नहीं होते कि वे साधारण सी अड़चन आने पर स्थिर रह सकें तो फिर ऐसे विचारों से लाभ ही क्या है ? सभी प्रकार के विघ्न और बाधाओं के आने पर भी अगर विचार बने रह सकते हैं तो फिर इससे अच्छा और क्या हो सकता है ? औरों को चाहिये कि मार्ग के रोड़े हटा कर इस प्रकार पथ सरल न बनावें ।

श्री० ना०—तेरा कहना ठीक है, पर क्या ही अच्छा होता अगर हमें इसका ज्ञान पहिले हो जाता । जनता और महारानी की ओर से अपनी लड़की को इतना मान मिलने पर क्या उस माता को लज्जा नहीं आयेगी जिसने अपनी लड़की को उस ओर जाने से रोका था जिसके लिये आज उसको

आदर मिल रहा है ? बाइबिल की रू से और जिस वातावरण में हम पले हैं उसके विपरीत यह जानना कि माता-पिता भी भूल कर सकते हैं क्या कम अपमानजनक बात है ? मुझे तो बड़ी शरम आ रही है ।

फ्लोरेन्स (हंसती हुई)—तुम्हारी ये प्यार से भरी बातें सुन कर मुझे ऐसा मात्तूम होता है कि कहीं मैं ही तो नहीं भूल कर रही थी ।

श्री० ना० (गम्भीर स्वर में)—मेरी प्यारी, तुझे यह कभी मन में भी नहीं लाना चाहिये । तू ठीक राह पर थी इसका प्रमाण तू दे चुकी है ।

[घड़ी में आधे घण्टे की आवाज़ होती है ।

देख, यह साढ़े ग्यारह बज गये । मैंने तेरा पूरा एक घण्टा ले लिया ।

फ्लोरेन्स—कदाचित् डॉक्टर सदरलैंड आ रहे होंगे । मुझे उनसे मिलने के लिये तैय्यार रहना चाहिये... ..तुम्हें गाड़ी क्या आधे घण्टे तक चाहिये ?

श्री० ना०—इससे अच्छा और क्या होगा ? अच्छा, मेरी प्यारी बेटी, अब मैं जा कर तैय्यारी करती हूं ।

[श्रीमती नाईटिंगेल जाती है ।

फ्लोरेन्स (स्वगत)—अच्छा तो वे नर्सों उसी ने भेजी थीं । मेरे मार्ग में वही रोड़े अटकाती आई हैं । अब वह

मिडनी को दब्वू बना कर, और उसे लेकर चली गई है । मेरा काम चाहे भाड़ में जाय उसे क्या ? वह आप तो अपनी जीत पर फूली न समाती होगी ।

[वह घन्टी का घटन दवाती है और एक दासी अन्दर आती है ।

फ्लोरेन्स—मिसेज़ नार्डिंगेल के लिये आधे घन्टे में गाड़ी तैय्यार हो जानी चाहिये ।

दासी—अच्छा जी.....और बाहर एक भद्र पुरुष खड़े हैं । (स्वयम् भी कुछ बड़प्पन अनुभव करती है) मैडम, लॉर्ड पामस्टन आये हैं ।

फ्लोरेन्स—क्या लॉर्ड पामस्टन हैं ? शीघ्र उन्हें अन्दर लिवा लाओ ।

[दासी मुस्कराती हुई चली जाती है । फ्लोरेन्स साथ वाले कमरे का दरवाजा खोल कर पुकारती है ।

स्कॉटी !

डॉ० सदरलैंड की आवाज़—क्या आपको मुझसे बातचीत करने की फुरमत है ? (दरवाजे में वह दिखाई देता है)

फ्लोरेन्स—नहीं । लॉर्ड पामस्टन मिलने के लिये आये हैं । क्या यह अपनी विजय नहीं है ?

सदरलैंड (निरुत्साह से)—यह ठीक है, मगर उनसे

अधिक आशा रखना व्यर्थ है ।

फ्लोरेन्स—शैतान ! और लोग जब भी आवें मुझे सूचित कर देना ।

सदरलैंड—बहुत अच्छा ।

[वह अप्रभावित सा होकर चला जाता है । दरवाज़ा खुलता है और लॉर्ड पामस्टन अन्दर दाखिल होते हैं ।

फ्लोरेन्स (हृदय से उनका अभिवादन करती हुई)—लॉर्ड पामस्टन, आप अनुग्रह से भी ऊपर उठ गये हैं । मैंने आपके दर्शनों के लिये जब लिखा था तो मुझे आशा नहीं थी कि आपके दर्शन हो भी सकेंगे । मुझे यह ख्याल तो कदापि नहीं था कि आप यहाँ तक आने का कष्ट उठावेंगे ।

पामस्टन—हाँ, पर एक दृष्टि से तुम मेरी शिष्या हो । एक सभ्य शिक्षक के नाते से मैंने यही उचित समझा कि तुम्हारी कार्यशाला में ही तुमसे मिलूं । अतिरिक्त इसके मैं हाउस ऑफ कॉमन्स की तरफ जा रहा था.....मैंने सोचा कि देखता चलूं कि 'नाईटिंगेल की शक्ति' किस तरह पैदा हो रही है । लोग कहते हैं कि तुम अपने बड़ों को मन्त्री-मंडल की नकली बैठक बना कर खुश कर लेती हो ।

फ्लोरेन्स—हाँ, जिसे हम मन्त्री-मंडल ही कहते हैं ।

पामस्टन—क्या अब उसकी बैठक हो रही है ?

फ्लोरेन्स—उसकी बैठक १२ बजे होनी निश्चित हुई है ।

पामस्टन (अपनी घड़ी की ओर देखते हुए)—कोई १५ मिनट तक.....क्या मैं व्यक्तिगत रूप से उसमें सम्मिलित हो सकता हूँ ?

फ्लोरेन्स—हम अपने आपको बड़े भाग्यशाली समझेंगे ।

पामस्टन—यह ख्याल रखना कि, मैं तुमसे किसी प्रकार का वायदा नहीं करता । मेरी सहानुभूति अवश्य तुम्हारे साथ रहेगी ।

फ्लोरेन्स—सिडनी हर्बर्ट के अलग होने से हमें जो धक्का लगा है उसका दुःखद अनुभव बढ़ता ही जा रहा है । उनके स्थान की पूर्ति कभी भी कोई भी नहीं कर सकता.....कैसी मुसीबत है !

पामस्टन—विचारा हर्बर्ट । मेरा विचार है कि उसे इसका बड़ा दुःख हुआ है । विशेष कर तुम्हारे कारण । जब अन्तिम बार उसने अपना त्याग-पत्र पेश किया था, तब मेरी उससे काफ़ी देर तक बातचीत होती रही थी । पर कोई विशेष मतलब हल होता दिखाई नहीं दिया ।

फ्लोरेन्स—आप उनका बड़ा आदर करते थे ?

पामस्टन—सब से अधिक ।

फ्लोरेन्स—और मेरा.....ख्याल है.....उनकी

असुस्थता का दोष आप मुझे देते हैं ।

पामस्टर्न—थोड़ा तुम पर जरूर आता है । परन्तु ग्लाडस्टन को, जो उस समय अर्थ-सचिव था, निर्दोष नहीं माना जा सकता ।

फ्लोरेन्स—.....इसलिये कि हमारी स्क्रीम के कार्यरूप में परिणित होने के लिये रुपये की बेहद मांग बनी हुई थी ।

पामस्टर्न—वास्तव में । तुम्हारे नये अस्पतालों के लिये करोड़ों की जरूरत थी ।

फ्लोरेन्स (कठोरता से)—ग्लाडस्टन को भी मैं समझूंगी ।

पामस्टर्न—हाँ ! मैं भी नहीं भूल सकता । वह कोई भुला देने वाला व्यक्ति नहीं है ।

फ्लोरेन्स—और उन्हीं दिनों से सिडनी बीमार रहने लग गये थे, जब ग्लाडस्टन के साथ अस्पतालों की जरूरत के लिये रुपये का भगड़ा चल रहा था ।

पामस्टर्न—काफ़ी हद तक ।

फ्लोरेन्स—पर सिडनी ने मुझे यह कभी नहीं बताया ।

पामस्टर्न—मंत्री-मंडल में क्या चल रहा है, वह तुम्हें कैसे बतला सकता था ?..... तुम नहीं जानती इस बात की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ।

फ्लोरेन्स—.....क्या यह सच है कि बेन हौज़ के सामने खड़े होने में उन्हें डर लगता था ?

पामस्टर्न—क्या तुम बता सकती हो कि बेन हौज़ कौन है ? वह क्या कोई मल्ल है ?

फ्लोरेन्स—वह युद्ध-विभाग में स्थायी उप-मंत्री के स्थान पर है ।

पामस्टर्न—अच्छा । अब मुझे ख्याल आया । तुम्हारा मतलब सर बेंजमिन हौज़ से है । मैं उसे जानता हूँ । क्या तुम्हें मालूम है मिस नाईटिंगेल, ब्रिटिश सरकार एक बार जब तय कर लेती है कि अमुक बात होनी है फिर—वह युद्ध-विभाग के सुधार जैसी छोटी सी बात क्यों न हो—उसमें दखल देना स्थायी अकसर बुद्धिमानी नहीं समझते ? यह तो जगन्नाथ की वार्षिक सवारी की सी बात है—उसके सामने आना मतलब अपना सर्वनाश करना है ।..हां, जब मंत्री-मंडल एक विचार का न हो तब और बात है ।

फ्लोरेन्स—.....तो मैंने बड़ा अन्याय किया.....

पामस्टर्न—किसके प्रति ?

फ्लोरेन्स—सिडनी हर्बर्ट के प्रति ।

पामस्टर्न—अगर तुमने उस पर दोषारोपण किया है तो अवश्य ही अन्याय किया है ।

फ्लोरेन्स—उन्होंने मुझसे कहा क्यों नहीं !

पामस्टर्न—मिस् नाईटिंगेल, गलती कर रही हो ! तुम जानती हो एक बार उसे मंत्री-मंडल की कुछ गुप्त बातें एक

स्त्री को बतला देने के कारण कैसी आफत में फंसना पड़ा था। सुना है कि उस स्त्री ने वे समाचार 'टाइम्स' के पास बेच दिये थे। जो सबक उसने उन दिनों में सीखा था वह अभी तक भूला नहीं होगा।

फ्लोरेन्स—पर उन्हें मुझ पर सन्देह न करना चाहिये था। ऐसा नहीं हो सकता था।

पामस्टन—नहीं। परन्तु पत्रों में समाचार न जाने कहाँ से पहुँच जाते हैं। समझ लो, किसी पत्र में कोई लेख छपता है और ग्लाडस्टन अपना सन्देह प्रकट करता है। क्या सिडनी एतराज कर सकता था कि उसने तुम्हें कुछ नहीं बताया ? चाहे वह भली भाँति जानता हो कि इसमें तुम्हारा हाथ कदापि नहीं है।

फ्लोरेन्स—लॉर्ड पामस्टन, मुझे खेद है कि मैं एक योग्य शिष्या नहीं बन सकी—योग्य क्या, मैंने अभी तक कुछ नहीं सीखा।

पामस्टन (लापरवाही से)—क्या तुम्हें उस दिन की बात याद है जब मैंने तुमसे कहा था कि मैं २० साल तक लगातार तैयारी करता रहा ? केवल इस लिये कि मैं पर्याप्त योग्यता प्राप्त कर लूँ। तुम्हें अभी सार्वजनिक जीवन में आये साल ही कितने हुए हैं ? १८५४ से अब तक केवल सात वर्ष ही। आतुर मत होओ। तुमने इतने असें

में काफ़ी उन्नति कर ली है ।

फ्लोरेन्स—आपके विचार तो ऐसे प्रतीत नहीं होते । अभी बातचीत के सिलसिले में जो आपने कहा है उससे यह मालूम होता है कि आपकी सम्मति सार्वजनिक जीवन में आने वाली स्त्रियों के प्रति कोई अच्छी नहीं है ।

पामस्टन (विरक्त होकर)—ऐसा मैं क्यों कहूँ ? अगर १९३० में मंत्री-मंडल में एक महिला निर्वाचित हो जाती है तो मेरे लिये यह कोई आश्चर्य की बात न होगी । तुमने उन्हें रास्ता दिखला दिया है । तब तक तुम निःसन्देह बहुत बुढ़ी हो जाओगी, और सौभाग्य से मैं चिर समाधि में पहुँच जाऊँगा ।

फ्लोरेन्स—मेरी सम्मति में तो स्त्रियों को मताधिकार भी मिलना चाहिये ।

पामस्टन—स्त्रियों के मताधिकार के बारे में तो तब सोचा जावे जब मुझे कोई यह समझा दे कि प्रत्येक मनुष्य को भी मताधिकार होना आवश्यक है ।.....पर मेरी सम्मति का क्या है ? हो, न हो, अब कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता । आजकल के नवयुवक जिसे सुधार कह रहे हैं उसका बुरा-भला मैं पिछड़ा हुआ वृद्ध क्या जानूँ । हम लोग मताधिकार को खिलवाड़ समझने लग गये हैं और आगे २ भी ऐसा ही करेंगे । आज पुरुषों को

मताधिकार होना चाहिये इसके लिये जनता में आवाज उठाई जा रही है । कल स्त्रियों की बारी आवेगी । परसों दूध-पीते बच्चों के लिये प्रयत्न किये जावेंगे । प्यारी बच्ची, तुम्हारी जाति को मताधिकार प्राप्त हो जावेगा—पार्लियामेंट में और मंत्री-मंडल में भी तुम लोगों को स्थान मिल जावेगा.....और अन्त में अगर तुम सम्हली नहीं तो सीधे स्वर्ग में भी ।

फ्लोरेन्स—.....लॉर्ड पामस्टन, क्या स्वास्थ्य लाभ करने पर सिडनी को फिर से युद्ध-विभाग में स्थान मिल जावेगा ?

पामस्टन—परन्तु उसका शरीर साथ नहीं देगा ।

फ्लोरेन्स—उनके पत्र तो काफ़ी आशाजनक होते हैं ।

पामस्टन—क्या शीघ्र ही ? असम्भव है । वह भार नहीं सह सकेगा ।

फ्लोरेन्स—शीघ्र ही नहीं । परन्तु वर्ष, दो वर्ष में ।

पामस्टन—उसकी पत्नी क्या इससे सहमत हो जावेगी ?

फ्लोरेन्स—.....भावी समाज के लिये यह नितान्त आवश्यक है ।

पामस्टन—मिस् फ्लोरेन्स, मुझे इसमें सन्देह है । आने वाली पीढ़ी पर इसका प्रभाव जो कुछ भी पड़े, परन्तु इतना अवश्य है कि इस प्रकार सोच कर हमारी आत्म-

श्लाघा अवश्य हो जाती है ।

फ्लोरेन्स (आवेश में)—स्वाधीनता ! स्वार्थानता का नया सिद्धान्त ! धक्का-मुक्की, ठेलमठेल और अन्धेर खाता । भाड़ में जाय ऐसा सिद्धान्त और इस पर विश्वास करने वाले । हम इतने आलसी बन गये हैं कि किसी भी नये कार्य-क्रम को प्रयोग में लाना नहीं चाहते, और उसे टालने के लिये बहाने ढूँढते रहते हैं ।

पामस्टर्न (अप्रभावित रह कर)—मेरी प्यारी, मैं अब काफी वृद्ध हो चुका हूँ और इस प्रकार बदला नहीं जा सकता । मेरा तुमसे स्नेह है इसलिये मैं तुम्हारे उद्देश्य की पूर्ति में सहायक बनूँगा । परन्तु मैं अपनी बुद्धि को व मनुष्य जाति के कटु अनुभवों को ताक में बन्द कर देना नहीं चाहता । अक्सर हमेशा मूर्खता करते आये हैं । लाख प्रयत्न करने पर भी लड़ाई में युद्ध-विभाग के अक्सरों की ओर से कुप्रबन्ध होता ही रहेगा । परन्तु इन सब के होते हुए भी हम लोग विजय-लाभ करते ही चलेंगे । अगर तुम सर बैन्जमिन हौज़ को हटाना चाहती हो तो उसके स्थान पर कोई दूसरा नियुक्त करना ही होगा । तुम अव्यवस्था या बुरी बातों से नहीं भगड़ रहीं, जो अवश्यक हैं—तुम भगड़ रही हो मनुष्य-स्वभाव से ।

फ्लोरेन्स—मैं इससे सहमत नहीं हूँ । किसी काम को

कर्तव्य समझ कर भी किया जा सकता है ।

पामस्टन—हां, परन्तु पार्लियामेन्ट में नहीं । अगर ऐसे विचार रखने से तुम्हारी कुछ तसल्ली होती हो तो ऐसा ही सोच लो ।

फ्लोरेन्स—मेरी समझ में तो आप जान-बूझ कर मुझे निरुत्साहित कर रहे हैं ।

पामस्टन—कदाचित मैं तुम्हें निराशा के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाना चाहता हूं ।

फ्लोरेन्स (निरुत्साहित होकर)—सिडनी को वापिस बुलाने के लिये मैं अपना सर्वस्व भी देने को तैय्यार हूं । वह निरुत्साहित कभी नहीं होते थे । वह उसमें हिस्सा बटा लेते..... ।

[दरवाजे में खटखट का शब्द होता है, और डॉक्टर सदर-लैंड अन्दर भाकते हैं ।

सदरलैंड—मिस नाईटिंगेल, सब लोग आ गये हैं...
...क्षमा कीजिये, मैंने लॉर्ड पामस्टन साहब को नहीं देखा था ।

फ्लोरेन्स—लॉर्ड पामस्टन ने यहां आकर हम पर बड़ी कृपा की है । उन समस्याओं को, जिन पर पहिले मि० हर्बर्ट गौर फरमाते थे, आप सुनने का कष्ट करेंगे ।

पामस्टन—परन्तु मैं उनको पूरी करने का कोई वायदा

नहीं करता। वह तो राज्य-सचिव (Secretary of State) ही जाने।

फ्लोरेन्स—क्या आप ये उनके कानों तक भी नहीं पहुँचा सकेंगे ?

पामस्टन—अगर मुझे वे आवश्यक जान पड़ें। परन्तु मैं उनके लिये किसी प्रकार का दबाव नहीं डालूंगा।

फ्लोरेन्स (सदरलैंड से)—अगर साल, दो साल में लॉर्ड हर्बर्ट के वापिस अपने पद पर आने की आशा हो तो, युद्ध-विभाग में हम जो सुधार करना आवश्यक समझते हैं, उन्हें कुछ काल के लिये स्थगित किया जा सकता है।

सदरलैंड (बुद्धिमत्ता से)—परन्तु हमारे पास इसका क्या प्रमाण है कि लॉर्ड हर्बर्ट स्वास्थ्य लाभ करने पर सार्वजनिक जीवन में फिर आवेंगे।

पामस्टन—यह तो लेडी हर्बर्ट की इच्छा पर है।

फ्लोरेन्स (विचारते हुए)—लिज भी एक आक्रत है।

सदरलैंड—पर जब लॉर्ड पामस्टन हमारे साथ हैं तो फिर क्यों न उनकी सम्मति से काम करें, और सुधार की स्कीम उनके सामने पेश करें।

फ्लोरेन्स—कुछ भी न करने से तो यह अच्छा ही है।
(लॉ० पामस्टन से) अगर हम अपना मुख्य कार्य कुछ काल के लिये स्थगित कर दें.....

[बाहर से पैरों की आवाज़ आती है । फ्लोरेन्स झपट कर दरवाजे के पास पहुँच कर गुस्से होना ही चाहती है कि दरवाजा खुल जाता है ।

एलिज़ाबेथ हर्बर्ट दरवाजे में खड़ी दिखाई देती है । वह सफ़र के कारण परिश्रान्त है, उसने सारे शरीर पर काले कपड़े पहिने हुए हैं । श्रीमती नार्डिंगेल आँखों में आँसू भरे पीछे खड़ी है ।

फ्लोरेन्स—...एलिज़ाबेथ, तुम तो जर्मनी में थीं.....

एलिज़ाबेथ (रुन्धे हुए स्वर में)—फ्लोरेन्स, मैं वापिस आ गई हूँ.....मुझे तुमसे मिलना था । सिडनी.....की मृत्यु हो गई है.....मैं.....(वह लड़खड़ाती है और बिलख २ कर रोने लगती है) मुझे सच नहीं आता ।

फ्लोरेन्स (समीप जा कर)—मेरी प्यारी.....मेरी प्यारी.....

[एलिज़ाबेथ सिसकती हुई उससे लिपट जाती है । परन्तु फ्लोरेन्स के नेत्रों में अब आँसू कहाँ ।

एलिज़ाबेथ (अस्पष्ट स्वर में)—.....अपनी अन्तिम घड़ी में भी.....उन्होंने तुम्हें याद किया था.....मुझे नहीं !.....तुम्हें और तुम्हारे अधूरे रहे हुए काम को.....

[कुछ समय के बाद ।

फ्लोरेन्स (कोमलता से)—वह हमारा नेता था, हमारा गुरु था—अब हमें अनुभव हो रहा है कि हमारी कितनी गुरुतर हानि हुई है.....उनके अब कभी दर्शन न हो सकेंगे.....

[पर्दा गिरता है]

॥ तीसरा अंक समाप्त ॥



चौथा अंक

दृश्य सातवां

दृश्य—१० नम्बर साऊथ स्ट्रीट, पार्क लेन का एक कमरा ।

१८८६ की ग्रीष्म । सिडनी हर्बर्ट की मृत्यु को आज पूरे २५ वर्ष व्यतीत होंगे । फ्लोरेन्स नाईटिंगेल की शक्ति आज भी उसी प्रकार बनी हुई है । गत वर्ष मिश्र की लड़ाई में जो नर्सेज़ भेजी गई थीं, उनका प्रबन्ध वह साऊथ स्ट्रीट में आराम कुर्सी पर बैठी हुई ही करती रही । उन दिनों में भारत में जितने भी वायसराय आये उनके अन्दर सफ़ाई विषयक विचार भरना इसी का काम था । जिसके फलस्वरूप भारत में कई सफ़ाई विषयक कानून बने और अमल में लाये गये, कई ऐसी संस्थाये बनीं जिन्होंने उसके अस्पताल सम्बन्धी विचारों पर काम किया । यहाँ तक कि लॉर्ड हर्बर्ट की मृत्यु हो जाने के कारण वैरकों को फिर से बनवाने का विचार जो सहायकों की कमी के कारण स्थगित कर दिया गया था अब ४० लाख पौंड देकर सरकार ने पूरा किया । वह आज तक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती ही गई । ऐसा कहना अनुचित न होगा कि उसने अपना जीवनोद्देश्य पूरा कर लिया है । बस इतना और करना रह गया है

कि भविष्य में उसका कार्य जीवित रह सके ।

फ्लोरेन्स अपने सोने के कमरे में आराम से सोफे पर बैठी हुई है । उसके सामने ही एक बड़ी सारी मेज रखी हुई है, जिस पर लिखने का सारा सामान पड़ा हुआ है । उसके पंछे की तरफ एक अलमारी नीले रंग की पुस्तकों से भरी पड़ी है । साफ़ कपड़ों में एक सुन्दर नर्स हुकम बजाने के लिये तैय्यार खड़ी है । फ्लोरेन्स कागज के एक छोटे से टुकड़े पर अनिश्चित सी कुछ घसाट रही है ।

फ्लोरेन्स (आखिरकार)—उनके लिये मैं अपने नियम को क्यों तोड़ूं ? नहीं, पूर्व सूचना के बगैर बिल्कुल नहीं ।

नर्स (दो देवों के पंजे में पड़ जाने के कारण कांप रही है)—मिस् नाईटिंगेल, मि० ग्लाडस्टन स्वयम् हैं । वह बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

फ्लोरेन्स (नम्रतापूर्वक किन्तु दृढ़ता से)—परन्तु पूर्व सूचना दिये बगैर नहीं । कदाचित् डॉक्टर सदरलैंड बाद में उनसे मिल लेंगे ।

नर्स (काँपती हुई)—क्या उनसे यही कहना होगा ?

फ्लोरेन्स—इसमें कोई शक नहीं कि वह एक योग्य पुरुष हैं, परन्तु जहाँ तक मेरा ख्याल है उनके अपने दल के लोग भी उनके अन्दर कोई दिव्य आभा नहीं पाते ।

नर्स (सहम कर)—आप ठीक कहती हैं, मिस् नाईटिंगेल ।

फ्लोरेन्स (उसे ज़रूरी बात बतलाती हुई)—पूर्व सूचना दिये बगैर मिस नाईटिंगेल किसी से मुलाकात नहीं करती । उसके लिये इस नियम का पालन करना आवश्यक है । नहीं तो वह अपना काम नहीं कर सकती और उसका काम ही उसके जीवन का आधार है । मिस नाईटिंगेल को आपसे न मिल सकने का बड़ा दुःख है । उनसे इस प्रकार कहना होगा । समझी या नहीं ?

नर्स (बस न चलते देख कर)—अच्छा, मिस नाईटिंगेल ।

फ्लोरेन्स—ठीक इसी प्रकार जाकर कह सकोगी न ?

नर्स—जी हाँ (शब्दों के दोहराने के कारण उसके ओंठ हिलते हैं) ।

फ्लोरेन्स (प्यार के साथ)—अब मैं तुम्हें शिक्षा देती हूँ । सुनो ! किसी काम को करने में आना-कानी करके तुम अपने रास्ते में आप रोड़े अटकाती हो । इससे हाथ पल्ले कुछ नहीं पड़ता । अस्पताल का संचालन करना हो, अथवा कोई समाचार पहुँचाना हो, या और भी कोई कैसा ही काम क्यों न हो, कभी उससे घबराओ नहीं । उस पर अपना काबू रखो । हरक्यूलीज़ ने अपने काम इसी प्रकार किये । वह कहा करता था, 'कोई भी, कितना भी कठिन काम, जो कल्पना में भी नहीं आ सकता, मेरे समीप बहुत ही साधारण है ।' उसके सफल होने का कारण भी यही था ।

नर्स—मिस नाईटिंगेल, मैं काम से नहीं घबड़ाती ।

फ्लोरेन्स—नहीं, प्यारी । मैंने यह तो नहीं कहा कि तुम काम नहीं करती । मेरा मतलब है कि तुम साधारण सी बातों से विचलित हो जाती हो । मेरा सन्देश मिस्टर ग्लाडस्टन तक पहुँचाने में तुम्हें डर लगता है । तुम्हें तो सिर्फ मेरे शब्द दोहराने हैं । तुम्हें डर किस बात का ?

नर्स—.....वह.....कितना.....बड़ा आदमी है !

फ्लोरेन्स—हाँ, बात ठीक है । परन्तु जो तुम दुनिया में कुछ करना चाहती हो तो तुम्हें ऐसे २ बड़े आदमियों का, बड़ी २ कठिनाइयों का व रास्ते में आने वाली बड़ी २ मुसीबतों का सामना करना होगा । जब तुमने ठीक मार्ग अपने लिये निश्चित कर लिया है तो ऐसी व्यर्थ की काल्पनिक कठिनाइयों से डर कर तुम्हारा काम नहीं चल सकेगा । अगर मैं लोगों से ऐसा कहूँ कि “मैं तो एक अनजान अबला हूँ और आप बड़े आदमी हैं इसलिये आपका ही कहना ठीक होगा” तो क्या तुम सोचती हो कि मेरे काम की ओर कोई ध्यान देगा ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि इस तरह मैं सारे सैनिक औषध-विभाग (Army Medical Department) को जीत सकती थी जिसमें बड़े २ नामधारी व्यक्ति थे और मन्त्री-मण्डल के आधे से अधिक सभासद लुके-छिपे जिनका साथ देने

के लिये तैय्यार थे, और जो एक स्त्री के कथनानुसार चलने के कट्टर विरोधी थे । अगर मैं गाय की तरह सीधी बन कर उनकी बड़ी २ बुराइयाँ ठीक कह कर मान लेती तो ये सब बातें क्या कभी हो सकती थीं ? और क्या मैं भारत के बायसरायों के मन में सफ़ाई विषयक विचार भर कर हिन्दुस्तान के दुष्काल पीड़ित गाँवों में सफ़ाई का सन्देश भेज सकती थी ? और क्या ये सुन्दर वैरक भी बन सकते थे ?.....जिनके साथ मैं भगड़ रही थी वे सब ऐसे ही नामधारी बड़े आदमी थे और अपने किये को भी बाज़बी से अधिक ठीक समझते थे । परन्तु वे ठीक रास्ते पर नहीं चल रहे थे, और एक के बाद एक को यह स्वीकार भी करना पड़ा और सब बातें जिनके लिये मैं प्रयत्नशील थी एक एक करके पूरी भी हुई । यह नहीं कि मैं ही यह कर सकी हूँ और स्त्रियाँ भी ऐसा ही कर सकती हैं । तुम भी ऐसा ही कर सकती हो । परन्तु पुरुष-वर्ग की व्यर्थ की महत्ता या बड़प्पन की पूजा करके नहीं !

नर्स (प्रभावित होकर)—मैं प्रयत्न करूँगी, मिस नाईटिंगेल । मैं अवश्य ही कोशिश करूँगी ।

फ्लोरेन्स (मुस्कराती हुई)—तुम बड़ी अच्छी लड़की हो.....अच्छा अब जाओ और विचारे ग्लाडस्टन को सशोपंज से छुड़ाओ ।

नर्स (इस प्रकार जाती है जैसे कोई छोटा लड़का हैडमास्टर के कमरे में सहमते हुए जाता है)—अच्छा, मिस नाईटिंगेल ।

[वह जाती है ।

फ्लोरेन्स लिखने में लग जाती है ।

दरवाजा खटखटाने की आवाज़ होती है और सदरलैंड का सिर दिखाई देता है । उसके बाल सफेद हो चुके हैं और सिर पर लकीरें पड़ गई हैं । उसकी उमर अस्सी साल के ऊपर हो गई है । मिस नाईटिंगेल की कठोर नौकरी बजाते २ वह अब हार गया है, परन्तु उसका स्वर अब भी वैसा ही बना हुआ है ।

सदरलैंड—क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

फ्लोरेन्स—अगर एक वृद्धा स्त्री को अपने बिस्तर पर ढीले ढाले बैठे देख कर कोई संकोच न हो तब ।

सदरलैंड—अभी तक उठी नहीं, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ?

फ्लोरेन्स—मैं अपनी रही-सही शक्ति को बनाव-शृङ्गार में खर्च नहीं करना चाहती ।

सदरलैंड—रही-सही शक्ति ! तुम्हें यह थोड़ी ही दिखाई देती है । मुझमें अगर इसका चौथा हिस्सा शक्ति भी होती तो मैं अपना सारा काम बड़ी अच्छी तरह कर सकता था । यह शारीरिक शक्ति की कमी है । (प्यार से) क्या तुमने शरीर को विश्राम देना सीखा ही नहीं ? अभी तक

तुम जीवित ही कैसे हो यह मेरे लिये एक पहेली है !

फ्लोरेन्स—ड्राँ ! ड्राँ ! ड्राँ ! तुम प्राचीन एथेन्स में क्यों नहीं जाकर रहते ?

सदरलैंड—एरिस्टोफेन्स के मेंढकों के ऊपर बनाये गये गीतों को गाने के लिये । पर यह क्या कोई बुरा काम है ?

फ्लोरेन्स—आज तो मङ्गलगीत गाने का दिन है । क्या तुम बता सकते हो आज क्या है ?

सदरलैंड—सोमवार ।

फ्लोरेन्स—तुम्हारी भूलने की आदत से ही मैंने अन्दाज़ लगाया था कि तुम्हें आज कौनसी तारीख है यह भी पता न होगा । आज दो अगस्त है । सिडनी की मृत्यु को आज पूरे पच्चीस वर्ष व्यतीत होंगे । सिडनी की आज २५वीं पुण्यतिथि है ।

सदरलैंड—इसमें खुशी मनाने की कौनसी बात है ।

फ्लोरेन्स—उसके उद्देश्य को लेकर पिछले २५ वर्षों से हम प्रयत्नशील रहे हैं । उसके लिये हमने किसी के सम्मुख झुकना व हार मानना स्वीकार नहीं किया, और अन्त में उसे अब पूरा कर लिया है । यह हर्ष का विषय नहीं तो और क्या ?.....क्या तुम जानते हो आज मुझसे मिलने के लिये कौन आ रहा है ?

सदरलैंड (शीघ्रता से)—मिस्टर ग्लाडस्टन । मैंने अन्दर

आते समय उन्हें देखा था ।

फ्लोरेन्स—नहीं, उनसे मैं नहीं मिली रही.....
एलिजाबेथ हर्वर्ट । सिडनी की मृत्यु के बाद आज प्रथम
बार उससे भेंट होगी ।

सदरलैंड (आश्चर्य से)—उनसे न मिलने का कारण ?

फ्लोरेन्स—ग्लाडस्टन से ?.....मेरे हत्यारे साथी
से ? सिडनी की अकाल मृत्यु का कारण हम दोनों हैं ।
मेरी उससे मिलने की कतई इच्छा न थी । भाग्यवश उसने
पहिले से इसके लिये कहलाया भी नहीं । इसीलिये मुझे
अशिष्ट.....बचने की ज़रूरत भी नहीं पड़ी ।

सदरलैंड (अधीरता से)—क्या तुम सिडनी हर्वर्ट
सम्बन्धित इन विचारों को अपने मास्तिष्क से बाहर न
निकालोगी ? उसकी मृत्यु हृदय की किसी बीमारी से हुई
थी । जिस प्रकार ज्यूलियस सीज़र के खून के लिये तुम्हें
कोई दोषी नहीं ठहरा सकता उसी प्रकार सिडनी की मृत्यु
के लिये भी तुम पर कोई आँच नहीं आ सकती, यह मेरा
विश्वास है ।

फ्लोरेन्स—क्योंकि तुम डाक्टर हो । तुम ऐसा ही
कहोगे । तुम लोग रोगों के बाह्य कारणों को देखते हो पर
उनके मूल कारणों की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता । मेरे
खयाल से तुम इतना तो मान ही लोगे कि अगर एक बच्चा

गठिये की बीमारी से मरता है तो उसकी आया जो उसे हमेशा भीगे कपड़ों में लपेटे रखती थी किसी हद तक उसकी मृत्यु का कारण हो सकती है ।

सदरलैंड (धैर्य पूर्वक) --यह तो ठीक है । पर अगर तुम स्वयम् ही धैर्य धारण नहीं कर सकती तो लेडी हर्वर्ट से क्या कह सकोगी ?

फ्लोरेन्स—मैं कुछ नहीं जानती । सिडनी की मृत्यु के पश्चात अब तक हम आपस में साल में एक बार पत्र लिखती आ रही हैं । वह भी इसी दिन । तब से मुलाकात कभी नहीं हुई ।

सदरलैंड—तो मेरा ख्याल है आज शाम को तुम्हारी आपस में खूब बातें होंगी.....हां, तो मुझे अभी तुम्हें कुछ बतलाने की जरूरत नहीं है.....

फ्लोरेन्स—मुझे क्या बतलाना चाहते हो ? कह डालो, छिपाने की कोई जरूरत नहीं ।

सदरलैंड—मैं अपनी सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे रहा हूं ।

फ्लोरेन्स—.....आज तक हमने जो कुछ भी किया है उसके लिये खुशी मनाने का अभी मौक़ा नहीं आया । तुम काम को अधूरा ही छोड़ कर जाना चाहते हो ।

सदरलैंड (धैर्य के साथ)—मरते दम तक कोल्हू के

वैल की तरह काम करना क्या ठीक है ? तुम जानती हो मेरी उमर अस्सी साल से ऊपर हो गई है । किसी जवान आदमी को रख कर तुम्हारा काम अच्छी तरह चल सकेगा । मेरा तो ख्याल था कि तुम इस बारे में मुझसे सहमत होगी

फ्लोरेन्स—सहमत हूँगी ? जिसकी मेरे सामने कदर है और जिसकी सलाह का मेरे सामने मूल्य है, उस व्यक्ति के चले जाने के बारे में मैं यही तो सोचूंगी ? तुम्हें इस प्रकार कहना शोभा नहीं देता ।

सदरलैंड—अगर मेरा इस प्रकार कहना तुम्हें ठीक नहीं जंचता तो फिर मेरे बारे में तुम्हें स्वयम् ही सोचना चाहिये था ।

फ्लोरेन्स—अब कुछ ठीक समझ में आया । अगर तुम्हारा यह ख्याल था कि तुम्हें अब आराम करने देना चाहिये था, और इससे मेरे सहमत होने में तुम्हें सन्देह था, तो फिर तुम्हें मुझसे आकर पूछना चाहिये था..... मनुष्यों के ऊपर आश्रित रह कर काम करने में यही तो बुराई है । जब उनकी जरूरत बढ़ जाती है तो वे काम को छोड़ कर चल देते हैं या फिर उनकी मृत्यु हो जाती है ।

सदरलैंड (विनीत स्वर में)—मृत्यु के साथ किसी काम को न छोड़ना पड़े इसी लिये मृत्यु के समीप आकर लोग

काम से छुट्टी ले लेते हैं। और अब मेरे लिये उतना काम भी नहीं है। भद्रे, इच्छा होते हुए भी तुम्हें छोड़ कर जाने में मुझे दुःख होता है। क्या मैंने तुम्हारी सेवा में अपना व अपनी पत्नी का अवकाश का समय, चाहे वह तुच्छ ही क्यों न हो, नहीं लगाया? केवल इसलिये कि जब तुम्हारा प्रिय मित्र मरा था तो मेरे दिल को ठेस लगी थी और तुम्हारे दुःख से मुझे भी दुःख हुआ था, और उस समय जिस वीरता का तुमने परिचय दिया था उसका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। परन्तु इस संसार में एक बात अवश्यम्भावी है, और वह है वियोग। और आज डाक्टर जॉन सदरलैंड एम० डी० की वह घड़ी आ गई है।

फ्लोरेन्स—स्कॉटी ! स्कॉटी ! स्कॉटी ! तुम्हारे बिना मैं किस प्रकार रह सकूंगी ? क्या तुम अब मुझसे नहीं मिलोगे ?

सदरलैंड—जब तक मुझमें शक्ति विद्यमान है मैं यथाशक्ति तुम्हारा व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार वगैरह करता रहूँगा। परन्तु सरकारी ज़ुम्मेदारी के पद पर से अब मुझे जुदा होना ही है।

[नर्स दरवाजे तक आती है।

नर्स—लेडी हर्बर्ट ऑफ़ ली तशरीफ़ लाई हैं।

फ्लोरेन्स—डॉक्टर सदरलैंड के चले जाने के बाद...

आज संध्या का मेरा क्या कार्य-क्रम है ?

नर्स—लेडी हर्वर्ट के पश्चात् ४॥ बजे अमरीकन रेड क्रॉस के सभापति, ५ बजे भारत-सचिव, ५॥ बजे कीमिया-युद्ध के सरदार, और ६ बजे के बाद आपने डॉक्टर सदरलैंड के लिये समय रखा हुआ है । कदाचित् वह आपसे मिलना चाहें ।

फ्लोरेन्स—ठीक । (नर्स से) लेडी हर्वर्ट को अन्दर बुला लो ।

[नर्स जाती है ।

अच्छा मेरे मित्र, क्या तुम शाम के ६ बजे आकर मुझसे उस बारे में फिर बातचीत कर सकोगे ?

सदरलैंड—शाम के ६ बजे क्या आधी रात भी, और तुम्हारी सुविधानुसार जब भी तुम बुलाओगी मैं आ सकता हूँ । जब तक मेरी जान में जान है मैं संसार में अपने सर्वोपरि मित्र की सेवा करता रहूंगा, और उसे किसी प्रकार का दुःख न होने दूंगा ।

नर्स—लेडी हर्वर्ट ऑफ ली ।

[इन पच्चीस वर्षों में एलिज़ाबेथ में काफ़ी परिवर्तन हो गया है । उसकी मुखाकृति सख्त हो गई है । वह अब रोमन कैथोलिक मतावलम्बिनी बन गई है । उसके नेत्रों में धार्मिक कट्टरपन का आभास मिलता है । सदरलैंड अब अधिक ठहरना उचित न

समझ कर प्रणाम कर नर्स के पीछे २ कमरे से बाहर चला जाता है ।

एलिजाबेथ—क्यों फ्लोरेन्स.....मैं स्वयम् ही नहीं जानती कि मैं यहाँ कैसे आगई हूँ ? मेरा ऐसा अभिप्राय कभी नहीं था ।

फ्लोरेन्स (विनीत स्वर में)—ऐसा क्यों, लिज ?

एलिजाबेथ—भूत के गर्भ में जो छिप गया है उसे मैं छिपा ही रहने देना चाहती हूँ । मैं अब पिछली बातों को स्मरण नहीं करना चाहती ।

फ्लोरेन्स—परन्तु मैं उन्हें भुलाना नहीं चाहती..... लिज, क्या तुम्हें यह देख कर हर्ष नहीं होता कि सिडनी ने जिस काम का भार अपने ऊपर लिया था वह अन्त में पूरा हो गया है ?

एलिजाबेथ—सच कहने में क्या डर है ? बिल्कुल नहीं.....जब तक वह जीवित थे, उनकी सहायता के लिये जो कुछ भी मुझसे बन पड़ा मैंने किया । मैंने जो कुछ भी किया वह इसलिये किया कि मैं उन्हें बहुत अधिक चाहती थी, इसलिये नहीं कि उनके काम से मुझे प्रेम था । थोड़ी देर के लिये मान लिया जावे कि वह एक किसान होते, तो मैं गर्व के साथ हल जोतती.....लेकिन उनकी मृत्यु के पश्चात मैं खेतों के पास भी न फटकती । मैं उस

स्थान से घृणा करने लगती । अगर उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई होती तो फिर कहना ही क्या था ।

फ्लोरेन्स—तो क्या फिर मैं यह समझूँ कि तुम मुझसे घृणा करती हो ?

एलिजाबेथ—फ्लोरेन्स, तुम कोई स्थान तो नहीं हो... जिस धर्म की मैं अनुगामिनी हूँ उस धर्म में मनुष्यों से घृणा करना नहीं बताया गया । उसमें उनके लिये ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है ।

फ्लोरेन्स (व्यङ्ग्य असह्य हो जाता है)—तो क्या लिज्ज तुम्हारा यह आशय है कि मेरी स्वस्थता.....का कारण तुम्हारी प्रार्थना है ?

[दोनों कुछ देर तक एक दूसरे का मुँह देखती रहती हैं ।

एलिजाबेथ—.....मेरा ख्याल था कि मैंने सिडनी की जुदाई पर काबू पा लिया है । कहते हैं ईश्वरोपासना से मनुष्य बहुत कुछ कर सकता है । परन्तु मैं वह वियोग न भूल सकी हूँ, और न ही कभी भूल सकूंगी ।

फ्लोरेन्स (नम्रता से)—उन्हें भुलाने का प्रयत्न करने की अपेक्षा तुम उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमारे साथ अपने आपको लगा कर उनकी आनन्ददायिनी स्मृति बनाये रखतीं तो तुम्हारे लिये अधिक समाधानकारक होता ।

एलिजाबेथ—तुम्हारी दृष्टि में तो काम ही सब

व्याधियों के लिये रामबाण हैं ।

फ्लोरेन्स—और तुम्हारे लिये उपासना ! उपासना तुम्हें एक जगह पर स्थिर कर देती है । विपरीत इसके कर्तव्य तुम्हें ऊपर उठाता है । अपना कर्तव्य पालन करते हुए मृत्यु भी आनन्द-दायिनी हो जाती है । और उस अवस्था को पहुँच कर तुम भी इसी प्रकार आनन्द अनुभव कर सकती हो जिस प्रकार मैं कर रही हूँ ।

एलिजाबेथ—ठीक है, परन्तु यह भी स्मरण रखो कि प्रभु अपने भक्तों को समय आने पर स्वयम् बुला लेते हैं और उन्हें चिर शान्ति देते हैं ।

फ्लोरेन्स—.....क्या तुम्हारा यह तात्पर्य है कि सदैव जीवित ही बने रहा जावे, न कोई काम ही करने की ताकत रहे और न मर ही सके ।.....मेरे लिये यह दण्ड होना चाहिये ।

एलिजाबेथ—हां, फ्लोरेन्स.....हो सकता है..... अथवा तुम्हें प्रायश्चित के लिये यही.....हम सब को..... सहना ही होगा ।

[नर्स खटखटाती है और चाय लेकर अन्दर आती है ।

फ्लोरेन्स—लिज, तुम चाय पियोगी न ?

एलिजाबेथ—क्षमा करो ।

[पर्दा गिरता है]

दृश्य आठवाँ

दृश्य—१० नम्बर साऊथ स्ट्रीट की बैठक । १९०७ व १९०८ का शिशिर । दो व्यक्ति किसी उत्सव की तैयारी में लगे हुए हैं । एक नर्स पास में खड़ी देख रही है । कुछ चुने हुए व्यक्तियों के लिये बड़ी शानदार जड़ाऊ कुर्सियाँ रखी जा रही हैं । एक तीसरा व्यक्ति दरवाजे में आकर अन्दर भाँकता है । क्रद उसका छोटा है, चेहरा उसका लाल है, और आवाज़ उसकी भारी है । उसकी पोशाक भड़कीले रंग की है ।

आगन्तुक—क्या यह वही स्थान है, जहाँ पर आज का उत्सव मनाया जायेगा ?

नर्स—आप कौन हैं ?

आगन्तुक (कार्ड दिखलाते हुए)—पत्र-प्रतिनिधि.....
(वह आसपास अपने कारोबार की दृष्टि से देखता है, अपनी नोट बुक में जल्दी २ कुछ लिखता है, तत्पश्चात उन दोनों व्यक्तियों में से एक को सम्बोधन करके कहता है) ओल-मन (Old man) भला यह तो बताओ यह सब किस लिये है ?

ओल-मन (उस अघेड़ व्यक्ति की मूर्छें बड़ी २ हैं और मिज़ाज़ का वह कुछ तेज है)—क्या तुम इतना भी नहीं जानते ? यह समारोह सम्मान प्रदर्शित करने के लिये है ।

पत्र-प्रतिनिधि (स्पष्टतः)—सच बात तो यह है ओल-मन

कि मुझे ऐसे कामों में जानकारी नहीं है। मैं तो, वास्तव में, खेलों की खबरें भेजने वालों में से हूँ। परन्तु आजकल लन्दन में इतनी घटनाएँ हो रही हैं जैसे, हॉलवर्न में आग लगना, अकस्मात् तीन मौतें हो जाने के कारण उसकी जांच, एक महत्वपूर्ण तलाक, कैक्सटन हॉल में पार्टी—इसलिये सब रिपोर्टर उनमें फंसे हुए हैं। आजकल चूँकि खेलों के दिन नहीं हैं इसलिये मुझे इस काम पर भेज दिया गया है। अब तो बताओ यह क्या किस्सा है, ओल-मन ?

ओल-मन (तंग आकर)—तुम्हें कह तो दिया कि यह सम्मान प्रदर्शन का समारोह है।

पत्र-प्रतिनिधि—परन्तु यह सम्मान प्रदर्शन है क्या बला, ओल-मन ? अगर कहीं यह बसन्त की घुड़दौड़ होती तो मैं भट समझ जाता।

ओल-मन (चिढ़ कर)—मेरा सिर क्यों खाते हो ? मुझे अभी बहुत काम करना है। मेरा नाम होलमन नहीं है, मेरा नाम तो मांटेग्यू वर्सली टैंकरटन है। और मैं खानगी नौकरों में से हूँ।

पत्र-प्रतिनिधि—क्षमा करना, ओल-मन। (नर्स से) मिस नाईटिंगेल स्वयम् भी तो एक नर्स रही हैं, क्यों ? (गर्व के साथ) मुझे पता है। क्रीमिया के युद्ध में ?

नर्स—जी।

पत्र-प्रतिनिधि—यहाँ आज कौन २ व्यक्ति आ रहे हैं ?
क्या सब सरदार ?

नर्स (गर्व के साथ)—सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, लॉर्ड मेयर,
बकिंघम पैलेस में से भी कोई न कोई आवेगा ही ।

पत्र-प्रतिनिधि—ठीक, पर वहाँ से कौन आ रहा है ?
क्या तुम बतला सकती हो ?

नर्स—कोर्ट चेम्बरलेन ।

पत्र-प्रतिनिधि—और कौन २ आवेंगे ?

नर्स—मिस् नाईटिंगेल के मित्र व रिश्तेदार । और
क्रीमिया-युद्ध के कुछ सरदार ।

पत्र-प्रतिनिधि—अच्छा, अब बतलाओ यह सम्मान-
प्रदर्शन क्या होता है ?

नर्स—एक तगमा प्रदान किया जावेगा ।

पत्र-प्रतिनिधि—पर उन्हें यह क्यों प्रदान किया जा
रहा है ?

[नर्स उस पर एक तीव्र दृष्टि फेंकती है ।

अच्छा, मैं समझ गया । क्रीमियन युद्ध के कारण ।
मेरी इस अज्ञानता के लिये क्षमा करना । खेलों में लगे
रहने के कारण इतिहास पढ़ने के लिये समय ही नहीं
मिलता ।.....ओहो, तुम्हें भी तगमों मिले हुए हैं ? ये
किम लिये मिले थे ?

नर्स—बोझर युद्ध के कारण ।

पत्र-प्रतिनिधि—इसी से तुम अन्दाज़ा लगा सकती हो कि मैं इन बातों में कितना अनभिज्ञ हूँ । मुझे अभी तक यही पता नहीं था कि स्त्रियों को भी तग़मों दिये जाते हैं । अब शायद कुछ दिनों में तुम्हें खाक़ी वर्दी भी पहनाई जाने लगेगी—

[एक ऊँचे क्रोध का सम्मान्त व्यक्ति अन्दर आता है ।

नर्स—आप कौन साहब हैं ?

आगन्तुक (बड़प्पन अनुभव करते हुए)—मैं टाइम्स पत्र (The Times) का प्रतिनिधि हूँ ।

नर्स—आपका एक और सहयोगी यहां पर विद्यमान है । यह महाशय.....हाँ.....मिस्टर.....

[पत्र-प्रतिनिधि पास आता है ।

टाइम्स का प्रतिनिधि (लापरवाही से)—क्या.....आप भी.....किसी पत्र से सम्बन्ध रखते हैं ?

पत्र-प्रतिनिधि (प्रसन्नता-पूर्वक)—बिल्कुल ठीक, ओल-मन ।

टाइम्स प्रतिनिधि (पूर्ण शिष्टाचार के साथ)—क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि आप किस पत्र के प्रतिनिधि हैं ?

पत्र-प्रतिनिधि—सच पूछो तो मेरा काम केवल समाचार देने का है । वैसे मैं अधिकतर घुड़दौड़ की खबरें देने पर हूँ । परन्तु आजकल काम अधिक होने के

कारण मुझे इस काम पर नियुक्त कर दिया गया है। क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकेंगे ? यह सब क्या हो रहा है, इस बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता।

टाइम्स प्रतिनिधि (नम्रता-पूर्वक)—अच्छा, तो फिर आप मेरे पास बैठिये। मैं आपको प्रत्येक का परिचय देता जाऊँगा.....(नर्स से) क्या आप जानती हैं कि इसका प्रबन्ध किसके हाथों में है ?

नर्स (दो प्रबन्धकर्ताओं में से बड़े की ओर संकेत करके)—उत्सव का प्रबन्धक वही है। ठीक है न ?

टाइम्स प्रतिनिधि (मुस्कराते हुए)—उत्सव-प्रबन्धक ? ईश्वर के लिये ऐसा न कहो, कहीं वह सुन न लेवे। वह कॉलेज ऑफ हेरल्ड्स का परसुवां (Pursuivant of the College of Herald's) है। (उसके समीप जाकर) क्षमा कीजिये.....।

परसुवां (सम्बतपूर्वक परन्तु दृढ़ता से)—मुझे खेद है कि मेरे पास बातचीत करने के लिये समय नहीं है। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट आ पहुँचे हैं।.....(पीछे की ओर दृष्टि डाल कर) अगर आप पत्र-प्रतिनिधियों के बैठने का स्थान चाहते हैं तो उधर उस कोने में है। (वह शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ता है)

पत्र-प्रतिनिधि—आपने उसे क्या कह कर पुकारा था ?

टाइम्स प्रतिनिधि—परसुवाँ । क्यों ?

पत्र-प्रतिनिधि(नोट करते हुए)—काम यद्यपि भिन्न है परन्तु कोर्ट चेम्बरलेन से सादृश्य रखता है.....क्या हमें उस जगह पहुंचना है ?

[वे दोनों बैठ जाते हैं । एक सुन्दर फौजी अफसर भड़कीले रंग की पोशाक पहिने हुए अन्दर दाखिल होता है । यही कोर्ट चेम्बरलेन है । परसुवाँ उसके पास पहुंचता है ।

चेम्बरलेन—सब ठीक हो गया ?

परसुवाँ—करीब २ । सेक्रेटरी ऑफ स्टेट आ पहुँचे हैं । टैंकरटन, तुम प्रवेश-द्वार पर खड़े हो जाओ ।

[सेक्रेटरी ऑफ स्टेट अन्दर आता है ।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (अभिवादन करके)—आप लोग अच्छी तरह से हैं... (परसुवाँ से) क्या कार्यक्रम है ?

परसुवाँ—हमें दो एक मिनट लॉर्ड मेयर की प्रतीक्षा कर लेनी चाहिये ।

[लोग आने शुरू हो जाते हैं । टैंकरटन उन्हें बैठने का स्थान बतलाता जाता है । पत्र-प्रतिनिधियों का स्थान भर जाता है ।

बड़े २ राजनीतिज्ञ अन्दर आते हैं ।

टैंकरटन (अपने स्थान पर से)—अमरीकन रेड क्रॉस के सभापति ।

[रेड क्रॉस का सभापति, सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, कोर्ट चेम्बरलेन, सब परसुवां के पास पहुंच जाते हैं । आपस में अभिवादन होता है । क्रीमिया-युद्ध के सरदार बतलाये हुए स्थान पर आकर बैठ जाते हैं । नाईटिंगेल परिवार के व्यक्ति आने लगते हैं । उनमें एक विवाहिता स्त्री व दो छोटे २ बच्चे हैं—एक लड़का व दूसरी लड़की ।

बालक (गर्व के साथ)—आ.....हा, कितनी सुन्दर पोशाकें हैं !

माता (कुछ घबरा कर)—चुप बेटा, ऐसी बातें न कर ।

[वह कोर्ट चेम्बरलेन की ओर देख कर मुस्कराती है, उत्तर में वह भी मुस्कराता है व प्रणाम करता है ।

चेम्बरलेन—आप सकुशल तो हैं न । ये बच्चे कितने प्यारे लगते हैं ।

माँ—क्या सचमुच ? आप उनका ख्याल रखना ।

बालिका—माँ, क्या हम फ्लोरेन्स फूफी से बातचीत कर सकते हैं ?

माँ—नहीं बेटा, तू उन्हें देख सकती है, और बड़ी होने पर उनकी तरह बनने की कोशिश करना ।

बालक (अपनी बहिन से बाजी लेना चाहता है)—मैं आज रात को बगीचे में उनकी नकल करूँगा ।

माँ—चुप, बदमाश कहीं का । मेरा मतलब इस तरह

से नकल करने से थोड़े ही था । अब तुम दोनों चुप हो जाओ और देखो कौन २ आ रहे हैं ।

टैंकरटन (प्रवेश-द्वार से)—लेडी हर्वर्ट ऑफ ली ।

[एलिज़ाबेथ हर्वर्ट अन्दर दाखिल होती है । वह अब अस्सी साल की हो गई है, परन्तु वह अभी तक संज्ञा-शून्य नहीं हुई । वह हाथ में माला लिये हुए है, और काला लिबास पहिने हुए है जिसके कारण वह एक सन्यासिनी मालूम होती है । उसके फीके चेहरे परे झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं । सेक्रेटरी ऑफ स्टेट उसका अभिवादन करने के लिये जल्दी से आगे बढ़ता है ।

माँ—बच्चो ! वह देखो, फूफी फ्लोरेन्स की बड़ी पुरानी सहेलियों में से है । मैं सिडनी हर्वर्ट के बारे में बातचीत किया करती हूँ न । वह उनकी पत्नी है ।

बालिका—ओहो ! मुझे देखने दो ।

[प्रवेश-द्वार पर कुछ क्षण के लिये बातचीत करके सेक्रेटरी ऑफ स्टेट एलिज़ाबेथ को उसके निश्चित स्थान पर लिवा ले जाता है । कमरे में गुजरते हुए जो उसे पहिचानते हैं वे खड़े हो जाते हैं और सिर नवाते हैं । उनमें से एक उन बच्चों की माता भी है । एलिज़ाबेथ बड़ी संजीदगी के साथ धीरे से सिर हिला कर उनके अभिवादन का उत्तर देती है । परन्तु वह मुख से कुछ नहीं बोलती ।

बालक—माँ, वह तुमसे कुछ भी नहीं बोली ।

मां—नहीं बेटा, वृद्ध स्त्रियां इस प्रकार खड़ी हो कर छोटों से बातचीत नहीं करतीं ।

बालिका—क्या तुम छोटी हो, मां ?

मां (डांटती है)—तुम दोनों चुप हो जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें बाहर छोड़ आऊँगी ।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (एलिजाबेथ से)—इस स्थान पर आप आराम से हैं न ।

एलिजाबेथ—हाँ जी, बिल्कुल—(इधर उधर देख कर) वह कहाँ है ?

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट—लेडी हर्बर्ट, वह अभी तशरीफ नहीं लाई । आप जानती हैं वह अब बहुत.....दुर्बल हो गई हैं ।

एलिजाबेथ—दुर्बल ? इतनी कमजोर होते हुए भी उसने आज तक बड़े साहस से काम किया है । बिचारे सिडनी के लिये तो वह बहुत ही तगड़ी थी ।

टैंकरटन (प्रवेश-द्वार से)—राइट ऑनरेबल लॉर्ड मेयर ऑफ लन्दन ।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट—मुझे क्षमा कीजिये ।

[वह लॉर्ड मेयर का अभिवादन करने के लिये जल्दी से आगे बढ़ता है । आप अपनी पूरी पोशाक में हैं । उनके पीछे पोशाक सम्हालने वाला एक नौकर व दो शैरीफ हैं । कमरा अब

लगभग भर चुका है ।

लॉर्ड मेयर—कहिये आप सकुशल तो हैं न ।

[आपस में अभिवादन होता है । कोर्ट चेम्बरलेन और परसुवाँ भी वहीं आ जाते हैं ।

कार्य-क्रम निश्चित करने के लिये वे एक ओर खड़े होकर सलाह करने लगते हैं ।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट—क्या अब कार्यवाही शुरू की जावे ?

परसुवाँ—जी, पर एक मिनट ठहरिये.....कार्य-क्रम इस प्रकार है—प्रथम होम सेक्रेटरी का भाषण, उसके बाद अमरीकन राजदूत का, फिर लॉर्ड मेयर ऑफ लन्डन का । अधिक कोई भाषण न होंगे । सब कुछ संक्षेप में ही होगा, क्योंकि मिस नाईटिंगेल दुर्बल होने के कारण अधिक देर तक बैठ नहीं सकतीं । तत्पश्चात् कोर्ट चेम्बरलेन बादशाह सलामत की ओर से सम्मान प्रदान करेंगे । उसके पश्चात् शैरीफ मिस नाईटिंगेल के हस्ताक्षरों के लिये रजिस्टर (The Roll of Freeman) पेश करेंगे, जिसमें हर एक स्वतन्त्र नागरिक के हस्ताक्षर रहते हैं । केवल इतना ही । क्या यह काफी होगा ?

लॉर्ड मेयर (गर्दन फेर कर शैरीफ से) जी, आप समझ गये न ? क्या यह ठीक होगा ?

[वे सिर हिलाते हैं ।

हां यह काफ़ी होगा ।

[पीछे से धीरे २ बातचीत करने का शब्द सुनाई देता है ।
सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट आगे बढ़ता है ।

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट—जी, एक बात और है । जर्मन सरकार की ओर से राजदूत उपहार देना चाहता है ।

परसुवां—यह उपहार स्वतन्त्र नागरिकों के रजिस्टर (The Roll of Freemen) में हस्ताक्षर हो जाने के बाद दिया जा सकता है ।

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट—बहुत अच्छा । (वह मुड़ कर सब को समझाता है)

लॉर्ड मेयर—तो फिर कार्यवाही शुरू क्यों न कर दी जावे । ५॥ बजे मुझे मैनेशन हाउस में एक मीटिंग में शामिल होना है और उसके बाद एक भोज में । ..(पोशाक सम्हालने वाले नौकर से) वे पर्चे कहाँ हैं जो मैंने तुम्हें दिये थे ? (वे पर्चे उन्हें पकड़ा दिये जाते हैं, वह घबराये हुए उन्हें ले लेते हैं । परसुवां से घबराहट में) क्या स्कुटारी उसी स्थान का नाम है जहां पर अस्पताल थे ?

परसुवां—मुझे पता नहीं, शायद लॉर्ड मेयर सा०, क्या आप अपने स्थान पर तशरीफ़ ले चलियेगा ?

लॉर्ड मेयर—क्यों नहीं, अवश्य ।

[सब लोग अपने अपने निश्चित स्थानों पर पहुंच जाते हैं ।
कमरे में जो बातचीत का शब्द होता था वह धीमा पड़ जाता
है । एक दो व्यक्तियों का बोलना सुनाई देता है ।

स्त्री का शब्द—...हम मिस गिब्स को गेटी थियेटर में
देखने गये थे । ग्रॉसस्मिथ बड़ा सुन्दर अभिनय करता है ।

दूसरी स्त्री—निःसन्देह, पर मुझे तो गेटी से कॉलीज
अधिक पसंद है ।

पहली स्त्री—ओह, पैलीजर की आवाज कितनी मधुर
है । वह गाना 'मेरा प्यारा डच.....' यही है न ?

दूसरी स्त्री—नहीं प्यारी । वह कैवेलियर का है ।

उनका साथी—अरे भई चुप भी रहो । वे कार्यवाही
शुरू कर रहे हैं ।

[टैंकरटन प्रवेश-द्वार को छोड़ कर छोटे दरवाजे पर पहुंचता
है जो कमरे की दूसरी ओर है । आधा दरवाजा खुला रख कर
वह खड़ा हो जाता है ।

बालिका (ऊँचे स्वर में)—मां, क्या वह प्रतिहारी है ?

मां—बच्ची, चुप भी रहो ।

[कमरे में निस्तब्धता छा जाती है ।

टैंकरटन (छोटे दरवाजे से)—मिस नाईटिंगेल आ
रही हैं ।

[सब खड़े हो जाते हैं ।

एक बड़े पहियों वाली कुर्सी में ८७ वर्षीया शान्त प्रकृति की एक वृद्धा स्त्री को अन्दर लाया जाता है। उसके गालों पर अब भी सुर्खी है। मुख-मण्डल उसका गौरवपूर्ण है। यही मिस नार्ईटिंगेल है जो अपने जीवन काल में ही पौराणिक वस्तु समझी जाने लगी है। उसे अपने निश्चित स्थान पर पहुंचाते हैं। वह कमरा ऐसा प्रतीत होने लगता है मानों किसी महारानी का दीवान हो। स्मित वदन से बार २ किंचित सिर झुका कर वह अपने स्वागत को स्वीकार करती है।

परसुवाँ (शान्त रहने के लिये संकेत करते हुए)—.....
अब सेक्रेटरी ऑफ स्टेट अपना भाषण शुरू करेंगे।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट—हम लोग आज यहां पर विशेषतः अपने देश के प्रति और साधारणतः मनुष्य-मात्र के प्रति जो सेवायें की गई हैं, उनके लिये सम्मान प्रदर्शित करने के लिये एकत्रित हुए हैं। यह सेवा-कार्य उस समय आरम्भ किया गया था जब हमारे बड़े-बूढ़े अपनी युवावस्था में थे। तब से यह कार्य आज तक निर्विघ्न जारी है। जिस भद्र महिला के प्रति आज हम सम्मान प्रदर्शित करने आये हैं, उसे ही आधुनिक नर्सिंग की जन्मदात्री कहना चाहिये। इस देश के व अन्य सभ्य देशों के अस्पतालों में जो रोगियों की सेवा-सुश्रूषा की जा रही है और जिसका रुख दिन पर दिन उन्नति की ओर है, वह इसी नारी-रत्न के

अथक परिश्रम के फलस्वरूप है। अस्पतालों के सुधार ही इनकी प्रसिद्धि का एक मात्र कारण नहीं है। क्रीमिया-युद्ध के घोर अंधकार के दिनों में.....

[तालियां पिटती हैं।

जब ब्रिटिश फौज घावों और रोगों के कारण मरणासन्न हो रही थी, तब यह सर्वस्व-त्यागिनी महिला सिपाहियों के अन्दर देवी लक्ष्मी का रूप धारण किये फिरती थी।

अरे ! उस संकट के क्षण-बीच

रहा मैं रमणी एक विलोक

कि जो उस तम में लेकर दीप

जा रही सद्म-सद्म बे-रोक;

और, सुख के सपनों-सा मन्द

मूक पीड़ित जाता है घूम

अँधेरी दीवारों पर पड़ी

उसी की छाया लेने चूम।

मनुष्य-मात्र के लिये जो सेवाएँ मिस नाईटिंगेल ने की हैं उनकी मात्रा न आज तक निर्धारित की जा सकी है और न की जा सकेगी। अपने अथक परिश्रम से पीड़ितों के प्रति जो सहानुभूति मानव-हृदय में इस देवी ने सृजन कर दी है, ईश्वर करे, वह सदा हरी-भरी बनी रहे।

[जोर के साथ तालियां पिटती हैं।

इस प्रकार की सेवाओं के प्रति महत्वपूर्ण सम्मान प्रदर्शित किया जाना चाहिये। बादशाह सलामत की ओर से यह आदेश दिया गया है कि इनके प्रति राज्य की ओर से सम्मान प्रदर्शित किया जावे। इस प्रकार के सम्मानित व्यक्तियों की सूची (The Order of Merit) में ऐसे कई देश-सेवियों के नाम हैं, परन्तु यह प्रथम ही महिला-रत्न है जिनको यह स्थान प्राप्त हुआ है। आज जिस सम्मान की ये अधिकारिणी हैं उतना सम्मान पाने की और कोई योग्यता नहीं रखता। इस गौरव-प्रदान का सौभाग्य हमें मिला है, इसमें हमारा अहोभाग्य है।

[तालियां पिटती हैं। वह अपने स्थान पर बैठ जाता है। वात-चीत करने का भीना २ शब्द होता है।

परसुवाँ (लोगों को शान्त करने के लिये कमरे के चारों ओर दृष्टि फेंकता है। लोग चुप हो जाते हैं)——.....अमरीकन रेड क्रॉस के सभापति।

सभापति—महिलाओं और भद्र पुरुषों ! जिस विषय का सम्बन्ध विशेष तौर पर घरेलू मामलों से है, उस पर एक दूसरे देश के प्रतिनिधि को अपने विचार प्रकट करने की कोई आवश्यकता नहीं दिखाई देती। परन्तु मिस नाईटिंगेल एक देशीय नहीं हैं। वह तो संसार की वस्तु बन गई हैं। (ताली बजती है।) उनका जन्म, पालन-पोषण

और जीवन ग्रेट-ब्रिटेन में गुजरा है, परन्तु इतना होने पर आप केवल ग्रेट-ब्रिटेन की ही नहीं हैं। आप संसार की वस्तु हैं और सारा संसार अपनी इस सर्वस्व-न्यागिनी पुत्री के लिये गर्व करता है। रेड क्रॉस सोसाइटी की सार्व-देशीय परिषद, जो अभी हाल में ही लन्दन में होकर चुकी है, मेरे इन शब्दों के लिये काफी प्रमाण है। इस परिषद के जीवन और सफलता का श्रेय, सेवा-सुश्रुषा के लिये अपना जीवन दान देने वाली, इस महिला को ही प्राप्त है। अमरीका के संयुक्त-राज्य में फ्लोरेन्स नाईटिंगेल का नाम उस आदर और प्रेम से लिया जाता है, जिसमें अपनत्व टपकता है। वहां पर आपकी कोई मूर्ति तो बनो हुई नहीं है जिस पर मालाएँ चढ़ाई जा सकें। ऐसी वहां कोई भी वस्तु नहीं है। परन्तु अमरीका में आपके नाम पर एक हजार नर्स-शिक्षा के स्कूल हैं। वे ही आपके स्मृति-चिन्ह हैं, जिनकी संख्या सदैव बढ़ती चली जाएगी। संयुक्त-राज्य की ओर से ये ही आपके लिये उपहार हैं, पदक हैं।

[तालिया बजती हैं। वह बैठ जाता है।

परसुवाँ—राइट ऑनरेबल, लॉर्ड मेयर ऑफ लन्दन।

लार्ड मेयर (लिखा हुआ कागज़ एक ओर रख कर)—
मेरा विचार था कि...एँ...स्कुटारी के विषय में ...एँ...

जहां पर अस्पताल थे, कुछ कहूँ। और क्रीमिया के युद्ध के बारे में भी। पर यह सब व्यर्थ ही होगा। मिस नाईटिंगेल के महान कार्य हम सब को विदित ही हैं। (तालियां पिटती हैं) वे महान थे, वे श्रेष्ठ थे। मुझे.. एँ...स्मरण आता है कि मैंने कहीं पढ़ा था...एँ...कि आपने अपना जीवन भी उन भयानक परिस्थितियों के कारण खतरे में डाल दिया था। और मुझे जान कर—यह बड़े गौरव की बात है कि लन्दन शहर की कॉमन कौंसिल (Common Council) इस वीराङ्गना को लन्दन की स्वतन्त्र नागरिकता (Freedom of the City of London) की उपाधि से विभूषित करना चाहती है। हम आपसे प्रार्थना करेंगे कि आप इसे स्वीकर करें।

[तालियां पिटती हैं। वह अपना स्थान ग्रहण करते हैं।

चेम्बरलेन (आगे बढ़ कर)—मिस फ्लोरेन्स नाईटिंगेल, बादशाह सलामत के हुक्म के मुताबिक मैं आप पर ऑर्डर ऑफ मेरिट (Order of Merit) का चिन्ह प्रदान करता हूँ। यह बादशाह सलामत की असीम कृपा का फल है और देश व मानव-समाज के प्रति की गई आपकी अमूल्य सेवाओं के प्रमाण के रूप में है।

[वह आगे बढ़कर उसके हाथों में प्रमाण-चिन्ह रखता है।

फ्लोरेन्स (सिर झुका कर मुस्कराते हुए)—...असीम

कृपा है, असीम कृपा है। (अपनी नर्स से) प्यारी, यह क्या वस्तु है ? (अनिश्चित रूप में) उनका धन्यवाद करना चाहिये।

नर्स (डिब्बा खोलती है)—मैडम, यह बादशाह सलामत की ओर से है। अपने गले में इसे पहन लीजिये।

फ्लोरेन्स (गले में हार डलवाते हुए)—अवश्य, अवश्य ! ओह, उनकी कितनी कृपा है।

[एक ओर से तालियां पीटती हैं।

(नर्स से) ये तालियां क्यों पीट रहे हैं ?

नर्स—मैडम, ये क्रीमिया-युद्ध के सरदार हैं।

फ्लोरेन्स—ओह...! अच्छा...(ऊंचे स्वर में) क्रीमिया के बारे में मैं सिर्फ इतना कह सकती हूं—कितने वीर थे वे सिपाही.....

अस्पष्ट आवाज़ (क्रीमिया-युद्ध के सरदारों में से)—ओह ! तुम क्या कम वीर थीं, भिस !

फ्लोरेन्स—वह कौन था ?

नर्स—क्रीमिया-युद्ध के सरदारों में से कोई।

फ्लोरेन्स—मेरे वीर सिपाहियो ! मेरे प्रति नम्र व्यवहार और उनका प्रसन्न मुख-मण्डल मैं आज तक नहीं भूली। लोगों ने मेरे अन्दर यह भाव भरना चाहा था कि ब्रिटिश सिपाही उज्जड, पशु और कमीना होता है। वास्तव में क्या था, यह मैं जानती थी। उन्होंने उसे साबित भी

कर दिया.....उनका ईश्वर भला करे । (अकस्मात् इतना थोड़ा सा बोलने पर ही उसका सिर एक ओर झुक जाता है ।

नर्स (परसुवाँ से दबे हुए परन्तु तेज स्वर में)—जल्दी करो, जल्दी करो ।

[शैरीफ स्वतन्त्र नागरिकता का रजिस्टर (Roll of Freeman) लेकर आगे आते हैं ।

फ्लोरेन्स (सिर उठा कर)—यह क्या है ?

नर्स—यह आपके हस्ताक्षरों के लिये रजिस्टर है । (शैरीफ से, जिसके हाथ में रजिस्टर है) मुझे कलम दीजिये । वह देख नहीं सकतीं (उसका अन्धापन जतलाने के लिये अपनी आंखों को छूकर) ।

फ्लोरेन्स—.....मुझे इस पर हस्ताक्षर किस लिये करने हैं ?

नर्स—उन्होंने आपको लन्दन की स्वतन्त्र नागरिकता (Freedom of the City of London) प्रदान की है ।

फ्लोरेन्स—असीम कृपा है.....(नर्स की सहायता से बड़ी कठिनाई के साथ वह अपने हस्ताक्षर करती है)..... डॉ० सदरलैंड से कह देना !

[शैरीफ के बाद जर्मन राजदूत की बारी आती है ।

जर्मन राजदूत (फूलों का एक गुच्छा भेंट करते हुए)—

यह भेंट मेरे बादशाह की ओर से है । इसके फूल आपके प्राचीन घर के आस-पास से चुने गये हैं ।

फ्लोरेन्स (मशीनवत्)—असीम कृपा हुई, असीम कृपा हुई ।

[अमरीकन प्रतिनिधि को आगे रख कर वे सब एक पंक्ति में आ जाते हैं और अभिवादन करके कमरे से बाहर हो जाते हैं । अन्त में एलिज़ाबेथ हर्वर्ट आती है । सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट अपनी बांह देने के लिये खड़ा रहता है । एलिज़ाबेथ और फ्लोरेन्स एक बार फिर आमने-सामने होती हैं ।

सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट (नम्र आग्रह के साथ)—मिस नाईटिंगेल, क्या आपको अपनी पुरानी सहेली लेडी हर्वर्ट की याद है ?

फ्लोरेन्स—वह क्या कह रहे हैं ।

नर्स—लेडी हर्वर्ट.....देखिये मैडम ! आप लेडी हर्वर्ट हैं ?

फ्लोरेन्स—वह कितनी सुन्दर थी । उसका हाव-भाव कितना लुभावना था । हर्वर्ट की मृत्यु के पूर्व हम में मित्रता थी.....परन्तु उसके बाद भेंट नहीं हुई ।

एलिज़ाबेथ (तुतलाते हुए)—फ्लोरेन्स.....क्या तुम मुझे नहीं पहचानती ?

फ्लोरेन्स—इस प्रकार मित्रों का बिछोह कितने दुःख

का विषय है। मेरे सब प्रिय जन मुझे छोड़ गये हैं। मेरे मित्र अब कोई नहीं आते। (नर्स से) क्या तुमने डॉ० सदरलैंड को बुलावा भेजा है ? (फूलों का गुच्छा देती है) डॉ० सदरलैंड को यह जरूर दे देना और उसे जवाब लिखने को कह देना।

नर्स (धीरे से)—आप जानते हैं उसे मरे हुए आज १५ बरस गुजर गये।

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (लेडी हर्बर्ट से)—मुझे खेद है कि वह आपको नहीं पहचानतीं।

एलिजाबेथ—मैं जाती हूँ, (अकस्मात् वह अपनी वीर समकालीन का हाथ चूमती है)।

फ्लोरेन्स—...यह किसने चुम्बन लिया ? वह लिज थी ! अवश्य ही वह लिज थी !.....बहुत अरसा हुआ वह मुझसे अलग हो गई थी।...कहीं मुझे दीखता होता।

एलिजाबेथ—फ्लोरेन्स।

फ्लोरेन्स—यह आवाज भी.....उसी की है ?

एलिजाबेथ—.....क्या हम आपस में एक दूसरे को ज्ञात कर सकते हैं।

फ्लोरेन्स—जैसे हम उन्हें ज्ञात करते हैं जो हमारे रास्ते में आते हैं।

नर्स (दृढ़ता से)—मैडम ! आप अब जाइये।...
...नहीं, जनाव आप अब अधिक उनसे न बोलिये। मैं

जुम्मेवार नहीं ।

[आपस का मेद-भाव उसी प्रकार बना रह जाता है । एलिज़ा-वेथ सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट के सहारे धीरे २ बाहर चली जाती है ।

नर्स (फ्लोरेन्स से)—मैडम, हम आपको सोने के कमरे में ले चलती हैं । रात्रि के भोजन के पहिले आपको अच्छी तरह आराम कर लेना चाहिये । क्या आपके लिये अण्डे तैय्यार किये जावें ?

[वह घंटी बजाती है ।

फ्लोरेन्स (मानते हुए)—हां, प्यारी ।

नर्स (पुचकारते हुए)—आप थक गई हैं, इसमें आश्चर्य भी क्या है ।

[एक दूसरी नर्स आती है ।

फ्लोरेन्स—वे बड़े दयालु प्रतीत होते थे । कितने सहृदय थे वे लोग । (खुश होकर) वे क्या बात-चीत कर रहे थे, मैं नहीं समझ सकी । हमें डॉ० सदरलैंड से पूछना चाहिये ।

[दोनों नर्सें कुर्सी ढकेल कर ले जाती हैं ।

[पर्दा गिरता है]

॥ नाटक समाप्त ॥



